
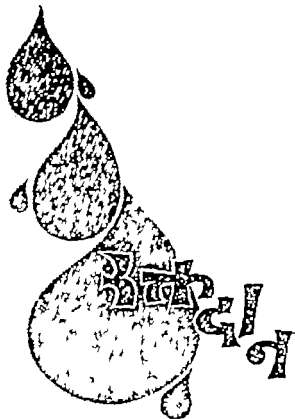


हरिकृष्ण प्रेमी




राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली 



हरिकृष्ण प्रेमी



राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली 

प्रथम संस्करण
दिसम्बर, १९६९

प्रकाशक :

राजराज एण्ड सन्स

पोस्ट बॉक्स १०१४ दिल्ली

•

कामलिय व प्रेस

बी०टी० रोड शाहदरा दिल्ली ४२

•

विन्नी-केन्द्र

क्यापीटी फेद, दिल्ली-१

मुद्रक :

भारत मुद्रणालय शाहदरा दिल्ली

सूच्य
तीन रुपये पचास नये पैसे

रक्तदान

प्रवेश

सन् १८२७ में धंधेवालों को भारत से निकाल बाहर करने के लिए जो विफल हुआ था उसमें अठिग मुगल सम्राट बहादुरशाह 'अकबर' न जो मराठनीय भाषा लिया उसकी एक भांकी प्रस्तुत नाटक उपस्थित करता है। १८२७ का क्रांति की योजना बिना लोगों ने बनाई थी उन्होंने यह निश्चय किया था कि ३१ मई को धंधेवालों की जो भारतीय सैनिकों के निर्मित सेनाएं थीं वे एकसाथ बिरोध करेंगी और जनता भी पूर्ण सहयोग देगी किन्तु मेरठ में १० मई को ही भारतीय सैनिकों न धंधेवालों के विरुद्ध शास्त्र उठा लिए। मेरठ से वे दिल्ली पहुंचे और मुगल सम्राट बहादुरशाह 'अकबर' से स्वाधीनता के संग्राम का नेतृत्व ग्रहण करने की उन्होंने प्रार्थना की। सम्राट असमंजस में पड़ गए। क्योंकि विफल का विस्फोट समय से पूर्व हो ही गया था फिर भी उन्होंने अन्विष्टारी सैनिकों को निराग नहीं किया। उन्होंने विफलकारियों को शस्त्र धापीर्षर ही नहीं दिया बल्कि ८१ बय की आयु में भी स्वाधीनता-संग्राम का नेतृत्व सम्हालकर धनुज काय-शक्ति और प्रवचन-कृतज्ञता का परिचय दिया।

सम्राट बहादुरशाह 'अकबर' के जो गुण इन संघर्ष के समय उभर कर सामने आए, उनका कारण उनका स्थान भारत के इतिहास में धमक ही गया है। उन्हें जोय शावर के रूप में ही जानने से तेजिज से एक एगानु बिनु इक घासक भी ये यह ती १८२७ की क्रांति के ही दिताया। वे जानते थे कि बिना हिन्दू और मुसलमानों में पूर्ण एकता हुए बिदेसी धंधेवालों पर बिजय नहीं पाई जा सकती इसलिए वे अपने व्यक्तिस्व के सम्पूर्ण अभाव को एत दिता में प्रयोग में आए। धंधेवालों के सम्राट के

प्रतरंय व्यक्तियों में भी एवं कुछ मुस्माओं और पंडितों में भी ऐसे देह-
 होही देवा कर लिए थे जो ऐसे उपाय कर रहे थे जिससे जाति विच्छेद हा
 जाए। इन उपायों में एक यह था कि ईश के त्योहार पर एक घोर मुसमयानों
 को माय काटने के लिए उकसाया जाए और दूसरी तरफ हिन्दुओं की
 सामिक भावनाओं को जमारत बाकर दोनों धर्मों के माननेवालों में मझा
 कर दिया जाए। सम्राट ने जिस दूरदर्शिता और बुद्धता से यह बुझटना
 नहीं होने दी यह इस नाटक से पता चलेगा।

दूसरी बात जो सम्राट बहादुरशाह 'बक़र' के उस समय अनुभव
 की वह यह थी कि मुगल साम्राज्य का पहुँचनेवाला गिरंजुग राजतंत्रीय रूप
 पुनर्जीवित नहीं हो सकता। उन्होंने यत्न किया कि एक ऐसे राज्य की
 स्थापना की जाए जिसमें सत्ति केवल राजा में ही केन्द्रित न हो बल्कि
 प्रजा के विविध वर्गों के हृदय में ही राज्य-संबंध का उत्तरदायित्व हो।
 भारत में जिस प्रजातन्त्र का प्राय उदय हुआ है उसकी प्रावश्यकता के
 उस समय ही अनुभव कर चुके थे यह बात उनकी दूरदर्शिता की शोचक
 है।

१८१७ में बीटी कांति हुई थी उसका नाम ऐस सराजकता-प्रिय लोग
 उठाते जिनका कूट-मार करना ही बंधा है यह भी स्वामाधिक था।
 किन्तु एक घोर सम्राट ने सैनिकों को समर में उस्ताहपूर्वक मान लैन के
 लिए प्रेरणा दी ता दूसरी घोर प्रजा को सराजक तत्त्वों से बचाने का
 भरसक यत्न किया। प्राणिकारियों में से भी यदि किसीके परत-सा भी
 प्रदा को सताया तो उन्होंने उसका कड़ा विरोध किया और अपराधियों
 को बंद किया। वे प्रजा को भी धीर सेना को भी अपनी संतान के समान
 प्रेम करते थे और यही कारण था कि बाहे राज्य के नाम से वे एक ईश
 भूमि के भी स्वामी नहीं थे लेकिन उनके प्रति भारतवासियों के हृदय में
 अद्भुत घास्या थी। प्रकबर, जहाँगीर बाहुरशाह 'बक़र' भी मान-
 विभूतियों मुसम राज-वंश में हो गई हैं सम्राट बहादुरशाह 'बक़र' भी मान-
 बोधित युगों में उनसे कम नहीं थे। यह उनकी कठिनाई थी और भारत

का दुर्भाग्य था कि उस समय ठर मुमक साम्राज्य समाप्त हो चुका था न सम्राट के शासन का न राज्य थीर न सेना । फिर भी उन्होंने अपने पारदर्श विचारों को परिष्कार करने का प्रयत्न किया इसलिए उनकी महानता को बार बार सग जाते हैं ।

सम्राट के १८२३ की श्रुति में जिसे बुरखिया दुइता र्थ उदारता थीर बीरता का परिचय दिया उस प्रकार के उत्पन्न पुन उनके पाहुदारों में नहीं पाए गए । इसके लिए वे उतने बोधी नहीं थे । परिस्थितिया ने ही उन्हें ऐसा बना दिया था । यदि पाहुदारों में भी सम्राट के समान नैतिक बल होता तो उस श्रुति का परिणाम ही बुरख होता । संघर्षों में भीर स्वार्थवग उनका मुपस्थ से साथ देनेवाी देशीहियों ने पाहुदारों के पारस्परिक मतभेदों को निरंतर उत्तेजित कर शक्ति की योजनाओं को कमजोर किया । सम्राट की श्रि वेगम जीवन महान भी देशीहियों के बक्ष्य का विचार हो गई । जब बोधी का रहेता सरदार बखिया ने दिल्ली के संघाम का नेतृत्व अपने हाथ में लिया तो देशीहियों ने पाहुदारों को बखिया के विरुद्ध उभारकर उनके सारे प्रयत्नों को बिन्दन कर दिया । भारतीय सैनिक बीरता से सदै घनेक बार संघेडी सेनाओं को उगुंने पराजित किया लेकिन उनमें पारस्परिक तारतम्य थीर अनुशासन न होने के कारण १३२ दिन तक संघर्षों के प्रबल प्रहारों का सामना करते हुए उगुं घतघपता ही हाथ लयी । अनुशासन थीर तारतम्य भी सेना में बाधम हो जाता यदि हकीम एहसानुस्ताया थीर मिर्जा इलाहीबखर बीडे मोय उधे संय करने के अनुरोधम मल न करते रहते । इस नाटक में वे सारी स्थितियां मीने स्पष्ट थी हैं । यह सब दिखाने में मरा उदरप रचना ही है कि भारतवासी धानम की पृष्ठ के दुपरिधामों को समझें थीर र्थ की जाबदारमक एवता के महत्त्व को जानें ।

पृष्ठ पण्ड नाटक के रचना-नीधम के सम्बन्ध में भी यह है । यह नाटक कम १३२ दिन में पठी हुई बटनाओं का चित्रण करता है । इन १३२ दिनों में भी संघेडी सेनाओं थीर भारतीय सेनाओं में जो मुघलसे

हुए—आक्रमण और प्रत्याक्रमण हुए, उनमें किस व्यक्ति ने कितनी बीरता दिखाई प्रथम कायरता दिखाई इन बातों का चित्रण मैंने नहीं किया है। यह नाटक न तो इतिहास है न उपन्यास जिनमें ऐसे विचित्र चित्र खींचे जा सकते हैं। रंगमंच की आवश्यकताएं और सीमाएं मेराफ को बांध लेती हैं। फिर भी मैं समझता हूँ कि मैंने जो तस्वीरें खींची हैं वे अपने आपमें पूर्ण हैं। इतिहास की पूरी तस्वीर न खींचते हुए भी मैंने इतिहास के प्रति पूरी ईमानदारी को कायम रखा है।

संपूर्ण नाटक एक ही सेट पर समाप्त हो जाता है। घंकों का दुस्वों में विभाजन प्रबन्ध है, वह भी कबल कुछ समय व्यतीत हो गया है यही बताने के लिए। एक ही सेट पर अर्थात् एक ही स्थान पर रहकर पूरी कथा कह जाया वह भी ऐतिहासिक कथा को जिसमें बटनाएँ अनेक स्थानों पर बटती हैं और सैकड़ों-हजारों व्यक्ति जिनमें कार्य करते हैं बहुत ही कठिन है। अनेक बटनायों को सूक्ष्म-विषय बनाना पड़ता है जिससे मंच पर किष्कियों का समाव-सा नजर आता है किन्तु उपाय क्या है? एक ही स्थान पर रहकर जब पूरी कथा बसक या पाठक के सम्मुख रखनी है तो अनेक बटनाएँ सूक्ष्म-विषय बनकर ही आंयी।

पात्रों की संख्या भी मैंने जितनी कम रख सकना संभव था रखी है। घंघकों को मैं रंग-मंच पर जाया ही नहीं हूँ। मेरी कथा तो मुख्यतः राजमहल में चल रही है, वहाँ केवल दो अंग्रेज आते हैं कुछ ही लोगों के लिए। अंग्रेजी छावनी में क्या होता रहा कौन सेनापति आया कितन सेनापति मारे गए, कितनी लड़ाइयाँ वे हारे, कितनी बीते किन कठिन-नाइयों में वे वे बुझे, इन सब बातों का चित्रण मैंने नहीं किया है, न ऐसा करना मेरा उद्देश्य था। मैं तो केवल भारतीय पक्ष को उपस्थित करना चाहता था—भारतीयों का पराक्रम उनकी दुर्बलता उनका क्षेम क्षेम और उनका बिस्वासघात उनकी नैतिकता और उनकी अरिचहीनता उनका पारस्परिक प्रेम और उनका पारस्परिक विद्वेष उनकी उदारता और उनकी संकीर्णता आदि बातों को ही मैंने बताया है ताकि इनके

प्रकाश में धातु की पीढ़ी धरना मार्ग बताए।

नाटक के पास मुसलमान हैं। मुसलमान पाशों से उर्दू बुलबुले की हिन्दी लैण्डों की परम्परा कभी की घोर पहले मने भी इच्छा पासन किया बा—लेकिन कई वर्षों से मैं इस परम्परा को त्याग चुका हू। बंगला में मराठी में गुजराती में तमिल या तेलगू में क्या मुसलमान पाशों से उर्दू बुलबुले काएबी ? नहीं। तब हिन्दी के लिए ही यह खंपन क्या हो ? जैसे नाटक सेमते समय निर्देशक चाहे तो भाषा-सम्बन्धी परिवर्तन कर सकता है।

नाटक यदि रंजमंच पर खेलने के लिए है तो उसके कथोरकथन संसिप्त हों ऐसा ही रंजमंच के ज्ञानी कहते हैं किन्तु नाटक में ऐसे स्थान भी पाते हैं जहाँ विस्तार आवश्यक हो जाता है। ऐकतपिपर, बर्नाईया इम्तन डी० एन० राय प्रसार आदि विस्तृत कथोरकथनों से बच न सके। मेरे कुछ कथोरकथन छोटे भी होते हैं तो कुछ बड़े भी। फिर बात यह है कि मेरे जैसे लेखक के नाटक पाठ्यपुस्तक भी बनते हैं। हमारे अध्यापकों को तिकामत होती है कि छोटे-छोटे कथोरकथनों में ऐसा क्या हो सकता है जिसे धिक्का पड़ाए और किस प्रकार के प्रश्न उत्तर करे ? पैसा देनेवाला रंजमंच तो हमारे पास है नहीं और लेखक की रोटी तो घामी है तब अध्यापकों की मांग भी पूरी करनी पड़ेगी। ऐसे समय कला के प्रति वैर्मानी कह सकते हैं लेकिन कला के प्रति पूरा ईमानदार रहने के लिए या तो तुलसीदास की तरह घर-द्वार छोड़ना होगा या उसके बाग-बारे कुछ कापदाए छोड़ गए हों तो उत्तर निर्भर रहता पड़ेगा। मैं तो इतना ही निवेदन कर सकता हू कि रंजमंच पर नाटक को साने समय निर्देशक को थोड़ा धम करके कथोरकथनों को छोड़ कर लेना चाहिए।

अंत में मैं अपने प्रियों से धाया करता हू कि मैं मेरे अन्य नाटकों की भांति इसे भी पसंद करेंगे।

—हरिद्विष्य 'श्रेणी

पात्र-सूची

बहादुरशाह 'अफ़्जर'
 खीनत महल
 मिर्जा मुघल
 मिर्जा कोपास
 मिर्जा अबूबकर
 मिर्जा अर्वाकत
 बस्ताजा

हकीम एहसानुस्ताबा

मिर्जा इलाहीबख्त

कैदार

हबसन

दिल्ली का अंतिम मुगल सम्राट
 बहादुरशाह 'अफ़्जर' की प्रिय बेगम

बहादुरशाह 'अफ़्जर' के शाहसादे

-- १८५७ के स्वाधीनता-संग्राम का
 एक महत्त्वपूर्ण भारतीय सेनापति
 बहादुरशाह 'अफ़्जर' का बेटा एवं
 वरबारी

एक मुगल रईस जिसकी पुत्री का
 विवाह सम्राट के एक पुत्र से
 हुआ था

-- अंग्रेजों द्वारा दिल्ली में नियुक्त
 रेजीडेंट

-- अंग्रेजों के गुप्तपर विभाग का
 अधिकारी

मुगल राजमहल की दासी, कुछ भारतीय सैनिक, दो-चार
 अंग्रेज सैनिक

पहला अंक

पहला दृश्य

[स्वान—विस्ती के सातक्रमे में मुसल सम्राटों के राजमहम में भारत के अंतिम मुसल सम्राट बहादुरशाह 'जुद्धर' का विद्याम-कथ । समय—प्रभात के कुछ पश्चात् । कथ की विद्वती बाहिनी और बायीं बीबारों विद्याई देती हैं । सामन की तरफ दो स्तम्भ खड़े हैं । दायीं और बायीं बीबारों में घाने जाने के लिए एक-एक द्वार है । दोनों द्वारों पर पत्ते पड़े हुए हैं । इन महीं विद्याई देतीं जिनसे जान पड़ता है कि इन बहुत ऊँचाई पर है । इन से सटकता हुआ फानूत विद्याई देता है । कथ की बाहिनी तरफ ध्यान करने के लिए पतंग विद्युत हुआ है । कथ के रोप भाम में बहुमुख्य कालीन की विद्यात है । यथास्थान मसंभ रंगे हुए हैं । बीबारों पर उरबुद्ध स्थानों पर बाबर हुमायूं मस्जिद, जहागीर, शाहजहाँ, औरंगजेब शायचिन्नीह यादि के विभ्र टंके हुए हैं । एक कोने में सूटी पर काप और तसवार भी टंकी हुईं दिखाई देती हैं । जब परेश उठता है तो सम्राट बहादुरशाह 'जुद्धर' एक मसंभ के पास बैठे हुए सामने रखी दिखाई पर एक कागज पर कबिता लिखत मजूर छाते हैं । कुछ दूर पर हुनका रया है जिसकी मजम उनक पास तक पहुँची हुई है जिनसे वे कमी-कमी कज लेते हैं । एक तरफ रत्नमणित दिखाई पर विस्तीपी मुण्डी में लाल मणित है । उनीपर दो-तीन स्वर्णपात्र भी रगे हुए हैं । बहादुरशाह की आयु ८१ वर्ष की है । उनको घाँसे बड़ी-बड़ी हैं जिनसे सज्जनता पारीनता के साथ सेव भी धरनी प्रामा प्रस्तुति कर रहा है । नात्र मुकीती है केहरे

पर सफेद बाड़ी-मुँहें । सपूर्ण व्यक्तित्व ऐसा है जिसका प्रति धारक का नाम बाघत होता है । इस समय वे राजसी पोशाक में न होकर साधारण बैद्य में हैं किन्तु उनके गले से बख पर घाते हुए बहुमूल्य मोठियों और रत्नों के हार मुगल बैभव की मार दिखा रहे हैं ।]

बहादुरशाह 'सफर' (कबिता लिखते हुए मुनकुलात हुए) ।

बह दुमिया है औघट घाटी
पग न बहुत फेलाओ जी ।
इतमा हा फेलाओ जिसक
सुल स पुल ना पाओ जी ।

[खीनत महम का प्रवेश । खीनत महम की आयु ४२ वर्ष से कम नहीं है फिर भी उसके सौंदर्य में दाबनी है जिसे राजसी बम्बानरणों ने बार बार लगा दिए हैं । मोल भरा हुआ बेहूष बड़ी-बड़ी आकर्षक प्राणों के मात के जैसी मुकुटियों मुडीब मुडीमी नाक परसे घोठ मुणही बार बरैन प्रत्येक भय सुभर है ।]

खीनत महम (कोनिष करती हुई) जिससे इलाही भारत-सम्भ्राट
बहादुरशाह 'जफर' को खीनत कोनिष भदा करती है ।

बहादुरशाह 'जफर' (कसम को विपारि पर रखते हुए) मामो बेगम
खीनत महम, वैठी ।

[खीनत महम बहादुरशाह 'जफर' के पास जाकर बैठती है ।]

बहादुरशाह 'सफर' हम तुमसे माराज हैं, खीनत महम !

खीनत महम (बहादुरशाह 'जफर' की तरफ सनेठ-दृष्टि से देखती हुई)

क्या किसी शाहजादे ने मेरे विरुद्ध जहाँपनाह के कान भरे हैं ?

बहादुरशाह 'जफर' तुम्हारे विरुद्ध कोई भी बात सुनने के लिए
बहादुरशाह 'जफर' के कान सहरे हैं ।

जीनत महल तब बात क्या है ?

बहादुरशाह 'अफ़र' तुमने आज फिर दरवारी छंग से हमें कोनिश किया !

जीनत महल (हंस पकड़ी है) मुझे तो डरा ही दिया था सम्राट ने । भारत-सम्राट को उसके सम्मान के अनुसूच ही कोनिश किया जाता है ।

बहादुरशाह 'अफ़र' भारत-सम्राट ! इससे बड़ा परिहास हमारा और क्या हो सकता है ? यह शहर हमारे कसेबे में तीर की तरह चुभता है । अब कभी हम अपने सर पर राजमुकुट रखकर शाही पोशाक में झरोखे में जाकर दिल्ली के नागरिकों को दर्शन देते हैं और अब नागरिक भारत सम्राट बहादुरशाह 'अफ़र' का अवजयकार करते हैं तो हमारा भी करता है कि जमुना में डूबकर पान दे दें । सम्राट ! कौन है सम्राट ! कहाँ है साम्राज्य ? हमारे साम्राज्य के उपवन पर फिरंगी भ्रष्टाचारों ने अधिकार जमा लिया है । इस घस्य-स्यामला भूमि के सम्पूर्ण जन्म का धरे जा रहे हैं ये विदेशी और हम हैं कि तसवार को खुंटी पर टांगकर बसम घामे बठे हैं और अपने घायको घोटा दे रहे हैं । लेकिन जाने दो जीनत जिस ब्यथा का कोई उपचार नहीं उसकी विवा करना भी ब्यय है । तुम अपने कमरों के समान कोमल करों से धंगुरी हाता डाल कर दो हम तुमको अपना कलाम मुनाब ।

[जीनत महल घायब डालकर बहादुरशाह 'अफ़र' को देती है ।]

बहादुरशाह 'अफ़र' : (एक घूंट पीकर) जीनत, तुम हमारी अवानी

हो। तुम हमारे सामने होती हो तो हमारी भूमिमापाएँ
जवान हो उठती हैं। और ऐसे समय हम कह उठते हैं—
'अक्र' इस झालमे पीरी में तेरे वह इरादे हैं कि जिनमें
थक के रह जाती जवानों की जवानी है।

खीमस महस जहाँपनाह गायर तो सवाबहार फूस है जो कभी
मुरझाता नहीं, जिसकी सुरभि समय की परिधियाँ में नहीं
बपती न म्यान उसे बंदी बना सकता है। प्रकृति उसे
जवान बनाती है और सदा जवान रखती है।

जहाँपुरसाह 'अक्र' साम्राज्य से हाथ धोकर हमने यह सायरी
पाई है लेकिन वेगम हमारी कविता हमारे दूटे हुए दिल
क भीत्कार के अतिरिक्त और है ही क्या। सायरी का
कमाल तो मिमता है उस्ताव 'औक' के कसाम में, जैसे
मोतियों का हार पिरो दिया है। हमें खेद है मात्र के
इस संसार में नहीं है। खुदा उनकी आत्मा को घाँति
दे। उनकी ही भाँति उदू सायरी की शोभा मिसती है
मिर्जा शानिव को एकलों में एक-एक शब्द ऐसा कि मुबह
हरी बास पर घबनम भमक रही हो। सब कहता हूँ खीमस,
भगर हमारे पास सभ्राट भकबर, जहाँगीर और
गाहजहाँ की भाँति दोस्त होती तो हम इन्हें मामामाल
कर देते।

खीमस महस जहाँपनाह, समय ने हमारा वेमब छीन लिया है
किन्तु बस-बरम्परागत उदारता को कौन छीन सकता है?
माप अपनी माथी रोटा में से भी माथी उर्वू भापा के सायरी
को देकर अपने स्नेह से उर्वू सायरी के बिराग को प्रका-

दित रस रहे हैं। सम्राट साहजहाँ ने ताजमहल बनवाकर अपना नाम प्रमद कर दिया जिसके सौन्दर्य से सत्तार की प्राप्ति चकित और मुग्ध होती रहेगी लेकिन एक दिन प्राणा अब नमय क धनइ ताजमहल को मिट्टी में मिला द्ये क्योंकि प्रत्येक वस्तु की उन्न होती है सकिन उन्न जिन्हें बाध नहीं सपत्ती—वे यस्तुएं हैं साहित्य और कला। प्रकवर के तानसेन को समय मार नहीं सकता और अफर, जौब और शासिय अनंत कास तक अपने अनुपम सौन्दर्य से सत्तार की प्राभा बढ़ाते रहेंगे। मुगल राजवत्त प्रतिम प्राप्ति मते हुए भी सत्तार को मिहास कर रहा है।

बहादुरशाह 'अफर' मुगल भारत में बिजेता क रूप में प्राए थे लेकिन भारत की मिट्टी ने उन्हें अपने सत्ताम बना लिया। हम अपने रत्त की अन्तिम बूंद नी मां क गौरव की वृद्धि करने के लिए समर्पित कर देंगे। खैर, जाने तो इन बातों का हम कुछ नया सिख रह थ सुनायी ?

सौनत महस फमाए प्रहापनाह !

बहादुरशाह 'अफर' कयिता हिन्दी भाषा में है।

सौनत महस (शास्य) हिन्दी भाषा में ?

बहादुरशाह 'अफर' रसमें चीकने की क्या यात है ? हिन्दी तो उदू की मां है। दातों हो भाषाए हमें प्यारी होनी चाहिए यस्कि भारत के प्रत्येक देग की भाषा हमें प्यारी होनी चाहिए। हमने पजाबी में भी कबिनाए सिरी है। किसी भाषा पर किसी एक यग या सम्प्रदाय का अधिपार

नहीं होना चाहिए । सम्राट अकबर, सामन्ताना अम्बुस
रहमान 'खीम' और जिन सम्राट औरंगजेब ने हिन्दू और
मुसलमानों में अमबध भेष बनाने का यत्न किया प्रादि
ने हिन्दी में कविताएं लिखी थी । हम भी उन्हींके पथ
का अनुगमन कर रहे हैं ।

खीनत महस मैं सोचती हू काय सम्राट हिन्दू होते ।

बहादुरशाह 'अकबर' हिन्दू ! (इसका है) मुगल राजबध में कौन
ऐसा है जो मुसलमान होने हुए हिन्दू नहीं है । हमारी मां
हिन्दू थीं । सम्राट शाहजहां और सम्राट बहांगीर की
माताएं हिन्दू थीं । हमारी रगों में हिन्दू रक्त भी उसी प्रकार
प्रवाहित है, जिस प्रकार मुगल । और हिन्दुस्तान में अम
लेने के कारण कम से कम हिन्दी तो हम हैं ही ।

खीनत महस : बहापनाह ठीक कहते हैं—और हिन्दू और मुसल
मान होने के पहले हम मनुष्य हैं । और, जाने पीनिए इन
बातों को, अथ अपना कसाम सुनाइए ।

बहादुरशाह 'अकबर' सुनो, कहा है

यह दुनिया है औषट घाटी
पग न बहुत फैलाओ जी ।
इतना ही फैलाओ जिसके
सुल से दुल मा पाओ जी ।

खीनत महस वाह वाह नापा हो नहीं रय भी नया है ।

बहादुर ['अकबर' सुनो बेगम, यह मुसायरा नहीं कि दाव न
दे । सायर अथमान धनुभव करेगा ।

इस दुनिया के खितने धंधे
सगरे गोरस धंधे हैं ।
उमके फंदे जा म पड़ो कुम
उनमें म मन उलझाओ जी ।

[खीनत महस के घोठों पर मुसकान बेल उठती है ।]

बहादुरशाह 'उफ़र' क्या धंध है तुम्हारी इस मुसकान का
कबिता जंघी नहीं ?

खीनत महस यह बात नहीं । मुझे ऐसा ज्ञान पड़ा कि धापका
वाणी में महारना कबीर की धात्मा धा बठी हा ।

बहादुरशाह 'उफ़र' कहाँ महारना कबीर धीर पही धक़िषन
'उफ़र' । उन्होंने हिन्दू धीर मुसलमान दोनों को अपन
भेद भाव भुसाकर सम्भे मनुष्य बनने का उपदेश दिया है ।
कहते हैं

माई रे हुई जगदीश कहाँ त ध्याना । कहु कौने वीराया ?
अस्साह, राम, करीमा, केराष, हरि, हजरत मम धराया ॥
गहमा एक कनक ते गहमा, यामे भाव न दूया ।
कहन सुनन को हुई कर माये एक मिमाज एक पूया ।
वही महादेव, वही महम्मद, ब्रज, आदय कहिए ।
को हिन्दू को मुक कड़ाये एक जिमी पर रहिए ॥
इसके धाग कुछ या नहीं धा रहा । स्मरण धक्ति भी ता
बुझी हो गई है ।

खीनत महस (धपने हाप स धराव का प्यापा बहादुरशाह 'उफ़र' के
धुध ध मगाती हुई) जवानों के जाम पीजिए, स्मरण-धक्ति
भी जवान होगी ।

बहादुरशाह 'उफ़र' (धराव का वृट वीरर) हम धमी बहुत उन्ने

आकाश में उड़ रहे थे, तुम फिर हमें धरती पर से भाई ।
 शीतल महल लेकिन बर्हापनाह, कबीर की या वाणी प्राप मुना
 रह थे, वह भी तो किसी दूसरे संसार की बात नहीं
 थी । उन्होंने भी तो कहा है—को हिनू को तुरक कहावे,
 एक बिमी पर रहिए । प्रत्येक धम वाले भाई भाई की
 तरह रहें जमीन पर ही । मनुष्य आकाश में उड़ने का यत्न
 करके न धरती का रहता न आकाश का । आकाश तो
 आकाश है—केवल धूम्य । वहाँ किसीको आघार मिस
 ही कमे सकता है ? इसलिए कहती हूँ—प्यार का प्यासा
 पिपों और प्रसन्न रहो ।

बहादुरसाह 'अकर' हम कभी-कभी हाथ में माने का यत्न करते
 हैं, बीतत, लेकिन तुम होश में नहीं मान देती । यह अच्छा
 ही है । हाथ में माने पर मस्तिष्क में भाति भाति के
 विचार उठते हैं । मुगल साम्राज्य का सपूर्ण बेमवपुण
 मतीत मजदूरों के सामने घूम जाता है ।
 [बहादुरसाह 'अकर' उठकर बड़े होकर दीवार पर टपे हुए मुगल
 साम्राज्य के विचारों की तरफ मुंह करते हैं । बीतत महल भी बड़ी
 होती है ।]

हमारे पूर्वज एक-एक करके हमारे सामने भा जा रहे होते हैं ।
 हमसे पूछते हैं तुम जीवित हो या मर गए हो ? तुम्हारी
 रगों में तमूरी रक्त शेष है या नहीं ? धाराय के आम
 हमने भी लिए हैं । साहित्य और कलाओं से हमें भी प्यार
 था—लेकिन हमने अपनी तसबार को जंग नहीं लगने दी ।
 बिपत्तियाँ और विनाश की आंचियाँ हमारे जीवन में भी

उठी हैं लेकिन क्या हमने कभी साहस छोड़ा है ? एक तुम हो जो अंग्रेजों से १५ लाख वार्षिक पेंशन पाकर अपने आपको धन्य समझते हो। भूल बैठे हो अपने सम्मान को—अपने बन्धुधर्म को। तुम जीवित नहीं हो—मृदा हो। जीनत हमारी ऐसी जिन्दगी को चिन्तार है। हमारे दिल में भव जिंदा रहने की चाह नहीं रही। जीनत, तुम हमें धराब की जगह खहर पिसाओ।

जीनत महसूस जीवन से भाग जाने से आपके पूबज प्रसन्न नहीं होंगे जहाँनाह। भव भी घान अपने हाथ में तसवार पकड़ सकते हैं। आपके एक हुबार से यह महान भारत देश जाग सकता है।

[बहादुरशाह 'अकबर' बिर्षों की घोर से मुंह फरकर बर्तकों की तरफ करता है। जीनत भी जपर ही मुंह करती है।]

बहादुरशाह 'अकबर' उस दिन पिटूर से माना साहब ने भी आकर हमसे कहा था, "यह महान भारत देश जाग सकता है। हम लोगों ने अपनी नादानी से अपना देश फिरगियों के हाथ सौंप दिया। जिन अंग्रेजों को दया करके मुगल-सम्राटों ने भारत में व्यापार करने की सुबियाएँ दीं, उन्होंने अंग्रेजों को घोर फरैब से हमारे ही ठगपारों के यत्न पर हमारे ही पैसे से हमारा राज्य छान लिया, देश की दोस्त सूनट सी और सूनट रहे हैं देश का गुलाम बना लिया। आज देश का बर्षा-अर्षा भारत से फिरगिया को निकाल बाहर करने के लिए फिर पर बपन बापकर निरसन को तयार है। आपके नाम में आज भी एजा जादू है कि साथ देश आज

भी आपके हरे भ्रू के नीचे लड़ा होकर रण-भाव से अंग्रेजों के प्राणों को कंपा दे सकता है ।”

शोभत महस नाना साहव ने गलत नहीं कहा, बहापनाह । अंग्रेजों की क्या पर हम निर्भर रहेंगे तो हमें वे १५ लाख रुपया सामाना जो सर्व के लिए देते हैं एक दिन वह भी नहीं देंगे । उन्हें हमारी सत्तनठ ने आज से ६२ बय पहले बगाम विहार की धीबानी भी थी । वे हमारे नाम पर इस प्रदेश की मालगुजारी वसूल कर अपना सर्व और मुनाफा काटकर शेष रकम हमें भेजते रहे इतना ही अधिकार उन्हें प्राप्त था, लेकिन धीरे धीरे उन्होंने हमारा वह प्रदेश हड़प लिया । फिर तो उन्होंने शहेसखंड और गंगा-धमना का बोझ भी ले लिया और अमी-अमी अवध पर भी हाथ सफा किया । वे जिसके दोस्त बने उसका ही सर्वस्व छीन लिया । मराठों को भी समाप्त किया सिखों को भी । अब हमारे पास सस्तमत के नाम पर क्या शेष है ? यह दिल्ली का सामकिसा भी अंग्रेजों की छाँटों का काटा घना हुआ है ।

बहादुरशाह 'खर' और इसे प्राप्त करने के लिए व हमारे दाहजादों की आपस में लड़ा रहे हैं । हम दाहजादा अबाबक को इसलिए नहीं बलीमहद बना रहे कि वह तुम्हारा बेटा है और तुमपर हमारा सारी बेगमात से अधिक प्यार है बल्कि इसलिए कि उसके दिम में तैमूरी बंस का कुछ गर्व बाकी है । वह अंग्रेजों के हाथ की कठपुतली बनने को तैयार नहीं होगा ।

चीमत : उन्होंने पहले शाहजादा मिर्जा फ़ख़रू को गांठ और उसे इस घंठ पर बलीमहद स्वीकार कर लिया कि बादशाह बनने पर वह सासकिसा खाली कर देगा। लेकिन सुदा को यह स्वीकार न था, उसने मिर्जा फ़ख़रू को ही इस दुनिया से उठा लिया। इसके बाद जब अंग्रेजों ने मिर्जा कोयाद पर आस फँसाया है कि उन्हें बलीमहद बनाया जाएगा। अंग्रेजों की दृष्टि है कि जहाँपनाह की मृत्यु पर सासकिसा सासो कर दिया जाए, भाबी मुगल बादशाहों की पदवी बादशाह के स्थान पर शाहजादा हो और बलीफा वमाय पन्द्रह सास सान के कुल एक सास अस्सी हजार रुपया वार्षिक हो।

बहाबुरदाह अभी तो हमने कहा था

ऐ 'नज़र' अब है तुम्ही तक इम्तज़ामे सरतगत ।

बाद तेरे न बलीमहदी न नामे सत्तगत ॥

हिंदुस्तान भर का सारा सज्जाना एक दिन जिस राजवंश का था, जिसकी राजसमा में हिंदुस्तान में व्यापार करने की अनुमति पाने के लिए अंग्रेज प्रार्थना-पत्र लिए हाथ जोड़े सड़ रहते थे वह खानदान (१५०००) महीने में अपना सच घसाए यह अंग्रेजों का न्याय है। कौन होते हैं वे हमें बलीफा देने वाले ? भारत के सम्राट हम हैं। अंग्रेज नहीं। हमारे राजसिंहासन पर बैठने पर अंग्रेजों ने भी हमें नज़र भेजी थी। अंग्रेज हमेशा अपने-आपको हमारे फिन्वी मिसते रहे। हमारे दरबार में नियमपूर्वक कोर्तिय घडा करते रहे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के सिवकों पर दिस्ती

सम्राट का नाम खुदा रहता, अफ़्ग़ान ग़बनर जनरल की मोहर में विल्मी क बादशाह का 'फ़िख्रिये खास' ख़ब्द खुदे रहते हैं। अब उनका दिन बेईमान हो गया है। आज उनके हाथ में शक्ति धा गई है। अब वे हमें नहरों पेदा करने और कोनिश घवा करने में अपना अपमान अनुभव करने लगे हैं। और हमारे शाहजादे हैं कि इन्हीं पोखेबाज और बेईमान धंधेवालों के संकेतों पर नाच रहे हैं। यह सब देख देखकर हमारा दिल विषीर्ण हो रहा है। ये हमारे बेटे नहीं शत्रु हैं।

[शाहजादा मिर्जा कोयाश का प्रवेश। उसकी धानु पीठीस बंध के लक्षण हैं। सुंदर और भव्य व्यक्तित्व है। मुग़ल शाहजादे के उप-मुख पोशाक में बह है।]

मिर्जा कोयाश जहाँपनाह को मिर्जा कोयाश कोनिश घवा करता है।

यहाँपनाह कोनिश घवा करते हो। यह पाखंड किसलिए ? यह सो हम तुमको तलवार देते हैं। (बूँदी से उठारकर छत बार मिर्जा कोयाश की ओर बढ़ते हुए) पकड़ो इसे। मृत करो हमारा ! बादशाह औरंगजेब ने अपने भाइयों का बच किया अपना अम्बा को तलवार से उठारकर बंदी बनाकर रखा—और भी हमारे बस में बहुत-से व्यक्ति उत्पन्न हुए अपने धाप से बचाव करने बाने, लेकिन उसका सर काटने का गौरव तुम प्राप्त करो। उसके बाद धंधेवालों की श्रुतियाँ पाटो।

मिर्जा कोयाश क्षमा कीजिए, जहाँपनाह ! कोयाश इतना नीच

नहीं है। मुझसे मूल हुई कि मैं अप्रेजों के चकमे में घा गया। मैंने बाहर आड़े होकर आपकी बातें सुन ली हैं। मैं अपनी करनी पर पछताता हू। अपने घोड़े-से सुख के लिए मैं तमूरी वण के सम्मान को घूस में मिलान को प्रस्तुत हो रहा था, उस वण को जिसमें बाबर जैसे घोर-दिन सम्राट अकबर जैसे उदार और हिमालय के जैसे उच्च हृदय बास साहजहाँ और सच्चे धर्मों में मनुष्य दाराधिकोह जैसे व्यक्ति पदा हुए। मैं खुश की कसम साबर कहता हू कि अब मैं अप्रेजों से बास्ता नहीं रखूंगा। अगर आपको मुझपर मरोसा नहीं तो आप मेरा सर कसम कर दीजिए। [मिर्जा कोयाज अपना सर बहादुरशाह 'अकबर' के चर्मों में झुकाता है।]

बहादुरशाह (मिर्जा कोयाज को उठाकर अपने कमरे से सपाते हुए) साबास, हम तुमसे खुश हुए। याद रखो, तुम उस तमूरी खानदान में जन्मे हो जिसमें सारी सम्पत्ति पुत्रियों को और पुत्रों को केवल पिता की तसवार मिलान का नियम है। घेरे, यह तसवार ही हमारी सबसे बड़ी सम्पत्ति है। भारत में मुगल साम्राज्य की नींव रखने वाले सम्राट बाबर के पास क्या था, जब उन्हें अपना बतम समरखंद छोड़ना पड़ा—केवल अपनी तसवार। साम्राज्य बनते हैं बिगड़ते हैं, लेकिन वंश के वंश को बसंत नहीं खपन देना हमारा प्रथम कर्तव्य है।

खोजत पुर्जान जाऊ वहांपनाह नी सादगी पर। एक भीठी बात बरके कोई भी ठग से सकता है आपने।

बहादुरशाह तुम कहना क्या चाहती हो बेगम ! स्पष्ट करो ।
 सीमित मैं कहती हूँ मिर्जा कोयास ने जो कहा वह सब झोला
 है झूठ है, फरेब है । अंग्रेजों का बाल है । उन्होंने शाहबादे
 को परामर्श दिया है कि मीठी-मीठी बातें बनाकर आपके
 विश्वास पीत से घोर बाद में आपके, मेरे और शाहबादा
 अर्बाबक के कसेजे में छुरी भोंककर या अहर देकर अपने
 लिए रास्ता साफ कर से । अंग्रेज ऐसे खेल भारत में अनेक
 स्थानों पर खेल चुके हैं ।

मिर्जा कोयास यह हूँ ! कितनी सुवर बात कही है । फूल
 बरसते हैं आपकी खान से । एक बात याद रखिए जहाँ-
 पनाह की यहती बेमम, कि धासे से कसेजे में छुरी भोंकना
 या अहर देना कोयास नहीं जानता । आपकी भाँति वह
 मोठे दास्त्रों का प्रयोग नहीं करेगा ।

बहादुरशाह (शोक में) कोयास ! तुम हमारे सामने मसिकाए-
 हिंदुस्तान का अपमान करके हमारा ही अपमान कर रहे
 हो । जानते हो इसका दंड क्या होगा ?

मिर्जा कोयास जहाँपनाह, सर कसम कीजिए इस अपराधी पुत्र
 का । मुँह से उफ भी निकले तो समझ लीजिए मेरी रॉ
 में छिमूरी रक्त नहीं है, लेकिन सरय के सूर्य को आप प्रकट
 होने से नहीं रोक सकते । मैं स्पष्ट कहता हूँ कि मिर्जा
 अर्बाबक के रास्त का रोड़ा दूर करने के लिए इन्होंने
 मिर्जा फ़खरु को अहर देकर मार डाला है ।

सीमित महल (शोक से भाँसे सात करके) मिर्जा कोयास, तुम्हारा
 यह दुस्साहस !

मिर्जा को याश जिदगी में मृत्यु की वार नहीं आती है, मसिपाण हिपुस्तान ! को याश किसी भी क्षण जान देने को प्रसुत है । चाहाचाह आपकी मुट्टी में हैं । भाशा कीजिए उन्हें कि वे मुझे घूसी पर चढ़ा दें, फाँसी लगवा दें, जिन्ना दीवार में चुनवा दें, लेकिन अंतिम साँस तक मैं कहूँगा कि आपके खूबसूरत हाथ मिर्जा अल्लरु के रक्त से रंगे हुए हैं ।

बहादुरशाह मिर्जा अल्लरु अंग्रेजों से साँठ-गाँठ कर रहे थे । मिर्जा को याश तो उन्हें आप फाँसी लगवा बते । एक देशद्राही कंधाही और राजद्रोही को आप खुम धाम मृत्यु दंड देते म्याप की यही माँग थी । वेपारे को उहर क्यों दिया गया ? वे आपकी ही भाँति सरल हृदय शायर थे । वे अंग्रेजों से साँठ-गाँठ नहीं कर रहे थे, बल्कि अंग्रेज समम साँठ-गाँठ कर रहे थे । वे फस गए फिरगी के जाल में । और क्यों नहीं फँसते जब एक सौतेली माँ उन्हें उनके स्वल्प से अपित करने पर कटिबद्ध थी । जाल तो उन्होंने मुक्तपर भी डाला है । याप और वेटे में घुड़ कराकर वे साम किसे को हस्तगत कर लेना चाहते हैं और मुगल गति का अंतिम प्रतीक हरा नंडा किम पर से उतार फेंकना चाहते हैं क्योंकि जानते हैं कि जब तक यह फहरा रहा है, भारत किसी भी दिन इसके नीचे एकपित होकर अंग्रेजों को भारत से बाहर अदेद देने का यत्न कर सकता है । अंग्रेज अपनी यत्ने सभी शाहशाहों के सम्मुख रख रहे हैं । औरों की मैं नहीं जानता केबस इतना कह सकता हूँ कि को याश मे जमाने भर के दुर्गुण होते हुए भी बोड़ी हया दोष है । यह

अंग्रेजों की वी हुई रोटियां नहीं साएगा ।

बहादुरशाह हम मान लेते हैं कि तुम नेकदिल और वीर हो, मुगल राजवंश के सम्मान के लिए तुम प्राण दे सकते हो लेकिन तुम मसिका पर जो आरोप लगा रहे हो वह मिथ्या है । मैं कहता हूँ कि अंग्रेजों ने ही यह जहर तुम्हारे हृदय में भरा है । वे तो सभी शाहजादों को समान रूप से प्यार करती हैं ।

[मिर्जा कोयास अट्टहास करता है ।]

मिर्जा कोयास प्यार करती है यह जहरीली नागिन ? किन्तु सबसूरत घोसा है यह ! प्यार करना ये क्या जानें जिन्होंने अपने रूप और जीवन को वेच दिया है बेमब और प्रभुता पाने के लिए । जब अहापनाह अवानी की सीकियां पार कर चुके थे और ये उनपर पांव ही रख रही थीं तब इन्होंने आपसे विवाह किया था । क्या वह प्यार था ? नहीं वह था स्वार्थ, सोम, अविचार-मिथ्या । एक सीपा । अवानी के सारे अरमानों का जून करके ये आपकी इस लिए बनीं कि अपने सौंदर्य की अफीम पिनाकर आपको मुट्ठी में कर मुगल सत्ता के अवशेष बचव को स्वामिनी बनें और आपके पश्चात् अपने बेटे के मस्तक पर राजमुकुट रखकर सुख भोगें । इन्हें आपसे प्यार नहीं है—प्यार है अपने-आपसे ।

बहादुरशाह तुम मूख हो कोयास । तुम मारी की सेवा को नहीं जानते ।

मिर्जा कोयास निदनय ही कोयास मूर्ख है अहापनाह की प्रति

कल्पना के संसार में नहीं रहता। वह तो इतना ही जानना है कि चंद बांदी के सिक्के फेंककर वह नारी की सेवा पा सकता है, लेकिन यह सेवा एक व्यापार है जहाँपनाह प्यार नहीं। बेचारे बादशाह जहाँगीर भी समझते थे कि नूर जहाँ हमें प्यार करती है। यदि वह प्यार करती होती तो क्या चार वर्षों तक दर भ्रष्टान की स्मृति को कलेजे में पाले हुए सम्राट के भाग्यों को टासती रहती? चार वर्ष बाद उसने उनसे विवाह किया, प्यार करने के लिए नहीं, यत्ना सेने के लिए। अपना जहरीला प्यार पिताकर स्वयं साधारण की स्वामिनी बनने के लिए। जहाँपनाह इतिहास अपने आपको दोहराता है।

बहादुरशाह कोयादा, बंद करो यह अनगस प्रसाद। हमने तुम्हें अभी नेकदिस और और कहा यह भी घायल हमारी भूल है। मसिका समवत ठीक ही कहती हैं कि तुम अंग्रेजों से मिले हुए हो और आज भी उन्हींकी दाहपाकर इतना बोसन का तुम्हें साहस हुआ। राज के सम्मान को तुम भूल सकत हो, क्योंकि आज मुगलों के राजमुकुट में तेज नहीं है, लेकिन अफसोस इस बात का है कि तुम पिता और पुत्र के संवर्ष का भी भूल गए।

मिर्जा कोयादा जहाँपनाह मुझे खेद है कि आपक दिस पर मरे दरों ने चोट पहुंचाई है अकिन्त मेरा दिस भी घायल है। यह पीछ उठता है। नाई भाई के मुटु का बीज सर्व प्रथम मुसल राजवंश में एक स्त्री ने ही बोया था। उसका नाम था मूरजहाँ। वह जीवन भर जहाँगीर से अधिक

प्यार करती रही और अज्ञान को और इसी कारण और अज्ञान की पुत्री साहबी बेगम के पति शहरियार को जहांगीर के बाद विस्सी के राजसिंहासन पर बैठाना चाहती थी, उनकी दूसरी बेगमों के पुत्रों में से किसीको नहीं। यहीं से वास्तव में मुगल राजवंश में भाइयों का संघर्ष प्रारम्भ हुआ। उसका मयातकतम रूप प्रकट किया आसमगीर औरगजेब ने। यह परंपरा अभी तक बामू है यद्यपि आज साम्राज्य की छाया ही देख रहे हैं।

जहांगीरसाह किन्तु क्या इस छाया को फिर सत्य में परिणत नहीं किया जा सकता है ?

निर्वाण कोयाल : कैसे किया जा सकता है, जहांगीरसाह ! सोचता ही कौन है मुगल साम्राज्य के पूर्वगौरव को प्राप्त करने के लिए ? हमारा सर्वस्व छीनकर अंग्रेज आज हमारे आगे रोटी के टुकड़े डालते हैं और इन रोटी के टुकड़ों के लिए भी हम परस्पर छीना झगटी कर रहे हैं। आपकी निराशा मे आपको स्त्री के चरणों पर डाल दिया है। जहांगीरसाह, स्त्री पुरुष की सबसे बड़ी दुर्बलता है। राजा जब इस दुर्बलता का शिकार होता है तो सारा देश उसका दुष्परिणाम भुगतता है। किन्तु इसके लिए कबल आपको भी क्यों दोष दूं ? यह तो बंध-परंपरामय रोम है हमारा। अराब और स्त्री इन दोनों बस्तुओं ने हमसे हमारी बुद्धि छीन ली है, पुरुषार्थ छील लिया है। अराब इस्लाम में बर्जित है, लेकिन औरगजेब को छोड़कर कौन-सा मुगल सम्राट या साहजादा हुआ जिसने इसे मुंह नहीं लगाया ? और औरत

को किसने अपने सर नहीं चढ़ाया । जहाँगीर ने शराब के प्यासों के बदले अपनी सल्तनत औरत को सौंप दी चाहे वह लूच हो या झराब हो । सम्राट बहादुरशाह ने मुगलों के पवित्र सिंहासन पर अपने छाप बेरवा सातकुमारी को बैठाया, करोड़ों रुपये उसपर नजर कर दिए और उससे अयोग्य और अनाजारी नातेदारों के हाथों में शासन छोड़ दिया । उस मुगल साम्राज्य को समाप्त होना ही था, न होना ही अस्थानाविक था ।

[नेपथ्य से आवाजें आती हैं—'भारत-सम्राट बहादुरशाह 'बंडर की बय ।]

बहादुरशाह यह कैसा कामाहल है ?

[हकीम एहसानुस्साखा और बिस्वी का प्रवेश रेजीडेंट फ्लोर का प्रवेश । हकीम एहसानुस्साखा बरबारी तरीके से कोनिच घटा करता है, लेकिन रेजीडेंट फ्लोर किसी सिप्टाचार का पासम नहीं करता । बीच-बीच महम प्रस्थान कर जाती है ।]

हकीम एहसानुस्साखा जहाँपनाह को हकीम एहसानुस्साखा कोनिच घटा करता है ।

बहादुरशाह घाए हकीम साहब, बाहर यह कामाहल कैसा है ?

हकीम एहसानुस्साखा यह तो मुझसे अधिक अच्छी तरह रेजीडेंट मिस्टर फ्लोर बता सकेंगे ।

रेजीडेंट फ्लोर घात यह है कि मेरठ में हमारी जो भारतीय सेना थी, वह विद्रोह करने यहाँ आई है । बीटियों को परसते हैं ।

बहादुरशाह : सेना विद्रोह करके भाई है ? यह कैसे हो सकता है ? किसने कहा उनसे विद्रोह करने के लिए ? चारा भारत घात है, दिल्ली का सामकिया घात है, गंगा-खमना की नहरें घात हैं, हिमालय घात है, घात हैं हिन्दमहासागर की नहरें लेकिन मेरठ में क्यों प्राग भड़की ? ये लोग चाहते क्या हैं हमसे ?

हकीम एहसानुस्ताखा सभा के दर्शन ।

रेजीडेंट फ़ोखर : वे चाहते हैं इस विद्रोह में आप उनका साथ दें । मूर्ख हैं । बादशाह ससामत अंग्रेजों की मित्रता का मूल्य समझते हैं । भारत में एक राजा दूसरे राजा से नड़ते थे और हमेशा सदाइयां बसने से न छोटी हो सकती थी न व्यापार । अंग्रेजों ने आकर भारत की अशांति को दूर किया । अब हर आदमी सुख की नींव सोता है । बादशाह ससामत भी बैन से जीवन बिताते हैं । शासन का उत्तर दायित्व अब उनपर नहीं । क्या आप सुख और सुरक्षा का छोड़कर इन विद्रोहियों से मिसमा चाहेंगे ?

बहादुरशाह निश्चय ही । वे हमारी प्रजा हैं । हम उनकी बात सुनें । मिर्जा कोयास उनके दो प्रतिनिधियों को हमारे हज़ूर में पेश करो ।

रेजीडेंट फ़ोखर : वे आपकी प्रजा हैं और वेतन हमसे पाते हैं । वे हमारे नीकर हैं ।

[मिर्जा कोयास का प्रस्थान]

बहादुरशाह : लेकिन आप कौन हैं ? आप लोगों ने मुगल सम्राट के दीवान की हैसियत से भारत के कुछ प्रदेश का प्रबंध

प्रारम्भ किया था । शीवान सम्राट नहीं है । भारत के सम्राट हम हैं । जब यह सातकिशा भी हमारे पास नहीं रहेगा तब भी भारत के सम्राट हम होंगे, जब हम बफला दिए जाएंगे, तब भी भारत के सम्राट हम होंगे ।

हकीम एहसानुस्लाख्ता जहांपनाह, समय को बेलकर कार्य कीजिए । विद्रोहियों को मुंह सगाना ठीक न होगा ।

रेजीडेंट फोखर इन लोगों में बहुत बुद्धि किया है । मेरठ में घनेक अग्रज अधिकारियों को मार डाला है उनके घरों में घायल सया दी, जलखाना छोड़कर सारे बंदियों को मुक्त कर दिया जो सहर में उपद्रव करते घूम रहे हैं । मेरठ से दो सौ सैनिक दिल्ली आ पहुंचे हैं । यहां भी उन्होंने अग्रज अधिकारी टाक धीर रिप्ले को भीत के घाट उठाव दिया है । दरयागंज में अंग्रजों के जितने बंगले थे उन सबमें आग लगा दी है । ये लोग खैतान का रूप धारण कर भीत धीर विष्वस के खेन खेन रहे हैं । मेरी मन्न सम्मति यही है कि जहांपनाह इन्हें दर्शन न दें ।

महादुरदाह हकीम जी, आप हमारी नाड़ी देखिए, सफिन देश की नाड़ी सम्राट को ही देखने दीजिए । एक सुदीर्घ अग्रजि से हम लोगों में अपने देश की नाड़ी अग्रजों के हाथ में द दी । इन्होंने हमारे रोग ठो बढ़ा दिए लेकिन साथ ही अफीम की गोतिमा प्रिसाकर हमें गहरी नींद में सुला दिया । भारत में करघन सी धीर जागते हो भारत एक बड़ा अग्रगर है । उसकी एक साधारण बरबट भी आधी उठाने वाली होती है । क्या सोचते हो रेजीडेंट मिस्टर

फ्रेजर ?

रेडीवेंट फ्रेजर जहाँपनाह जान पड़ता है आज घायल खादा पी गए हैं ।

महादुरशाह नहीं फ्रेजर, अपमान के घुंटे पीते-पीते हमारी रजा का सून ठंडा हो गया था । आज उसमें बोबी गरमी आई है । मान लो, फ्रेजर, तुम इंग्लैंड के बादशाह होते, कई पीढ़ियों से तुम्हारे बच का राज बसा था रहा होता और हमारे देश के वासी व्यापारी बनकर आते और तुम्हारे देश पर कब्जा कर लेते और तुम्हें पेशान देकर कहते भव तुम धाराम करो, हम राज करेये, तब तुम्हारा मन क्या करने को कहता ? तब तुम हमारी तरह बात करते ता हम कहते तुमने क्यावा पी ली है ।

रेडीवेंट फ्रेजर भारत और इंग्लैंड में बहुत अंतर है, जहाँ पनाह ! इंग्लैंड अपना सब कुछ यहाँ सकता है, लेकिन किसी विदेशी का घासम स्वीकार नहीं कर सकता ।

महादुरशाह इस संसार में प्रत्येक प्राणी को स्वतन्त्र रहने का अधिकार है । जो अधिकार तुम अपने लिए स्वीकार करते हो वह भारतीयों के लिए क्यों नहीं ?

[बिर्जा चौपास के साथ मेरठ के बिर्ही सैनिकों के दो प्रतिनिधि प्रवेश करते हैं । दोनों सैनिक बेश में हैं और हाथों में मरी बंदूकें लिए हुए हैं । दोनों सभात को सतानी बैठे हैं ।]

महादुरशाह तुम लोग कौन हो कहाँ से आए हो और किसके मीकर हो ?

एक प्रतिनिधि जहाँपनाह, हम लोग मेरठ-स्वत घनेजों की

११वें और २०वें नम्बर की भारतीय सना के सैनिक हैं। हम लोगों ने अपने कर्भों पर आज तक अंग्रेजी प्रभुता का जुधा सादे रखा। अपने ही कर्भों पर नहीं सादे रखा, बल्कि सारे भारत को अंग्रेजों का दास बनाने में उनके सहायक हुए। अब हम इस पाप का प्रायश्चित्त करना चाहते हैं। हमारी ही ललवारों के बस पर भारत में अंग्रेजी सत्ता को स्थापना हुई है और हमारे ही बस पर कायम है। पेट की खातिर हमने अपने देश के प्रति विश्वासपात किया। ये अंग्रेज हमारे एहसानों का बदला हमारा धर्म मष्ट करके दे रहे हैं। हम अपने सर पर कफन बांधकर अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने का प्रयत्न ठानकर आए हैं।

[नेपथ्य में 'सम्राट बहादुरशाह की बग' के नारे बजते रहते हैं।]

बुसरा प्रतिनिधि अब हम सम्राट के नोकर हैं। आप हमारे मस्तक पर अपना बरद हस्त रखें।

बहादुरशाह सुनो भाई, हमें आदशाह कौन कहता है ? हम तो फकीर हैं एकांतवासी हैं। हमें कष्ट देने क्यों आए हो ?

पहला प्रतिनिधि बहादुरशाह भारत का वास्तविक सम्राट हैं। प्रत्येक भारतवासी के हृदय में आप राज करते हैं। अब जब हम भारत की स्वाधीनता की लड़ाई लड़ने निकले हैं तब आपके अतिरिक्त और किसका पास जाए ?

बहादुरशाह लेकिन आपके भाइयो मुगल साम्राज्य के अभाव और शक्ति के दिन स्वप्न हो गए। अब हमारे पास खजाना नहीं जो तुम लोगों को हम बेतन दे सकें।

दूसरा प्रलम्बिबि हम अंग्रेजों का सारा सपना, जो उन्होंने भारतीयों को सुटकर एकत्रित किया है, साकर आपके घरजों में डाल देये ।

अहमपुरशाह स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए मुठ करना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है, इसलिये हम तुम लोगों की भावना का आदर करते हैं । ये अंग्रेज रेजीडेंट फ्रेजर साहब तुम्हारे सामने खड़े हैं । हमें विश्वास है ये भी इस बात को मानेंगे कि अगर भारतवासी अंग्रेजों की दासता से छुटकारा पाने का प्रयत्न करें तो उनको इसका अधिकार है । लेकिन हमारे मोसे बीरो, ह्वेजी पर सरसों नहीं बना करती । तुम दो हजार सैनिक क्या अंग्रेजों की विद्याल व्यक्ति स लोहा से सकोये ? अब हमारे पास न राब है न खपया । भारत में कौम-कौन हमारा साथ देगा, इसका भी तो पता नहीं, तब घताभो हम किस बूटे पर तुम लोगों को बसि के बन्दरे घना दें । हम कहते हैं, तुम लोग मोट जाओ । ये फ्रेजर साहब हमारे कहने से बीप में पड़कर तुम्हें माफी दिला देंगे ।

रेजीडेंट फ्रेजर हा, सभाट ठीक कहते हैं । तुम लोगों ने अर्थ ही उपद्रव सबा किया है । हम अंग्रेजों ने तुम लोगों को रुमास से पौछ कर तयार किया है । हम तो भारत को सारी विपत्तियों से बचाने आए हैं । हमारा दाबा है कि यदि रुस भारत की तरफ रुस बढ़ाएगा तो हम सीमा पर उसका सिर ठोड़ देंगे, यदि ईरान अंग्रेजों हुआ तो उसे छठी का बूध याद करा देंगे । हमें पता नहीं या कि

हमारी ही सेना हमसे मुझ करन का तैयार हो जाएगी ।
 क्या इसीका नाम नमकहसाली है ?

पहला प्रतिनिधि हम लोगों ने आज तक कम्पनी सरकार के
 नमक का हक भदा किया । जहाँ आप लोगों ने हमको
 भोंक दिया हम भातों बंद करके भाग-मानी में कूद पड़े ।
 कभी प्राणों का मोह नहीं किया ।

दूसरा प्रतिनिधि पचासी का मुझ हमने जीता, टीपू सुलतान को
 हमने परास्त किया मराठों से हम लड़ । काबुल में हमन ही
 प्राण सुटाए, साहीर हन्हीनि जीता नेपास में हम्हीं जूझे ।
 हमने अपने हाथ से अपना वेश जीतकर आपको द दिया ।
 अब अब सारे देश पर आपका अधिकार हो गया अब आप
 हमारे धर्म और संस्कृति के भी पीछे पड़े गए ।

तृतीया प्रतिनिधि हमें ईसाई बनाना चाहा । हर पल्टन में
 ईसाई पादरी आकर हमारे हिंदू और मुस्लिम धर्म की
 निंदा और ईसाई धर्म की प्रशंसा करते हैं । इसका असर
 नहीं हुआ ता अब गऊ और सुघर की पर्वी सग बारतूस
 हमारे मुह से आप लोग कटवाकर हमारा धर्म छीनना
 चाहते हैं ।

चतुर्थी प्रतिनिधि हमको मर जाना स्वीकार है किन्तु धर्म स
 यधम होना नहीं । हम तो अब जान हपेसी पर लेकर निकल
 पड़े हैं । अब अपने पुत्र स्वान पर वापस जान का माग
 नहीं है क्योंकि यहाँ भी मृत्यु हमारी प्रतीक्षा कर रही है ।
 एडोर्ट क्रेजर नहीं, अगर तुम लोग लौट जाओ ता हम तुम्हें
 धामा प्रदान करा देंगे । हम बीच में पड़े हैं और जमानत

बेते हैं तथा ईश्वर की शपथ लेकर कहते हैं कि तुमको माफी दिलावा दूँगे ।

दूसरा प्रतिनिधि क्षमा कीजिए, हम विपथर साँप का विश्वास कर सकते हैं, धर्म का नहीं । हम भी थोड़ा इतिहास जानते हैं । पहली मित्रता आपने मुगल सम्राटों से की, जिससे सन्ध लेकर आप सोग भारत में व्यापार करने लगे और बाद उसका सर्वस्व छीन लिया । सातकिसे पर जो नाम-मात्र के लिए हरा झंडा फहरा रहा है यह भी आपकी धाँसों में गड़ रहा है ।

पहला प्रतिनिधि जो पदार्थ और विश्वासघातों के बेल आपने बगाल में खेले उन्हें कौन नहीं जानता ? मीर जाफर को नवाब सिराजुद्दौला से विश्वासघात करने के लिए फुसलाया, फिर उसे भी धोखा दिया और मीर कासिम को खड़ा किया, फिर उसे भी समाप्त किया । अंत में बगाल हड़प ही लिया ।

दूसरा प्रतिनिधि : मराठों से मिसकर टीपू सुलतान को खरम किया और फिर मराठों की भी कमर तोड़ दी । बाजीराव द्वितीय के मित्र बनकर उसका राज छीन लिया । अकब की मराठी के मित्र बने, उसे दिल्ली सम्राट से स्वतंत्र किया और बाद में उससे करोड़ों रुपये छीने वेगमात पर अत्याचार किए और अंत में अकब का राज भी हड़प लिया । आप लोगों की किसी बात का मरोसा नहीं किया जा सकता । हमने आपकी अच्छी तरह जान लिया है । अब आप हमारे सामने से हट जाइए । धर्म का भी सुरत देखकर

ही हमारा खून खीलने लगता है ।

[पहला प्रतिनिधि घपनी बन्दूक सम्हालने लगता है ।]

बहादुरशाह (फुल से) भाप घसे जाइए इसीमें भापकी सुरक्षा है । हुकीम साहब भाप भी जाइए ।

[फेवर धीर हुकीम एहसानुस्वाखा खिजी से प्रत्याग करते हैं ।
बिरोहियों का प्रतिनिधि उभर बन्दूक का निघला साधता है ।]

बहादुरशाह ठहरो ? हमारे सामने किसीको बन्दूक का निघाना न बनाओ । धंधल भी उसी प्रकार इंसान हैं जिस प्रकार भारतवासी ! हम उनसे युद्धभूमि में सोहा संगे सकिन इस तरह इकने-दुके धंधला का खून फरना बहादुरी नहीं है ।

[बिरोही सिकर बन्दूक नीची कर लेता है ।]

दूसरा प्रतिनिधि तो सम्राट हमारी प्रार्थना पर हमारा नेतृत्व करने को प्रस्तुत हैं ।

बहादुरशाह हमारे मित्रा भारत का सम्मान रखने के लिए, भारत को आजाद करने के लिए जो युद्ध सदा जाने-बासा है उससे मुगल सम्राट घलग कसे रह सपत्ता है ! भारत का प्रत्येक व्यक्ति हमारी सतान की भाति है पाहे वह किसी भी धर्म का मानन वासा हो । एक दिन का जब हम मुगल भी बिदेगी से सकिन अब ता हम भी भारत-वासी हैं । इसी निट्टी में से पैदा हुए हैं इसीमें आगिरी नीद गो जानेवाले हैं । किसी एक मुगल सम्राट को छाड़ कर घप सभीने हिंदू धीर मुसलमानों में भेद नहीं किया । सारा दग एन सुजासन में संगठित होकर उभरति कर,

यही उनकी इच्छा रही। प्रजा के प्रत्येक व्यक्ति को उत्थित करने का पूरा प्रयत्न मिले, हर शक्ति अपने-अपने धर्म को स्वतंत्रतापूर्वक पासे धीरे देश का धन देश में रहे यही हम लोगों ने चाहा। तभी तो आज भी इस निरक्षर बड़े सम्राट पर आप लोगों का प्रेम है। परिणाम क्या होगा यह तो खुदा ही जाने लेकिन बहादुरशाह 'अफ़र' का धार्मिकवाद आप लोगों के साथ है। हमें खेद इसी बात का है कि तुम लोगों ने अस्वबाजी की। यह तो होने ही वाला था, लेकिन इस तरह नहीं जिस तरह तुम लोगों ने किया, लेकिन जब जब ज्वाला जल ही उठी तो इसे बुझाया भी तो नहीं जा सकता।

दोनों सैनिकों के प्रतिनिधि } भारत-सम्राट बहादुरशाह अफ़र
 और मिर्जा फोयादा }
 की जय !

बहादुरशाह मेरे प्यारे दोस्तों। केवल जय घोसने से हमारा देश स्वतंत्र नहीं हो जाएगा। हमारी पहली आवश्यकता है सारे भारत में अंग्रेजों से लोहाभने की सख्त उत्पन्न करना दूसरी आवश्यकता है देश के प्रत्येक वर्ग को एकता के सूत्र में बांधने की तीसरी है हमारे योद्धाओं में अनुशासन का होना। तुम लोगों को पहले हमारी बातों से निराशा हुई होगी, लेकिन सब बात यह है कि हम दिल से चाहते हैं कि भारत भूमि अंग्रेजों की दासता से छुटकारा पाए। अंग्रेजों से ११ लाख रुपया वेंचन पाकर शराब के आग 11 लेना, मांस बेचना और गाने सुन सेना, धायरी करना

घौर मुशायरों से दिस बहला लेना, क्या इतना ही काम मुमल सम्राट का रह गया है ? नहीं, हम घून के घूट पीकर चुप थे । भारत इस स्थिति में ही नहीं था कि अंग्रेजों से मोहा से सके । हम पहले तैयारी पूरी कर लेना चाहते थे ।

मिर्जा कोषाग : किन्तु तयारी की प्रतीक्षा में उन्न ही समाप्त हो जाएगी ।

बहादुरशाह घाहसादे, तुम ठीक ही कहते हो । हम नदी के किनारे के पेड़ हैं, न जाने कब मौत की सहर आए और हमें बहा से जाए इसलिये अब हम प्रतीक्षा नहीं कर सकते लेकिन यह कहे बिना भी नहीं रह सकते कि मेरठ के भारतीय सैनिकों ने घीघठा करके हमारी योजना को घक्का पहुँचाया है । (सैनिकों के प्रतिनिधियों से) क्या तुम यह नहीं जानते थे कि ३१ मई से पहले अंग्रेजों के बिरोध घस्त्र नहीं उठाने हैं ? घाज है ११ मई । बीस दिन पहले ही तुम भाग उठ घड़े हुए ।

पहला प्रतिनिधि किन्तु तारीख को अंग्रेजों के बिरोध घस्त्र उठाने हैं यह तो हमें ज्ञात नहीं था हमसे तो प्रतीक्षा परने के लिये बहा गया था । हम अंग्रेज मिसन की राह देख रहे थे लेकिन क्या करें जहाँपनाह, हम अंग्रेज अफसरों से समय से पूब घस्त्र उठाने के लिये बाध्य कर दिया । उन्होंने हमारे १० सारियों को परेड के लिये बुलाकर उन्हें घागा दी कि मये परबी सगे कारगुस्ता पो दाँतों से काटें । बेबत २ सैनिकों में उनकी घागा मानी, घेष २२ घंटी बना

लिए गए। उन्हें बस-बस बप के कठोर कारावास का दंड दिया गया। इससे सभी भारतीय सैनिकों का हृदय भीतर ही भीतर सौंस उठा।

बहादुरशाह फिर भी तुम्हें शांत रखना था। सैनिकों में स्वाभिमान और जोश का होना बुरी बात नहीं है लेकिन बड़ी से बड़ी उच्छेजता में भी अनुशासन में रहना सैनिक का प्रथम कर्तव्य है। हम चाहते थे, हम क्या जिन सोर्मा ने, देश के जिन बड़े आदमियों ने धंप्रेजों को भारत से निकाल बाहर करने का बीड़ा उठाया है उन समने निश्चय किया था कि भारत में ३१ मई को धंप्रेजों के विरुद्ध युद्ध की ज्वाला भड़काई जाए। उन्हें भयभीत रखा करने का प्रयत्न न दिया जाए। एक दिन में ही धंप्रेजों की सत्ता को भारत से उखाड़ फेंका जाए। हमारी कुछ तैयारियां प्रचुरी ही रह गई हैं। तुम स्वयं सोचो, अगर सारे भारत में एक साथ धंप्रेजों के विरुद्ध शास्त्र उठाते तो परिणाम क्या होता? भारत में धंप्रेज सैनिकों और घफ्तारों की संख्या कुल २५००० के लगभग है और उनके भारतीय सैनिक हैं बाई लाख। हमारी एक हुकार ही धंप्रेजों का दम मुह धो ले जाती।

बुसरा प्रतिनिधि हम मानते हैं कि हमसे भूल हो गई। हमारे साथियों पर धंप्रेजी हुकूमत ने जो भयानक किया उसे भी हमने सह लिया था लेकिन अब हम बाजार में सर परने गए तो मेरठ की महिलाओं ने हमें ताने दिए। कहा—
‘तुम्हारे भाई धर्म के लिए जेल गए और तुम यहाँ मस्ती

से घूम रहे हो। बिककार है तुम्हारे मर्दानगी का, बिककार है तुम्हारे जीवन को, कायरों, तुम बुद्धिमां पहनकर पर धठो। हमें दो प्रपत्नी लसवारों, हम फिरंगियों से लोहा सेंगी।” स्त्रियों के लाना ने हमारा धन छीन लिया और हम अपने पुण्यार्थ का परिचय देने के लिए पागल हो उठे।

[हकीम एहसानुस्लाखी का प्रवेश]

हकीम एहसानुस्लाखी गजब हो गया जहाँपनाह ! बिरोहियों ने रेजीडेंट फ़ैज़र को मार डाला।

[मिर्जा कोयाश घट्टहास करता है।]

हकीम एहसानुस्लाखी हसते हो साहजादे शरीफ ! रेजीडेंट तो घायल पर बहुत कृपा रखते थे। वे तुम्हें बलीघहद बनाने के लिए तयार थे।

मिर्जा कोयाश हमपर कृपा रखते थे। यही तो भूस की मुगल राजवंश ने कि उसने प्रपत्नी बाहुओं पर मरोसा नहीं रखा और प्रपत्नी की कृपा को प्रपत्नी लाल बनाना चाहा। कोयाश अर फ़त्र में जाकर बलीघहद वगेगा लेकिन फ़त्र में सुस की मीद सोन के पहले अमक प्रपत्नी का मोन की गोश में सुनाकर जाएगा। सो सुनार की ता एक सुहार की। बहुत सताया है अमरों ने हमें। कहत हैं यघाट भारत के स्वामी नहीं, अमरों के नोकर हैं। सम्राट का उत्तराधिकारी कौन हो, इसकी ब्यबस्था गबनर बनरल करेगा ? भारत का स्वाभिमान प्रपत्नी तक सो रहा था और ये गीदब समझते थे हम घेर हैं।

हकीम एहसानुस्लाखी यह मैं क्या सुन रहा हूँ

धुनूर !

बहादुरसाह मह तैमूरी राजबवा का रक्त बोल रहा है, हकीम साहब !

हकीम एहसानुस्तासा तब क्या बहोपमाह भी

बहादुरसाह जी हां, हम भी भारत के सम्मान के लिए जान पर खेलने वालों के साथ हैं। (सैनिकों के प्रतिनिधियों से) बसो, हम अपने सैनिकों को दर्शन देकर धाड़ीवादि के शब्द कहेये। हमें उनसे बहुत कुछ कहना है। हम उनके बोध का धावर करते हैं लेकिन उन्हें होश में लाना भी हमारा कर्तव्य है। वे पागल होकर हर किसी अंग्रेज धीर ईसाई का खून न करते फिरें। ब्यबस्था में रहें। हम उनका प्रबंध करेंगे। बसो।

[सबका प्रस्थान]

[पट-परिवर्तन]

दूसरा दृश्य

[स्थान—वही प्रथम दृश्य बाबा। समय—रात्रि का प्रथम प्रहर। कक्ष की खजानट नवमग प्रथम दृश्य के समान ही है, विशेषता केवल इतनी है कि रात्रि होने के कारण कक्ष समाप्तों से सुप्रकाशित है। तिरपाई पर शराब की सुराही धीर पाश नहीं हैं। सम्राट बहादुरसाह कुछ बेचैनी से घूम रहे हैं। बिचने की संशुक्नुमा छौटी मेज पर कागज धीर बजाठ-कबजम रखे हैं। मिर्जा मुइज धीर मिर्जा कौबाघ खेच करते हैं।]

मिर्जा मुगल जहाँपनाह को मिर्जा मुगल को निराश प्रदा करता है ।

मिर्जा कोषाश मिर्जा कोषाश भी जहाँपनाह को को निराश प्रदा करता है ।

बहादुरशाह भाग्यो दाहबादो, हम सुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहे हैं । हम जानना चाहते हैं कि हमारे सैनिकों का क्या हाल है और दिल्ली नगर का वातावरण कैसा है ?

मिर्जा मुगल जहाँपनाह दिल्ली शहर से अग्रजों की प्रभुता का प्रत्येक बिन्दु हमारी सेना में मिटा डाला है ।

मिर्जा कोषाश दिल्ली में अग्रजों की सैनिक छावनी में भारतीय अवानों की जो ३०, ५४ और ७४ नवर की सेनाएं थीं वे भी हमारे झूठे के शीघ्र धा गई हैं । इन अनामों में मात्रे तीन हजार अवान हैं और इस तरह कुल मिलाकर अब हमारे पास मात्रे पांच हजार सैनिक हैं । दिल्ली नगर अब पूरी तरह हमारे अधिकार में है ।

बहादुरशाह और एक दिन वह या जब सारा भारत हमारे अधिकार में था । हमारी सेना की शक्ति साफ़ों तक पहुंचती थी । जब वह प्रस्थान करती तो घोड़ों की टापों से उठनेवासी धूमि से पटाएँ फिर जाती थीं । हमारी तोपों के गजन से शिगाएँ काँप उठती थीं । हमारी सेना का बापित्वा अमता था तो जान पड़ता था कि एक बड़ा नगर ही गतिमान है । आज हम इस याठ पर पूरे नहीं समते कि हमारे पास पांच हजार सैनिक हैं । जितना बड़ा शोभाय है हमारा !

निर्वाण कोयाल घीर एक दिन बहू भी था जब बादशाह समर-
 कंद से अपनी अकेली जान लेकर भागे थे । भावभयकता
 सेना की नहीं, अभेय जीवट की है । कई-कई दिनों उन्हें
 रोटी का टुकड़ा भी प्राप्त नहीं हुआ, अनेक रातें उन्होंने
 षोड़ की पीठ पर ही बिता दीं गस-गस तक हिम में वे
 पैदा ही बसे । साहसी वीर क पास सेनाए स्वयं ही
 एकत्र हो जाती हैं । पर्यंत उसके आगे मस्तक मुकाते
 और सामर उसके पांव धोते हैं ।

बाहुरशाह आबाध, कोयाल ! हम मुगल शाहजादों के मुह
 से ऐसी ही वीरतापूण वाणी सुनने के लिए तरसते
 रहें हैं । हमारे पूर्वजों की वीर भाषाएं हमारे रक्त में गरमी
 भरती हैं नहीं तो क्या हम इस बृद्धावस्था में कसम खाड़-
 कर तमवार पकड़ते ? लेकिन खेद तो इस बात का है
 कि अब हमारे हाथ कांपते हैं इनमें तमवार खसाने की
 शक्ति नहीं । सेना अपने प्राणों पर खेलने के लिए तभी
 तत्पर होती है जब वह बसती है कि उनका प्रभु भी हराबस
 में आकर तमवार खसा रहा है । शाहजादो अब तुम्हीं
 हमारे हाथ-पांव हो । रणभूमि में तुम्हें ही हमारा प्रति-
 निधित्व करना होगा । तुम्हारी दृढ़ता और वीरता से ही
 अंग्रेजों से लड़ा जा सकेगा । अगर तुम लोगों ने दुर्बलता
 दिखाई तो चाहे भारत-भर के योद्धा हमारे भडे क भीचे
 आ जाएं, हम यशु पर विजय न पा सकेंगे और मुगल
 साम्राज्य का टिमटिमाता हुआ शीपक सत्ता के लिए बुभ
 जाएगा ।

मिर्जा मुगल अहांपनाह हमें आशीर्वाद दें कि हम आपकी आशाओं को पूरा कर सकें ।

बहादुरशाह हम तुदा से दुखा मागग कि तुम लोग परोदा में अरे उठगे । परिस्थितियां कठिन हैं । अंग्रेज इवाहीम सोधी नहीं है जिससे एक ही मुठ में दिल्ली क पठान साम्राज्य का अन्तिम निर्णय हो गया । हमें एक पदु शासनयुद्ध और बतुर बीम से युद्ध करना है । तुदा करे तुम लोग कुछ आदु कर दिखानो लेकिन इतिहास दूसरी ही बात कहता है । हम तुम्हारे हृदय में निराशा नहीं भरना चाहते अकिंत सब बात यह है कि हमारा हृदय आशक्ति है ।

मिर्जा कोयाश किसलिए अहांपनाह ?

बहादुरशाह इसलिए कि तुम लोग सिंह की सम्मान होकर मो पासतू कृते की अिन्दगी बितात रहे हो । मुगलों में संकटों से सप्राप्त करने का आहस आंधियों और तुफानों में निमय पांच यदान का अय औरंगजेब क बाद फिरीमें पाया ही नहीं गया । इस सालकिसे न मुगल सम्मान और शक्ति का अरमोत्वय भी देता है और अरम पठन भी । इसी राजमहल मे नादिरशाह ने सम्राट मोहम्मदशाह के मम्मूत मुगल बेगमात और आहजादियों को साधारण नवकियों की भाति नशादर अपनी बबरता का ममोरजन किया है । महल को अठे उठ अनय टूटकर उठपर नहीं गिरी । इन दीवारों की एक इट भी अपनी अगह से नहीं हिमी ।

मिर्जा कोयाश नादिरशाह की बात को जाने दीजिए, जहा-पनाह, साधारण रहेले सरदार गुलाम कादिर ने जो हमारे टुकड़ों पर पना वा घाही हरम के साथ बही बर्ताव किया जो नादिरशाह ने किया था । इतना ही नहीं किया बल्कि सम्राट शाह आलम की आँखें निकलवा सी घोर उन्हें यतों से पीटा । इन बातों को याद करके आँखों में खून उतर आता है ।

बहादुरशाह घोर फिर भी उस समय किसी मुगल का खून इसका बदला लेने के लिए नहीं उबला । न प्रबल क मबाव न बंगाल के नबाव, न हैदराबाद के निजाम जो म्यायत मुगल साम्राज्य के सूबेदारों से अधिक कुछ नहीं हैं अपने स्वामी के अपमान का बदला लेने के लिए ब्याकुल नहीं हुए । जो मराठे कमी मुगलों के दात्र थे उन्हींमें से एक महादजी सिंधिया ने सम्राट शाह आलम की रक्षा को घोर गुलाम कादिर को मौत के घाट उतारकर उसे अपनी करनी का फल बचाया । भारत के एक हिंदू के दिल में मुगल सम्राट के सम्मान पर आंध्र आने पर वह पैदा हो सकता है मर्दान जिनका खून का रिश्ता है, धर्म का नाता है वे निर्संजक बने बैठे रहे । तमी सम्राट शाह आलम ने महादजी सिंधिया के सम्बन्ध में कहा था—
महादजी सिंधिया फ़रख़ि ज़िगर बन्द प्रस्त । महादजी सिंधिया मेरा बेटा मेरे ज़िगर का टुकड़ा है ।”

मिर्जा मुगल प्राय सभी मुगल सम्राटों ने हिन्दुओं को भी तो अपने ज़िगर का टुकड़ा समझा है ।

महाबुरशाह लेकिन ऐसा करके हमने हिन्दुओं पर कोई दृषा नहीं की। यह तो हमारा कर्तव्य था। कोई भी राज्य यदि वह अपनी प्रजा के विभिन्न वर्गों में समों एव जातियों में भेद करता है, स्थिर नहीं रह सकता। सम्राट औरंगजेब इस सत्य को नहीं जान पाए और उन्होंने मुगल साम्राज्य के विध्वंस की नींव डाल दी। लेकिन मैं यह बात नहीं कह रहा था। मेरे कहने का तात्पर्य है कि हम अपने सेनापतियों और सूबेदारों की स्वाभिमता और बेबफाई का क्यों दोष दें जब हम स्वयं निकम्मे घामसी और बिसासी हो गए। साहजादों में तुममें से किमी एक को दोष नहीं देता लेकिन सत्य बात कहे बिना भी नहीं रह सकता कि तुम सौम्य पुरुषवारी, ठिकार चलन-संचालन आदि पौख्यपूर्ण कार्यों को त्यागकर घटेरबाजी, दरार और नाच-भाने में अपने जीवन को गर्क रखते रहे हो। आज जब भ्रामक हमारे सामने भयानक युद्ध था गया है तब तुम लोग क्या करोगे? सेना चाहेगी राजवंश का नेतृत्व। हम युद्ध हैं और साहजादे सभी युद्ध-संचालन में अनुभवहीन। यही जिंठा मेरे मस्तिष्क को परेशान कर रही है।

मिर्जा कोयाश आपकी परेशानी को हम समझते हैं जहाँ पमाह ! लेकिन मैं कहूँगा कि यदि हमारे दिल में मुगल वंश के सम्मान के लिए दर्द है और अपने भारत देश से प्रेम है तो सुदा हमें युद्ध करने की बुद्धि और साहस भी देगा। परिस्थितियों ने हम जैसा बनाया बन गए। इस में न आपका अपराध है न हमारा। हमारी बेबसो -

हमारी आकांक्षाओं के पंख फाट दिए। हमारे पास समय काटने के लिए भी कोई कार्य न था—शाही दिमाग सैतान का घर—हमें पतन के पथ पर जाना ही था। फिर भी हम बाबर और अकबर जैसे वीर पुरुषों की संतान हैं। हम सेनाओं का संचालन करेंगे—अंग्रेजों से मोहा लेंगे। हो सकता है हमसे भूसे हों, लेकिन हम अपने मस्तक पर कायरता का कसक नहीं समने देंगे।

मिर्जा मुगल राजपुरुषों की आधीतता में युद्ध करने का भारतीय सैनिकों का स्वभाव भी यम मया है। इसलिए भी हमें युद्धों में सेनापतित्व स्वीकार करना आवश्यक है, जहाँ पनाह ! यह ठीक है कि मुगल साम्राज्य को प्रजा का समर्पण और सहयोग प्राप्त था फिर भी प्रत्येक राज्य की सुरक्षा सबसे सेना के द्वारा ही रह सकती है और मुगल साम्राज्य तो था ही सैनिक शासन। मुगल सम्राटों का मोहा समो तक माना जा सकता था जब तक वे रणभूमि में सेना का नेतृत्व करने में समर्थ थे। सम्राट औरंगजेब के पश्चात् प्रायः सभी सम्राटों ने सेनापति सेनापतियों के हाथों में सौंपकर स्वयं रंगरेसियों में निमग्न रहना पसन्द किया। परिणाम यह हुआ कि एक-एक कर हमारे सारे सूबे स्वतंत्र हो गए। सेनापति अक्षिवाण हो गए और सम्राट अक्षिहीन। बहादुरशाह और इस विभ्रंशसता की स्थिति में अंग्रेजों को अपने पक्षियों का जाल पुराने का अकसर प्राप्त हुआ। देश को मराठा से कुछ घाणा भी लेकिन उनका भी मुगलों जैसा ही हास हुआ। छत्रपति ने पेशवा को शासन की

वागडोर पकड़ा दी। पेशवाओं ने विभिन्न सरदारों के अधीन बड़ी-बड़ी सेनाएं रसीं और उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में अपना प्रभाव स्थापित करने का अवसर दिया। बाजीराव प्रथम स्वयं कुशास सेनापति था। अपने अधीन प्रबल सेना रखता था। उसके सामन सभी सरदार भीगी बिस्सी बने रहे लेकिन जब पेशवाओं ने रणभूमि छोड़कर राज महल की गद्दी सम्हाली तो प्रत्येक मराठा सरदार ने अपनी सिरिपड़ी घसग घसानो प्रारम्भ कर दी। जिस हास पर ये बठे ये उसीके टुकड़े करन सगे। किसीन यह नहीं दखा कि एक बरर उमकी रोटी छीनकर ला जाने की ताक में बंठा है। एक छोटी-सी वादल की टुकड़ी भारत के प्राकार में घाई, किसीन समझा कि यह कितना भयकर रूप धारण कर लेगी ! ये ब्यापारी क बेग में घाने वाले धंधल घाज दिस्सी के सभ्राट को भी अपना नोक समझते हैं।

निर्डा मुसल किन्तु जहाँपनाह, मुसलों का बिगत मोरव फिर मोट घाने को है। वसंत क पदधात् पतम्ह, पतम्ह के पदधात् वसंत, दिन के बाद रात और रात के बाद दिन, यह तो प्रकृति का नियम है। पाड़े ही दिनों में भारत ने धप्रजों का जो रूप देला उममे प्रत्येक मारनवासी का घन्तकरण इन विदेशियों के प्रति घृणा से भर गया है। मेरठ से घाने बास सनिपों का दिस्सी के नागरिकों ने, जिन में हिन्दू भी थे, मुसलमान भी, जिस प्रकार स्वागत किया उससे जान पड़ता है भारत में एक नया ही रूप घानेवाला

है। सारा दिस्मी नगर एक नये उत्साह से भर गया है। घर घर भी के बिये जसाए जा रहे हैं।

बहादुरशाह यह तो ठीक है, घरद्वारदार ! लेकिन इतने से ही हमें प्रसन्न नहीं हो जाना चाहिए। अंग्रेज पुप नहीं बैठेंगे। अंग्रेजों में जाहे कितने ही दुर्गुम हों लेकिन एक विवेकता तो है ही उनमें कि वे अपने देश के हित के लिए अपने प्राण ग्योछावर करने के लिए सदा प्रस्तुत रहते हैं। हम भारतवासी अपने व्यक्तिगत तात्कालिक हित के लिए अपने देश के भविष्य को विषय के हित को भी हानि पहुंचाने से नहीं चूकते ऐसा ही हमारा इतिहास बताता है, लेकिन अंग्रेज एकजान होकर अपने देश के हितों की रक्षा करते हैं। इसलिए मैं कहता हू कि यह भी जान से भारत पर अपना अधिकार रखने का यत्न करेंगे हमें उनसे और संघर्ष करना पड़ेगा। हमें सबसे पहले पर्याप्त मात्रा में छात्रासन एकत्र करने होंगे। एक सम्बन्धी अवधि तक चलनेवाले युद्ध के लिए पर्याप्त धन भी हमें चाहिए।

दिली कोयास बहादुरशाह इस सम्यन्ध में बिस्ता करने की आवश्यकता नहीं है। हमारे सैनिकों ने अंग्रेजों का दिस्मी में स्थित बैंक सूट लिया है और उसका रुपया हमारे कोष में जमा करा दिया है। इसके बाद यहाँ अंग्रेजों का जो छात्रागार है उसपर उन्होंने छात्रमण किया। इसमें भी लाख कारतूस दस हजार बंदूकें और विस्फोटक पदार्थों का बिराट भंडार था।

बहादुरशाह हाँ, हमने दास्तागार के अग्रज अधिकारी बिलोधी को आज्ञा भेजी थी कि वह दास्तागार हमारे हवाले कर दे। मिर्जा मुग़ल सक्रिय उसने आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया। इस स्थिति में हमें दास्तागार पर आक्रमण करना पड़ा। हमारे सैनिकों ने दास्तागार को घेर लिया। बिलोधी ने देखा कि दास्तागार की रक्षा सम्भव नहीं है तो उसने अपने सहायक स्कली को दास्तागार में प्रांगण सगा देने की आज्ञा दी।

बहादुरशाह हाँ हमने उस भयकर विस्फोट की आवाज़ सुनी थी और आकाश को छूनेवासी सपटा की देखा था।

मिर्जा कोयाश उन सपटों में विभावी और स्कली तथा ६ अन्य अग्रज सैनिक जलकर मर गये किन्तु साथ ही हमारे भी २५ सैनिकों एम तीन सौ नागरिकों की जानें गईं। घासपास के सैकड़ों मकान ध्वस्त हुए।

बहादुरशाह और इतनी क्षति उठाने के बाद भी हमारे हाथ क्या लगा ?

मिर्जा मुग़ल विस्फोट के पहले ही हमारे सैनिक दास्तागार से बाधे से अधिक सामग्री उठा सान न सकत हुए थे। हमने अत्यन्त सतर्कता को धार धार बंदूकें द दीं।

बहादुरशाह : किन्तु यह युद्ध-सामग्री हमें कितनी महंगा पड़ी। तुम ११ अग्रजों न अपनी जान पर खेलकर हमारे इतने व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया। दास्तागार की अधिकारी सामग्री हमारे हाथ नहीं पड़ने दी। कुछ सीखा पाहता दो, इन अग्रजों से। तुम अनुमान लगा सकते हो

कि हमें कितनी कठिन मज्दुर पार करनी है ।

मिर्जा कोयास हमारे सैनिकों का शत्रु तो उनका जोष ही बन गया, जहाँपनाह ! उन्हें आशा नहीं थी कि दरनागार सौपने की अपेक्षा अपने प्राणों पर बेसकर उसमें धाम लगा देना अंग्रेज अधिकारी पसंद करेंगे । हमारे सैनिक भी किसी भी मूसल पर दरनों पर अधिकार कर लेने पर कटियद दे । व निर्भय बढ़ते ही गए ।

जहापुरसाह अपने देश के हित के लिए किस तरह प्राण बलि देते हैं यह हमें अंग्रेजों से सीखना होगा ।

मिर्जा कोयास किन्तु देशभक्ति में हमारे सभी अंग्रेजों से हीन सिद्ध हुए हैं, कम से कम इस अवसर पर, यह मैं नहीं मानता । हमारे सैनिकों में अभी तक उत्साह की कमी नहीं आई है बल्कि अपने छात्रियों के समिदान ने उन्हें अंग्रेजों के प्रति अविश्वस्य रोष से भर दिया है । विस्ती के अनेक नागरिक हमारे मंडे के नीचे अंग्रेजों से मुक्त करने के लिए हमारे पास आए हैं । नगर के धनी-मानी व्यक्ति स्वेच्छा से हमें धन की सहायता देने को प्रस्तुत हुए हैं । अंग्रेजों के प्रति प्रत्येक भारतीय रोष और घृणा से पागल हो उठा है । अंग्रेज जहाँ भी उनके हाथ लगता है, चाहे वह स्त्री हो, चाहे बच्चा, उसे बेरही से मार डाला जाता है ।

जहापुरसाह और तुम इस बात पर प्रसन्न हो, शाहजादे ! मेरा तो सर यह सुनकर सज्जा से झुका भा रहा है । बीर पुरुष मुक्त के मैदान में अपना पौरुष प्रकट करते हैं निरीह, निदरस्व स्त्री-मुस्वी का बच नहीं करते । हम मोझा है,

कसाई नहीं। बिप्लव का धर्म सामूहिक उम्माद नहीं है। हमें बिप्लव की धापी में भी विवेक के दीपक को बुझने नहीं देना चाहिए। नगर में हमारे नाम से एसान कराओ कि निरदस्त्र और धरदित्त अंग्रेजों की जानें न ली जाएं। प्रजा को कानून अपने हाथ में लेने का अधिकार नहीं। अंग्रेज स्त्री-पुरुष या बच्चा जहाँ भी प्राप्त हो उस सास किसे में पहुँचा लिया जाए जहाँ उन्हें मुझबदी के रूप में रखा जाएगा।

मिर्जा मुहम्मद जहाँपनाह की आज्ञा का पालन किया जाएगा। अहापुरसाह हूँ, हमारे आदेश का पालन होना ही चाहिए। अब यहाँ हम एक घोषणा सिखाते हैं उसे भारत के सभी राजाओं और रईसों के पास भेजना होगा।

[मिर्जा मुहम्मद बैठकर कागज-कमल उदघटा है।]

मिर्जा मुहम्मद सिखाए, जहाँपनाह !

अहापुरसाह सिखो भारत के सभी राजाओं और रईसों को जात हो कि खुदाबद तासा ने तुम्हें ऊँचा पद, राज्य वभव और प्रभुता इसलिए दी है कि तुम उन लोगों का विनाश करो जो तुम्हारे देग को दास बनाए हुए हैं और देशवासियों का धन सूट रहे हैं, और वम भी छीन रहे हैं। अंग्रेज न केवल भारत पर अपना राज कायम रखना चाहते हैं बल्कि यहाँ के सारे धर्मों को मिटाकर ईसाई धर्म फैलाना चाहते हैं। अंग्रेजी शासन में पाश्चिमा से हमारे धर्मों के विरुद्ध पुस्तकें लिखवाकर जनसाधारण में बटवाई हैं। भारतीयों को ऊँची मौकरियों का सोम देकर अपना धर्म

छोड़ने का प्रलोभन धंधेज देते रहे हैं। और देते रहते हैं। धंधेजों ने विपवाओं का विवाह चपित ठहराने का कानून पास किया, हिन्दुओं की शास्त्रसम्मत सती प्रथा का बंद किया।

मिर्जा कोयास कामा कीबिए, जहाँपनाह निर्दयतापूर्ण सती-प्रथा को बंद करना या विपवाओं को विवाह करने की अनुमति देना क्या सम्मुख हिन्दू धर्म के विरुद्ध है ?

बहादुरशाह इस सम्बन्ध में एक सम्मति नहीं हो सकती कोयास ! सम्राट अफ़्ग़र ने भी सती-प्रथा को बंद किया था लेकिन इस समय तो हम भारतीय जनता को धंधेजों के विरुद्ध भड़काना है। राजनीति की बातें भ्राम भोग कम समझते हैं इसलिए हमें वे बातें सामने सामी हैं जिनसे हम बता सकें कि इस देश की परंपराओं के विरुद्ध धंधेज क्या कर रहे हैं। सैर, तुम लिखो, मिर्जा मुयस !

मिर्जा मुयस लिखवाए जहाँपनाह !

बहादुरशाह : उन्होंने यह भाशा प्रसारित की कि गोद भी हुई संतान की उत्तराधिकारी स्वीकार नहीं किया जाएगा। इस भाशा के अनुसार उन्होंने पेशवा नाना साहय की पेशवा जस्ट की भांसा का राज छीना और भी कई छोटे-बड़े राज जस्ट किए। नामपुर का मराठा राज छीन लिया और रानियों को अपमानित कर उनके जेवर तक छीन लिए। भवभ का राज छीना और बेमनाठ को सूटा। उन्होंने घाटे में हड्डियाँ मिलाकर पीनिकों को उनकी रोटियाँ लिमाई, भ्राम बाजार में भी बहु भाटा बिकवाया, बाह्यणों

एवं अन्य उच्च जाति के सनिकों को गाय धीर सुभर को
 यहीं लयी कारतूसें मुह से काटने के लिए बाध्य किया ।
 इतना ही नहीं, धार्मिक दृष्टि से भी उन्होंने भारत को
 बहुत हानि पहुँचाई । उन्होंने भारत को घूसकर इंग्लैंड
 को मातामास किया । भारत का धरबों स्वया वे सूट ले
 गए । यहाँ का व्यापार-व्यवसाय मष्ट कर दिया ताकि
 इंग्लैंड का भास भारत में बिक सके ।

मिर्जा मुघल धीर किसानों को तो घंघरों ने दर-दर का मितारो
 बना दिया, इस संबंध में भी कुछ होना चाहिए ।

बहादुरशाह निस्सबेह ! सिसो किसानों, जमींदारों धीर
 तास्नुकेदारों को भी उन्होंने नष्ट किया । किसान हमारे
 राज में धपनी-धपनी जमीन का मासिक पा, धन घंघर
 सारी जमीन के स्वामी बन गए हैं, किसान केवल मजदूरी
 पर काम करनेवाला रह गया है । उसपर मनमाना सगान
 सगा दिया है । उनकी पंचायतें समाप्त कर दी गई हैं ।
 हम इस छोटे-से धोपणा-धन में घंघरों के धत्याचार
 धमाय धीर दुष्टतापूज मनमूर्खों की तस्बीर नहीं खींच
 सकते हैं । धाप सोमों ने स्वय धपनी धाँखों से देखा है ।
 दसलिए हमने घंघरों को भारत से निकाल बाहर करने
 का निरूपय किया है । हमने यह कदम धिर से मुगल
 साम्राज्य की स्थापना करने के लिए नहीं उठाया । एक
 धार घंघर भारत से निकल जाएं उसके बाद यहाँ ऐसे
 राज की स्थापना की जाए जो यहाँ के हर धिरके की राय
 स काम करे । धायको यह भी शात है कि घंघर भारत

में हम लोगों को मदद से ही टिके हुए हैं। अगर आप सब हमारा साथ देंगे तो अंग्रेज भारत में एक दिन भी नहीं रह सकेंगे। आप इस संघाम में हमारी क्या सहायता करेंगे यह निश्चित रूप हमें भिजें। मुगल साम्राज्य से आपके जो संबंध रहे हैं उनके नाम पर एवं अपने देश और धर्म के नाम पर मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप तुरन्त अंग्रेजों के बिकट मुँह छेड़ दें। आपका, महादुरसाह 'अकबर'।

मिर्जा कोषाघ क्या सब राजा और रईस हमारा साथ देंगे ?

महादुरसाह इसे कौन जानता है, साहजबादे ! इतना अवश्य है कि अंग्रेजों से संतुष्ट कोई नहीं है। सभी अनुभव करते हैं कि अंग्रेजों की अपेक्षा मुगल राज्य कहीं अच्छा था। हिन्दू, मुसलमान एवं सभी अन्य धर्म के माननेवाले पूरी स्वाधीनता और सम्मान से भारत में रहते थे। बाहर से आए हुए तुरानी ईरानी और अफगान और भारत के पूर्व निवासी राजपूत भादि सभी इसी देश को अपना मातृभूमी सरावरी के अधिकारों के साथ मही रह रहे थे। हिमालय से लेकर हिन्दमहासागर तक यह देश सुख की सांस लेता था। कला साहित्य और व्यवसाय में संसार का कोई देश भारत का मुकाबला नहीं करता था। संसार घर का सोना सिध धिधकर भारत में एकत्र हो रहा था। भारत के इसी स्वर्ण न अंग्रेजों को भारत में लींचा और बेकते-बेकते उन्हें भारत को कंगाल और अपाहिज बना दिया। हम लोग परस्पर एक-दूसरे से ईर्ष्या करते रहे, झड़ते रहे और अंग्रेज अपने पाँव फँसाते गए। अब भारत को मुक्ति पाई

है। सुदा ने बाहा तो भारत का स्वर्णकाल फिर सोंट
 जाएगा।

मिर्जा कीयाश सकिन उसके लिए हमें बहुत रक्तदान करना
 पड़ेगा।

बहादुरशाह हां, धर्मी तो प्रारम्भ है दाहजादे ! स्वतन्त्रता का
 पोष रक्त के सागर में से ही प्राता है। भारत को वसिदान
 तो देने होये। क्या पता हमें धीर मुम्हें भी अपने सर बढ़ाने
 पड़ें। हम इसके लिए प्रस्तुत हो जाना चाहिए।

मिर्जा मुगल कुछ धीर सिखना है जहांपनाह !

बहादुरशाह हां, धर्मी तो हमने केवल राजाओं और रईसों के
 नाम अपना घोषणा-मंत्र लिखाया है। एक घोषणा-मंत्र
 भारत की प्रजा के नाम भी हम लिखाना चाहते हैं। मान
 लो राजाओं धीर रईसों में से अधिकांश हमारा साथ न
 दें फिर भी हमें यह सपना तो सड़ना ही है धीर हमारी
 वास्तविक ताकत भारत का प्रजा वग है। राजा रईसों
 को अप्रेज मिटा भी देते तो भारत का कुछ नहीं बिमड़ता।
 अंग्रेजी दासन की असम मार तो यहाँ की प्रजा पर पड़ी
 है जिसे पूरी तरह बर्बाद किया गया है। भारत की पीड़ित
 प्रजा पर हमारा प्राथना का जो प्रभाव पड़गा वह मुकुट-
 धारियों पर नहीं।

मिर्जा मुगल तो सिखवादे जहांपनाह !

बहादुरशाह सिखो—हिंदुस्तान के हिंदु प्रा मुसलमानो एक
 भाइयो ! आपको मालूम होना चाहिए कि अंग्रेजों ने भारत
 पर जो प्रत्यापार किए हैं उनसे दुखी होकर हमने उनक

विद्वत्संघाम खेड़ दिया है। बुदा ने जितनी बरकतें मनुष्य को प्रदान की हैं उनमें सबसे अधिक मूस्यवान है स्वतंत्रता, वही निर्मम अंग्रेजों ने हमसे छीन ली है। क्या हम बुदा की इस बरकत से सदा ही वंचित रहेंगे ? नहीं, नहीं अंग्रेजों के पापों का बड़ा मर चुका है। क्या तुम अब भी छात रहोगे ? बुदा यह नहीं चाहता कि तुम सोग घाँस रहो। तुम सोगों के शीर्ष और बुदा के प्राचीर्ष से अंग्रेजों की पूण पराजय होगी। हम तुम सबको अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े जानेवासे धर्मयुद्ध में सम्मिलित होने का निमन्त्रण देते हैं। हमारी सेना में छोटे और बड़े का कोई अन्तर नहीं होया। अपनी जन्मभूमि की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए तब बार उठाना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है और इसका उसे जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त है। भारत का प्रत्येक वासी, चाहे किसी धर्म को माननेवाला हो देसवासी के नाते परस्पर भाई भाई हैं। हमें आपस के सारे भेद-भाव मुनाकर अपने पानु अंग्रेजों को भारत से निकालने के लिए कंधे से कंबा मिलाकर रणभूमि में फदम बढ़ाना चाहिए। भारत की स्वाधीनता का इच्छुक बहादुरशाह 'अफ़र'। क्यों साह जादो, हमारा यह घोषणा-पत्र ठीक है न ?

मिर्जा कोषाज्ज क्यों नहीं, जहांपनाह ! जिस्ने इलाही की सेवनी तसबार से भी तेज है।

बहादुरशाह : जब हमारी मुजायों में तसबार पकड़ने का बल था तब भारत सो रहा था। काय घाज से कुछ बर्ष पहले अंग्रेजों के विरुद्ध धर्मयुद्ध छिड़ा होता ! तब हम सेमुरी

तलवार का पानी पिनाते अंग्रेजों को । अब तो तुम लाग ही हमारी भुजाएं हो ।

[मिर्जा अय्यूबखर का गपे में बहुत प्रवेश । उसके कदम ठीक से नहीं पड़ते और उबास भी बढ़त जाती है । वह हाथ में लंबी तलवार लिए है ।]

मिर्जा अय्यूबखर हमने मार डाला उस । वह हमें जान से बचावा प्यार करती थी सकिन वह अंग्रेज थी । हम एक भी अंग्रेज को पीवित नहीं छोड़ेंगे । नहीं छोड़ेंगे । जिस तरह मृर्गाबियों का निफार किया जाता है उस तरह हम अंग्रेजों का निफार करेंगे और उसका वाद हम दिल्ली के तख्त पर बैठेंगे । हाँ, हम तख्त पर बैठेंगे । जो हमारे गस्ते में आएगा उसे मौत के घाट उतार देंगे ।

[मिर्जा अय्यूबखर अपने को समझाने के कारण फिर पड़ता है । मिर्जा मुहम्मद अपने स्थान से उठकर उसे समझाता है ।]

जहाँपुरगाह तुम दिल्ली के तख्त पर बैठेंगे जो अपने पांवों पर खड़े नहीं हो सकते ?

[मिर्जा अय्यूबखर कोपित करने बैठता है ।]

मिर्जा अय्यूबखर : फौज ? जहाँपुरगाह ! हाँ, हाँ, जहाँपुरगाह ही तो है ? क्या बहा या हमन ? कुछ कहा तो था । पर कुछ भी बहा तो हम उनके लिए माफी मांगते हैं । हम आपको नहीं मारेंगे । आप जब तक जीवित हैं तख्त के स्वामी हैं, लेकिन आपके पास हम अर्थात्क को बचावाह नहीं करने देंगे । जहाँपुरगाह यदि आप चाहते हैं कि आपका बचाव तख्त के लिए माइयाँ में सशाम न हो तो आप हम

सब माइनों का कत्तस कर दीजिए या जहर देकर मरवा डालिए जिस तरह मिर्जा फ़सरू को मरवा दिया ।

मिर्जा कोयास मिर्जा प्रबूबकर ! होश में बाठ करो । घाली-जाह पर आरोप लगाते हुए क्षम नहीं घाली तुम्हें ?

मिर्जा प्रबूबकर (बहादुरशाह 'जङ्गर' के पाब पकड़कर) मेरे अम्मे अम्मा सब बताइए, क्या मिर्जा फ़सरू को जहर देन में आपका हाथ नहीं है ? नहीं होगा । मान लेता हूँ नहीं होगा, लेकिन आपको यह तो मासूम है कि उन्हें किसने जहर दिया फिर आपने अपराधी को प्राणबद्ध क्यों नहीं दिया ? इसलिए कि वह घोरत है आप उसे प्यार करते हैं ! लेकिन न्याय अम्मा होता है, निमम होता है सार नातों रिस्तों से उमर होता है । हमको भी एक घोरत प्यार करती थी लेकिन आज हमने उसे मार डाला क्योंकि वह अंग्रेज थी । क्या आप अपनी संतान की बेगिन घोरत को नहीं मार सकते ?

बहादुरशाह साहजादे मिर्जा प्रबूबकर होश में घामो । दिल्ली के सच्चाट की बात जाने दो, लेकिन अपने अम्मा का तो सम्मान करो । अगर आज के बाद सराब पीकर हमारे सामने आएँ तो हम तुम्हें सजा देंगे ।

[मिर्जा प्रबूबकर यत्न करके कड़ा होता है ।]

मिर्जा प्रबूबकर सजा ! आप अपने बेटे से प्यार न करे, इससे बड़ी सजा बेटे के लिए क्या हो सकती है ? माना कि हम अपरिमित सराब पीते हैं लेकिन हमारे लागदान में किसने सराब नहीं पी ? उन्हें बुरा कोई नहीं कहता क्योंकि वे

उस समय धरती पर घाए थे जब मुगल साम्राज्य का
सितारा बुसंद था। आज मुगल साम्राज्य का सूरज अस्ता-
चल में बिसीन हो गया है। एक-दो किरनें ही घेप हैं। वह
भी अम्बकार में बिसीन हो जाएंगी !

मिर्जा मुगल नहीं भाई अबूबकर ! मुगल साम्राज्य फिर बुसंद
होगा, अगर हम लोग अपने होश में रह सकें। अगर कुछ
समझने की शक्ति तुम्हारे दिमाग में घेप हो तो समझने
का यत्न करो भाई ! यह पारिवारिक झगड़े सड़ करने
का समय नहीं है। अंग्रेजों के साथ हमारा सपना छिड़
गया है। हम सबका पहला कर्तव्य अंग्रेजों से मोहा
समा है।

मिर्जा अबूबकर ठीक तो है। मसिका-ए-हिन्दुस्तान ने जहर
की प्यासी पीकर मरने से तो अंग्रेजों से सड़कर उनकी
तोप के गोले का निशाना बनना अधिक सम्मान की बात
है। हमने बाबरशाह के वंश में जन्म लिया है। मत हा
हमारे रक्त में इतनी गरार मिस गई है कि हमारा
वास्तविक रक्त उसमें दास में नमक के बराबर रह गया
है लेकिन वह अपना रंग साएगा। हम सबके, जहाँपनाह
और मरेगे। अंग्रेज रहेंगे या जाएँ, कौन जान, लेकिन
इतनी बात साफ है कि मिर्जा जवाबर के लिए रास्ता
साफ हो जाएगा।

बहादुरशाह (अबूबकर के सर पर हाथ रखकर) मेरे अन्धे बेटे !
अपने बेबस बाप को धमा करो। तुम सभी बेटे हमारे
बमज से टुकड़े हो। सर पर राजमुकुट रखने के लिए

तुम परस्पर क्यों भागड़ते हो ? मुगल साम्राज्य घाब तो एक भाग है। अंग्रेज उसे खूब गहरा गाड़ देने को प्रस्तुत हैं। अगर तुममें एकता हो तो इसमें जान डालो। लेकिन याद रखो कि इसमें जान पड़ जाने पर भी यह किसीकी व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं रहेगा। अब तो प्रजा ही इसकी स्वामिनी बनेगी वह जिसके सर पर ताज रखना चाहेगी वही तख्त पर बैठेगा और उसे प्रजा की आज्ञा से चसना होगा।

मिर्जा कोषाघा बर्हापनाह, आप महान हैं। आप अर्धे सम्राट हैं, इसका परिचय तो सब संसार पाता जब वास्तव में आपके पास साम्राज्य होता, लेकिन आप उदार और महान पुरुष हैं। इसका परिचय तो आज भी संसार पा सकता है।

यहापुरखाह नहीं चाहता। हमें महान पुरुष समझना एक अम है। हममें से सब कुर्वंलताएं हैं जो सम्राट औरंगजेब के बाद की पीढ़ी में हमारे वंश में घर किए रहीं। लेकिन हम करते क्या? हमारी भुजाएं कमी-कमी फड़कती थीं कुछ करने के लिए लेकिन हम सिवा आत्महत्या के कुछ भी करने की स्थिति में नहीं थे। तब हमारे दिल का दर्द सायरी बनकर बाहर निफल पड़ा, हमारी येबसी ने हमें पाराव का दास बनाया हमारी निराशा ने हमें घाससी और बिसासी बना दिया। हमसे सबसे बड़ी भूल हुई कि हमने बुढ़ापे में बिबाह किया। लेकिन—

[यहापुरखाह 'अधर' की घालों से धानू पा जाते हैं। मिर्जा धबूबकर नेब से इमान निकालकर बनकी घालें पीछता है।]

मिर्जा प्रबुद्धकर आपके ये बहुमूल्य घांसू धनमोस सम्पत्ति है हमारे लिए । मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि यह प्यार पाने के लिए भटकता है । ठीक जमह अगर प्यार नहीं पाता तो वह गमत जगह जाता है । वह गनी नासियों का पानी पीता है । आपके सभी साहसार्थों का यही हास है । धव्याजान, आपके घांसुधों ने मेरा नछा हिरन कर दिया है । अब आप धाराम कीजिए, मैं तो जाकर अभी और धराब वियुगा नाब देखूमा गाना सुनुमा ।

मिर्जा मुपस फिर वही धराब, वही नाब-गाने की तसब ! तुम्हें ऐसी बात कहत धर्म नहीं घानी प्रबुद्धकर ! बहुत बेहया हो !

मिर्जा प्रबुद्धकर बराक बेहया हू लेकिन बेईमान नहीं । जो बातें अब हमारा स्वभाव बन गई हैं और जिन्हें हम छोड नहीं सकते उनको छिपाने से लाभ क्या ? आप सोय राजनीति की बड़ी बातें सोचिए, बंदा तो अपनी इबाततगाह में जाता है । शुदा हाकिम ससामालेकुम !

[मिर्जा प्रबुद्धकर का प्रत्याप]

बहादुरसाह बेधारा प्रबुद्धकर !

मिर्जा मुपस कुछ और धात्रा है हमारे लिए ?

बहादुरसाह काम तो बहुत है, माहजाने ! किन्तु बड़ा उत्तर-दायित्व हम लोगों ने अपने ऊपर स लिया है । भारत के एक कोने स हमारे कोने तब जो धाग भटकनेवाली है, उसपर नियंत्रण रक्षना हमारे लिए धावश्यक है लेकिन

धमी तो विल्सी की गतिविधि को व्यवस्थापूर्वक बसाने के लिए भी उपयुक्त व्यक्ति हमारे पास नहीं हैं। धमी नया-नया बोध है, इसलिए तुम दोनों इतनी दिसचस्पी से रहे हो लेकिन जायता हू तुम सब प्रयुक्त के कदमों पर बसनेवासे ही हो।

मिर्जा कोयाल बया जहांपमाह हमारा विश्वास नहीं करते ?

बहादुरशाह अब तुम लोगों के सिवा मेरे पास है ही कौन जिसका विश्वास करू और जिसपर काम का बोझ बासू। तुम लोग सेना के सेनापति बनकर उन्हें नियंत्रण में लाओ। नई सेना भरती करो। तोप काम, बाकूद और गोले बनाने एव धर्म्य सास्त्रास्त्र बनाने के कारखाने बनाओ। संग्राम करने के लिए जन संग्रह करो। कितना काम है, धमी तुम्हारे सामने। लेकिन कोई बात नहीं, इस बात तुम लोग जाओ। बस मुझ भ्राना, हम हाथी पर घुसकर अपनी सेना का मुभायना करेंगे तथा मगर में धूम्ये ताकि लोगों को विश्वास हो जाए कि हमने साम्राज्य की बागडोर सम्हाली है। धर्म्यों से लोहा सेने के लिए मैदान में उतर जाए हैं। जाओ हमें भी मसिका से जाकर कुछ परामश करना है। युद्ध के समय शाहजादों का पारस्परिक झगड़ा शांत रहे इसका प्रबन्ध करना है।

[एक घोर बहादुरशाह 'अकबर' और दूसरी घोर मिर्जा मुकल और मिर्जा कोयाल जाने समते हैं लेकिन पहला बहादुरशाह 'अकबर' मुझ पड़ते हैं।]

बहादुरशाह सचिन, ठहरो ! कुछ आवश्यक कार्य शेष रह

गया है। भसे ही हम चके हुए हैं लेकिन आज का काम कस पर छोड़ना उचित नहीं।

[घाह्वारे मिर्जा मुगल और मिर्जा कोयाच एक पड़ते हैं।]

मिर्जा मुगल आज्ञा कीलिए, जहाँपनाह !

बहादुरशाह हमें मिर्जा इमाहीवन्द्य और हकीम एहसानुल्सा खां ने बताया था कि वर्तमान अनिदिष्ट स्थिति का लाभ उठाकर कुछ गुडे नगर में सूटपाट करने लग हैं।

मिर्जा कोयाच जी हाँ जहाँपनाह इस समाचार में कुछ सचार्ड है। मुझे के आठक से दूकानदार दूकानों खोलन में हिष करते हैं। परिणाम यह हुआ है कि हमारे सन्तिकों क सिए भी रसद मिसना कठिन हो गया है।

बहादुरशाह अफ्रेजों का शासन विल्ली पर से उठ गया है इसका यह घय नहीं कि यहाँ किन्तीका शासन ही नहीं रहा। हमारा सर्वप्रथम कठम्य नगर में सुम्बवस्थित और ग्याय पूण शासन स्थापित करना है। हमारे कामके प्रति आम्ना और बिदबास स्थापित करने के हेतु तुरन्त सूटपाट बर करने का प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

मिर्जा मुगल जहाँपनाह की आज्ञा का पासन होगा। मैं कस ही डिङ्गोरा पिटवा दूगा कि दिल्ली पर फिर स जहाँपनाह का शासन स्थापित हो चुका है। वे चाहत हैं कि नगर में पूण शांति और ग्याय कायम रहे। सारे बारोपार नियमित रूप से चासू रहें। यदि कोई व्यक्ति अमान्ति फेनाएगा या सूटमार करने या प्रयास करेगा ता उस नठोर दंड दिया जाएगा। जो दूकानदार दूकान नहीं

तोमेगा और प्रजा और सैनिकों को आवश्यक वस्तुएं एवं रसद देने से इन्कार करेगा, उस भी दंड दिया जाएगा ।

बहादुरशाह यह तो ठीक है, लेकिन सिर्फ डिंडोरा पिटवाना ही पर्याप्त न होगा । नगर के बाहरों दरवाजों पर एक-एक सैनिक दस्ता शांति रखा एवं अन्य प्रभाव के लिए सुरक्षित नियुक्त करो । शहर के प्रमुख मोर्चों को आदेश दो कि प्रतिदिन पाँचों पदों तथा तुर्क सवारों को रसद पहुंचाते रहें । शीशियों और वणिकों को आज्ञा दो कि अनाज का मूल्य निर्धारित कर कोठियाँ खुलवाकर बेचना प्रारम्भ कर दें ।

मिर्जा मुगल यही होगा, जहाँपनाह !

बहादुरशाह इसके प्रतिरिक्त सैनिकों को चार-चार महीने का वेतन अग्रिम कस ही दिया जाना चाहिए ।

मिर्जा कोयाल लेकिन सैनिकों ने तो कहा था, "अपने वेतन का प्रबन्ध हम स्वयं करेंगे ।"

बहादुरशाह जहाँने अपनी तरफ से हमें निश्चित करने का यत्न किया है लेकिन उन्हें हम झूट-मारकर अपने वेतनों के लिए मन-संग्रह करने की अनुमति नहीं देंगे । अब वे हमारे नियमित और अनुशासनबद्ध सैनिक हैं और उनको वेतन देने का उत्तरदायित्व हमारा है । न उन्हें झूट-मार करने दिया जाएगा, न उन्हें भूखे पेट रखा जाएगा । शासन की व्यवस्था बनाए रखना प्रजा में शांति और अशांति न फैलने देना और अंग्रेजों को भारत से निकालने के लिए अविरत संग्राम करना ही हमारे सैनिकों का कर्तव्य है ।

मिर्जा कोयाश तब तो हमें तुरन्त ही बहुत रुपयों का प्रबाध करना पड़ेगा ।

बहादुरशाह परना ही पड़ेगा । भारतवासी यदि अग्रजी-शासन को अमिशाप समझते हैं तो वे स्वच्छा से हमारे धन-सम्बन्धी आश्चर्यकृत्यापों की पूर्ति करेंगे । इस समय तो हमन सोचा है कि बादशाह चाह आसमन २४ वर्ष पहले अग्रजों से जो सन्धि की थी उसके अनुसार जमना के पदिषम के महासों की मासगुजारी का खया बादशाह के निजी खर्च के लिए तय हुआ था । पहले वही हमें यमून करना चाहिए ।

मिर्जा कोयाश लेकिन क्या सारे ही भारत से मासगुजारी यमून करने का हम अधिकार नहीं है ?

बहादुरशाह अधिकार शक्ति का धान होता है । जिसकी सटी उसकी भेंट । मनुष्य स्वभावत बबर है । हम सन्धता की अन्व सीढ़ियों चढ़ चुके हैं फिर भी अभी तक श्याम और अधिकार को शक्ति की दासता से मुक्त नहीं कर पाए । सर, कुछ भी हो सत्य से घातें नहीं मूंद सकते । आज हमें स्वर्णों के आकाश से उतरकर यथाय और व्यावहारिकता की भूमि पर पांव रखने चाहिए । जो कुछ व्यावहारिक है वही पहल करना चाहिए ।

मिर्जा मुगल लेकिन भारत की प्रजा क्या स्वयं ही मासगुजारी नहीं दगी ?

बहादुरशाह आकाश से वर्षा होगी इस आशा में रूपर कुण एतना बंद नहीं करेगा । प्रकृति का व्यवहार अनिदिष्ट

है। कभी सूखा पड़ता है, कभी अतिवर्षा होती है। प्रकृति के अनुतापों से मानव का पुरुषार्थ और ज्ञान संशयम कटता है। तात्कालिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए हमें अपने कर्मचारी कुछ सैनिकों सहित हापुड़ मेरठ मुजफ्फरनगर, धामली बानामदन, सहारनपुर गंगोह और गुड़गांव भेजकर तहसील उगाहने भेजना होगा।

मिर्जा मुज्तब इस काम के लिए उपयुक्त व्यक्ति खोजने होंगे। बहादुरशाह हमारे पुराने ममकस्वार मुंशी सामा नसू और उनके पुत्र रामजीदास को तहसील के काम में लगाया जाए। उनकी योग्यता और ईमानदारी पर हम पूर्ण विश्वास है।

मिर्जा मुज्तब ठीक है, यह व्यवस्था भी कर ली जाएगी।

बहादुरशाह इसके अतिरिक्त नगर के बनी व्यापारियों और रईसों को बुसबाधो। उनके पास धान जो सम्पत्ति है, बेमय है उसका संभव मुमम सभाओं की व्यवस्थित रण्य प्रणाली से रहा है और अग्रेजों के धाममन ने उन्हें हानि ही पहुंचाई है। वे भी अग्रेजों का अंत देखना चाहते हैं अतः उन्हें इस सभाम में सहयोग देना चाहिए। फिर भी हम अण-स्वरूप ही उनसे रकमों की मांग करेंगे जो यदि गुदा ने हमें विजयी बनाया तो हम अण सहित उन्हें सौटा देंगे।

मिर्जा मुज्तब यही सम्मति में कस दीवाने ग्राम म दरबार किया जाए जिसमें दिल्ली के रईसों, व्यापारियों बनी और अतिष्ठित व्यक्तियों को आमंत्रित किया जाए।

बहादुरशाह इसके प्रतिरिक्त मज्जर के नवाब मय्युरहमानशां, दादरी के बहादुर खां और फरखनगर के अहमद अली बल्लभगढ़ के राजा माहरसिंह, रेवाड़ी के राज सुसाराम और दुजाने के हसनअलीखां को भी बुलवाया जाए। ये लोग हमारे पुराने नमकखार हैं। हमें पूरा बिश्वास है कि ये हमारा साथ देंगे।

मिर्जा कीयाश मुझे प्रसन्नता भी और दुःख भी है इस बात से कि अहांपशाह को इस उम्र में कितना सोचना पड़ रहा है। जान पड़ता है, आप रात को खैन से सो भी नहीं पाते।

बहादुरशाह जीवन के ८१ वय तो सोते रहने में ही व्यतीत कर दिए हैं हमने। अथ समय ने हमें अगा दिया है। अब सोने का नाम क्या भी पाप है। आज तो जब तक मुख्य आकर हमें अंतिम मीद में सुभा नहीं देती हमारी आँखें नहीं लग सकतीं। हम चाहते हैं आँखें मूंदने के पहले हम अपने हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र देग पाए। मेरठ के सैनिकों के उतावनेपन ने हमारी योजना को बहुत बुरा सगाया है अन्यथा ३१ मई को सारे भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध एक साथ मंग्राम छिड़ता। उस स्थिति में उन्हें हमारा मुकाबला करना असंभव हो जाता, लेकिन खुदा हमारी कठिन परीक्षा सेना चाहता है, इमीलिए अंग्रेजों को माबयान होने का समय प्रदान कर दिया। और, कुछ भी हो, जब क्यासा मड़क ही उठी है तो हम इसे मुझने न देंगे। सम्भव है कि ३१ मई तक हमें अकेले ही स्थापीनता का संग्राम करना पड़ लेकिन अब कदम पीछे हटाने का अथ दोष

भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध उठने वाली आंधी को भी रोक देना है। हमारे पास मुगल सत्ता के गौरवपूर्ण अतीत के सिवा और कुछ नहीं है जिसके बस पर हम अंग्रेजों से युद्ध कर सकें, हमारे पास न पर्याप्त सेना है, न धन बरकत। हमें सभी साधन एकत्र करने होंगे। विद्युत्-यति से हमें काम करना होगा। भारत मुगल राजवंश से नेफुस की अपेक्षा करता है। हमें ही नहीं, अहमदाबाद तुम्हें भी इस संबंध में अपना उत्तरदायित्व निभाना है। कोई चिंता नहीं यदि शुभ काम के लिए मुगल साम्राज्य का अवशेष चिह्न भी समाप्त हो जाए, मले ही मुगल राजवंश का नाम भी मिट जाए, लेकिन याद रखो लज्जाजनक जीवन से गौरवपूर्ण मृत्यु बेमिसाल है।

मिर्जा मुगल अहापनाह हमें आशीर्वाद दें कि हम भारत की मिट्टी का श्रेष्ठ बुकाने में समर्थ हो सकें।

मिर्जा कोयास अहापनाह आज्ञा दें कि हमें और क्या करना है।

अहादुरसाह अब हमें यह सोचना है कि अंग्रेज फिर से दिल्ली पर अपना अधिकार जमाने के लिए क्या करेंगे उसीका तोड़ हमें सोचना है और व्यवहार में लाना है। हमें इस बात का भय नहीं कि आगरा, बानपुर, सलामत, पटना या कलकत्ता की तरफ से अंग्रेजों की सेनाएँ दिल्ली पर आक्रमण करेंगी क्योंकि पीछे ही दिल्ली से कलकत्ता तक के प्रदेश में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की प्रवृत्ति बढ़कटिगी। हमें भय है तो पंजाब में स्थित अंग्रेजी सेनाओं

से । पचावर साहौर और राबलपिंडी आदि स्थानों से ही अंग्रेजी सेनाएं हमसे सोहा सने बढेंगी । हमें उनका रास्ता रोकना होगा, कम से कम ३१ अगस्त तक । हम चाहते हैं कि पटियाला नामा और लीड क महाराजाओं के पास हमारे दूत भेज जाएं । उनका बर्तव्य है कि भारत के सभी वर्गों, सभी धर्मों और प्रत्येक व्यक्ति के ण्यु अंग्रेजों से संग्राम करने में आने बड़ें और अंग्रेजी सेनाओं को दिल्ली आने से रोकें । दिल्ली का भविष्य बहुत बृछ इन राजाओं के हस्त पर निर्भर है । हम उनके नाम अपन हाथ से निजी पत्र आज रात लिखकर रखेंगे, उन्हें विश्वस्त दूतों के हाथ उनके पास भेजने का प्रबन्ध करना होगा । घण्टा, आज के लिए इतना ही काय पर्याप्त है । अब तुम लोग जा सकते हो, लुदा हाकिम ।

[सभी आने को प्रस्तुत होते हैं कि शाहबादा मिर्जा अकबर प्रवेश करवा है ।]

मिर्जा अकबर बहापनाह !

पहादुरगाह तुम फिर आ गए अकबर !

मिर्जा बोपाग तुम तो गए थे मौम मनाकर रात को दिन बनाने के लिए ?

मिर्जा अकबर हां, गया तो था सकिन फाटक तक पहुंचने भी न पाया था कि मुझे ऐसा समाचार मिला जिसने मर रहे-सहे गये को भी बाहुर कर दिया और मरे दिस और दिमाग को उत्तेजित कर दिया ।

मिर्जा बोपाग ऐसा क्या समाचार प्राप्त हुआ ।

मिर्जा अखूबर समाचार यह है कि खन्दावली गाव के मूजरों ने मन्मीमंडी, तेसीबाड़ा और सफ़्दरखंज को मूट लिया। अनेक नागरिकों को जान से मार डाला और महिमाओं को बेइशकत कर दिया। जहाँपनाह, मेरे शरीर में जो मुगल रक्त प्रवाहित है, वह इस समाचार को सुनकर लीक उठा। हमारी नाक के नीचे हमारी प्रजा के जान-मास और सम्मान पर आक्रमण हो और हम अपने मनोरंजन में व्यस्त रहें ऐसी ज़िदगी को बिककार है। क्या बात है कि अब तक दिल्ली पर अंग्रेजी शासन या ये लुटेरे भी दिल्ली बने बैठे रहे और हमारा शासन घाते ही इन्होंने सर उठाया है? यमिहारी है समय की कि बिना मुगलों के मूकुटि-विश्वास से मूर्कप उठते थे, उनकी आँखों के सामने उनकी प्रजा को मूटा जाता है। कुछ करने के लिए मरी मुआएँ ब्याकुल हो उठीं।

बहादुरशाह छुक खुवा का तुम्हें भी प्रकाश बिताई दिया। धधुबकर, अंग्रेरी गलियाँ छाड़कर नये प्रकाश की रणभूमि में आओ। कठम्य तुम्हें पुकार रहा है। आओ खन्दावली के मूजरों को ऐसा पाठ पढ़ाओ कि फिर किसीको हमारे राज्य में अपद्रव करने का स्वप्न में भी साहस न हो। सूरज की किरणें निकलने के पूब ही अपराधियों को उचित बंड दो। आओ, एक पसटन और एक घोप इस काय के लिए ले आओ।

मिर्जा अखूबर (बहादुरशाह 'अडर' के पाँच पकड़कर) अरबा जान, आप पहले मुझे मेरे पहले अपराधों के लिए क्षमा

कर दीजिए, ताकि मैं इसके हृदय से नवीन जीवन में प्रवेश करूँ ।

बहादुरशाह उठो बैठे, तुम जो कुछ कर रहे हो उसमें तुम्हारा कुछ भी अपराध नहीं है । जिस बंध के लोगों का हृदय व्याकुल रहता है पहाड़ों से टपकर सेने के लिए उसके पास कोई काम ही न रहे तो वह पत्तन की साइलों में ही मिरता है । इन साइलों के बाहर निकसो । पसो हमारे साथ, हम अपने सामने तुम्हें तुम्हारे जीवन की प्रथम सनिक मुहिम पर भेजेंगे ।

[सबका प्रस्थान]

[पट-परिवर्तन]

सीसरा दृश्य

[स्थान—गुरुबत् । समय—दिन । जब पदों छठता है तब अनित महल अर्थात्, हकीम एहसानुस्ताबा और मिर्जा इसाहीबका बैठे हुए बातें करते दिखाई देते हैं । अर्थात् २२ २३ घात की भायु का सुन्दर नवयुवक है । हकीम एहसानुस्ताबा और मिर्जा इसाहीबका इतने हैं ।]

मिर्जा इसाहीबका मलिका-ए-हिंदुस्तान । मेरी रगों में भी सुख रक्त है और वस भी मरहूम शाहजादा फ़रारु का स्वसुर होने के नाते मेरा मुगल राजवंश स सबक है । मैं चाहता हूँ कि मुगल राजवंश का नाम मिटने से बच जाए । अनित महल मिर्जा इसाहीबका, घायकी किसी घात पर

विश्वास करना मेरे लिए संभव नहीं है। आपने ही मुझ-
पर यह आरोप लगाया था कि मैंने साहजादा मिर्जा फ़खरू-
को ख़तर देकर मार डाला क्योंकि अंग्रेजों ने उसे वसी
अहद स्वीकार कर लिया था और मैं अर्थात्कृत को सजात
का उत्तराधिकारी बनाना चाहती हूँ। आज स्थिति यह है
कि आपने अविश्वास के जिस विषयवस्तु को लगाया था
वह विश्वासकाय हो गया है। आज प्रायः सभी साहजादे
मुझसे शृणा करते हैं और अर्थात्कृत की जान के साहक
बन गए हैं।

मिर्जा इनाहीबख्ता आपका यह सोचना मसत है कि मैंने कभी
किसीसे यह कहा कि साहजादा फ़खरू को आपने मार
डाला। सच पूछा जाए तो यह बात साहजादों ने ही
फैलाई। उनमें से प्रत्येक वसीअहद बनने की आकांक्षा
रखता है।

हकीम एहसानुस्साला मसिफा-ए अहदा, इन गढ़े मुदों को
उसाइमे से साम बना ? कम से कम आप मुझपर
तो विश्वास रखें। मेरा तो दिस्ती का राजसिंहासन के
उत्तराधिकार से कोई संबंध नहीं है। मैं तो मात्र हकीम
हूँ। साहजाद का मुझपर विश्वास है और वे आज तक
मुझसे ही उपचार कराते रहे हैं। उनकी मुझपर जो शृपा
रही है उसीके कारण उनके और उनके बंधु के लिए विहित
हो उटना मेरा कर्तव्य है।

मिर्जा अर्थात्कृत मेरिन हकीमजी, मेरी समझ में यह नहीं
आता कि मुगल राजवंश बर्बादी और अप्रतिष्ठा के

जिस गत में गिर चुका है उससे अधिक उसका घोर क्या बिगड़ सकता है ?

खीमत महस शाहजादा जहाँबख्त ने ठीक ही कहा । मुगल राजघराने के बुझते हुए विराग को अशर्तों के आसरे प्रकाशित रखना अपने आपको घोसा देना है ।

मिर्जा अलीबख्त और अजर उसे रोयान रखना है तो हमें उस की जगह अपना रक्त उसे पिनागा हागा ।

हकीम एहसानुस्साखा शाहजादा हुजूर ! बावशाह याबर के वक्त में बहम लेने वाला युवक यही बात कहेगा । आप नव-युवक हैं, आपके रक्त में गरमी है लेकिन यह समय ठंडे दिमाग से सोचने का है ।

मिर्जा इत्ताहीबख्त अश्रेष्ठ भारत के अथवा मुगल राजघराने के हितपी हो सकते हैं यह तो मैं भी नहीं मानता लेकिन यह भी उत्पन्न है कि अश्रेष्ठों को भारत से निकाल बाहर करना इस समय असम्भव है ।

हकीम एहसानुस्साखा एक-दो उन राजाओं और नवाबों का छोड़कर जिनके राज्य अश्रेष्ठ ने छीन लिए हैं, ऐसा कौन गा मुकुटपारो है जो गुलकर अश्रेष्ठों से संशाम करने के लिए मदान में उतरेगा ?

मिर्जा इत्ताहीबख्त अहंजनाह ने घरने दूत पटियाला, नामा और जीन्द के राजाओं के पास भेजे थे । इनसे अश्रेष्ठों के विरुद्ध सहायता चाही थी लेकिन क्या सहायता प्राप्त हुई ?

हकीम एहसानुस्साखा यही कि दूतों को मार डाला गया । वे राजा गुलपर अश्रेष्ठों के महायुक्त बन गए हैं । उन्हें रखर,

स्वयं और सेनाएं दे रहे हैं। घम्बाला से लेकर पेठाबर तक अंग्रेजी सेनाओं के लिए रास्ता साफ हो गया है। मसिका-ए-जहाँ ज़रा सोचिए। अंग्रेजी सेनाएं सुसिद्धित हैं। बीसियों संप्रान में अनुभव प्राप्त सेनापतियों के नेतृत्व में अनुशासित हैं उनकी दूरमार तोपों का हमारे पास कोई उत्तर नहीं है। मराठों की साखी तलवारें अंग्रेजों की बढ़ती हुई शक्ति की बाढ़ को नहीं रोक सकी, उसे कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा मानुमती ने कुम्बा ज़ाड़ा कहावत को अरिहार्थ करने वाला हमारा सैन्य-दल कैसे पराबिठ कर सकेगा ?

मर्दा जबावरत बस बस हकीमजी अंग्रेजों की शक्ति का हीमा हमारे सामने खड़ा नहीं कीजिए। अफगानिस्तान के पठानों और मेपास के गोरखों ने अंग्रेजों की अजेयता का पर्दाफाश करके रख दिया है। वे भी मनुष्य हैं और हम भी। अंग्रेज यदि भारतीयों पर अपनी सत्ता स्थापित करने में समर्थ हो सके हैं तो इसका भय उनकी तोपों को नहीं है। छोटे-से भरतपुर के मिट्टी से बने गढ़ ने अंग्रेजों की तोपों को विफल कर दिया था। अंग्रेजों के पास एक ही दस्त्र ऐसा है जिसके प्रयोग से वे धाज तक सफल हुए हैं वह है हममें फूट के बीज बो सकने की उनकी योग्यता। जान पड़ता है इन्होंने इसी दस्त्र का प्रयोग आप दोनों पर किया है।

मर्दा इसाहीयतना बसीअहम हम कैसे अपना बसजा चीर-कर दिग्याएं कि हमारे हृदय में सज़ाट मसिका

बसीमहद और मुगल राजवंश की हितचिन्तना की भावना के अतिरिक्त कुछ नहीं है। सम्राट् भाबुक हृदयवाले उदार और भले आदमी हैं। वे आदेश में बह आते हैं और मिर्जा मुगल मिर्जा कोयाल, मिर्जा अबूबकर और मिर्जा खिजद सुलतान आदि तमाम शाहजादे उन्हें भूठे सपने बिलाकर पय घण्ट कर रहे हैं। सारे ही शाहजादे मलिका-ए हिन्द और बसीमहद से सन्तुष्ट रहते हैं क्योंकि इसके कारण हैं। वे जानते हैं कि उनका भविष्य अन्धकार में है। वे जानते हैं कि उनका रहे-सहे सुलतान के आंसों में मूदते ही समाप्त हो जानेवाला है इसलिए जिस युद्ध के फल उन्हें मिसनवासे नहीं उसे वे युद्ध की उजामा से भस्म कर देना चाहते हैं। उनकी निराशा का यह अन्तिम अल्प है। उनका कुछ नहीं जाना है लेकिन आपको तो सोचना चाहिए। वे तो आज भी अभावग्रस्त हैं और उनका भविष्य धूमिल है किन्तु आपके पास सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए बहुत कुछ शेष है उसकी रक्षा कीजिए।

हकीम एहसानुल्सादी मसिना-ए-जहाँ! जहाँ तक मैं समझता हूँ यह समय है जब आप अंग्रेजों से सीधा कर सकती हैं। इस समय हिन्दुस्तान में अंग्रेजों के विरुद्ध जो सैनिकों में अशांति मचर आ रही है उसने अंग्रेजों को अंकित अचर्य कर दिया है लेकिन वे भीय छोड़कर अपना बिस्तर घोल करके भारत से कूच कर जाएँ, यह सोचना मारी भूल है। जो बुद्धिमान हैं वे भारतीय, विशेषतः राजा सोम, इस बात को समझते हैं, इसका प्रमाण पटियाला भाभा और

जीव के राजा वे चुके हैं। राजस्थान के राजा सदा मुगल साम्राज्य के स्वामी बनकर रहे हैं। उनके नाम भी सम्राट ने अपना फर्मान भेजा था। उन्होंने भी उत्तर नहीं दिया। कोई अपने राज्य, सुख और वैभव के साथ युद्ध खेसने को प्रस्तुत नहीं। इस समय जो अंग्रेजों का साथ देगा उसके सम्मान और समृद्धि का अग्रज हमेशा ध्यान रखेगा। यही समय है जब आप अंग्रेजों का दिम भीत सकती हैं।

खोमत महल अंग्रेजों की वकालत करनेवाले आपके जैसे लोग मौजूद हैं। तभी तो वे यहां अपने पांव टिकाए हुए हैं।

मिर्जा इसाहीबख्त हमें अंग्रेजों से क्या लेना-देना है। सम्राट की चरण-सेवा में इतना जीवन व्यतीत हो गया है और चाहते हैं कि दोष जीवन भी उग्रीकी भावरी करते व्यतीत हो। इस गए-गुजरे समय में भी मसिका सेकड़ों विधवाओं, धनाओं फकीरों और अघातियों को सहारा देती हैं। अनेक गरीब पत्नीयों के अपने सब से विवाह कराए हैं। बेगम मुमताज महल माहजानी जहाँपारा आदि ने दानशीलता की जो परंपरा मुगल राजवंश में चामू की, उसे आपने कायम रखा है। अपनी सीमित धन में से सम्राट कितने नायकों और कमाकारों को पड़ीके दकर मुगल राजवंश के यश का पीरव बढ़ा रहे हैं। उनके ही सहारे पर मिर्जा शानिव कहते हैं—“कब की पीते थे मय और मममले से कि हाँ रग भाएगी हमारी फाकामस्ती एक दिन।” अब तक सम्राट का हाथ ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्तियों पर है उन्हें कस पी बिता क्यों हो? हम लोग

चाहते हैं कि जो सहारा गरीबों, बसाकारों और नाहित्य
कारों के लिए बना हुआ है वह कायम रहे। इसीलिए हम
घापकी सेवा में उपस्थित हुए हैं।

कीर्तन महल समय के अंक को रोक सकने की शक्ति किसी
मनुष्य में नहीं है मिर्जा इनाहीबखश साहब, फिर मैं तो
एक निरस मारो हूँ। ये राजकाज के मामले हैं। घापको
जो कुछ कहना है वह सम्राट से कहिए।

हकीम एहसानुस्नाखा सम्राट से कैसे कहें ? मिर्जा मुगल
मिर्जा कोमाश और मिर्जा अरबूबर खादि साहजादे एक
क्षण का अक्षर भी नहीं देते कि हम एकल में उनसे बातें
कर सकें। सम्राट गाजी बहादुरसाह अफर की अय क
नारे से उनके मस्तिष्क से अविष्य के अक्षय म सोचने की
शक्ति छोन ली है। आज जब अलीमहद साहजादा अबा
अक को याच में हाथी पर अठावर सम्राट की अचारी
दिल्ली की अइकों से निकली तो जनता से अय-अयकार से
अकाम गुमा लिया। इसी प्रकार के इत्य उपस्थित कर
साहजादे सम्राट की अिबेक-शक्ति को छिन रहे हैं। जिस
समय सम्राट के लिए अण अइने की अाअयनता अडेगी
उस समय सम्राट की अय-अयकार करनवाली भीड़ में से
कोई दिगार्द नहीं देगा। अान-अूमकर अअनाअ की अपटों
में अपने अापका अोक बना अमअरी का काम नहीं है।

मिर्जा अयावक ह्यारा अस्तिष्क अिअइ गया है, हम पागल हो
गए हैं। हकीम साहब, अापके उपदेअ की गीतियों का हम
पर अभाव नहीं अकइ सकता।

हकीम एहसानुस्साबा! लेकिन मैं हकीम हूँ, यसीप्रहद । घासरी चांस तक भाशा न छोडनबासा । सम्राट का सदा से मैं ही उपचार करता आया हूँ और इस बार भी मुझे ही करना होगा ।

मिर्जा जबाबत क्या घोषण है हकीमजी आपके पास इस रोग की ?

हकीम एहसानुस्साबा! मलिका-ए-हिंद ही मेरी अंतिम घोषण हैं सम्राट के लिए । मेरा मलिका से निवेदन है कि अंग्रेजों से आपकी प्रभुता का मुख्य कारण यही तो है कि उन्होंने साहजादा जबाबत का यसीप्रहद मानने से इनकार किया है ?

मिर्जा इसाहीबखश और अगर अंग्रेज साहजादा जबाबत को यसीप्रहद मान लें तब क्या आप सम्राट को इस बात के लिए राजी कर सकती हैं कि वे बिद्रोहियों पर से अपनी सरलता का हाथ हटा लें ?

मिर्जा जबाबत इसके पहले कि मलिका-ए-हिंद आपके प्रश्नों का उत्तर दें, एक प्रश्न मैं भी आपसे पूछना चाहता हूँ ।

मिर्जा इसाहीबखश पूछिए ।

मिर्जा जबाबत मैं समझता हूँ कि क्या आपने साहजादा मिर्जा अख्तर मे घपनी पुत्री का विवाह इसलिए नहीं किया था कि वे एक दिन दिल्ली के राजसिंहासन पर बैठें ?

मिर्जा इसाहीबखश जी नहीं सम्राट न आज्ञा दी कि मैं घपनी पुत्री का विवाह साहजादा अख्तर से कर दूँ । सम्राट की आज्ञा का पालन करने से बड़ी खुशी मुझे बिना बात में हो

सकती थी ?

मिर्जा जवाबस्त किंतु जब मिर्जा फ़ख़रुद्दीन घापके दामाद हो गए, तब घाप यह चाहने लगे कि बही बलीमहद माने जाएं और इसके लिए घाप घंटाओं से साँठ-गाँठ करने लगे । यही बात है न ?

हकीम एहसानुस्साफ़ा दामा कीजिए बलीमहद इस बात का उत्तर मैं देना हूँ । अपनी संतान को सुनी घन और प्रभुता में सम्पन्न देखने की इच्छा प्रत्येक माँ-बाप को होती है । क्या मसिका नहीं चाहती कि दूसरे दाहबादों को जो उम्र में घापसे बड़े हैं बंजिन कर घापको अश्रेष्ठ भी बलीमहद मान लें ? जब तक सम्राज्ञी नूरजहाँ ने अपनी पुत्री सादसी बेगम का विवाह दाहबादा दाहरवार से नहीं किया था तब तब दाहबादा दाहजहाँ उनकी माँखों का तारा था क्योंकि उनके भाई आसफ़खाँ की पुत्री मुमताजमहम का बह पति था, किंतु जब दाहरवार नूरजहाँ का दामाद बना तो उन्होंने उन्हीं ही बलीमहद मनवाने की कोशिश की और आसफ़खाँ दाहजहाँ के लिए प्रयत्न करने लगे । इस तरह माँ-बहन में भी छिड़ गई । अपनी संतान प्राणों से भी प्रिय होती है । मनुष्य संतान के लिए न्याय-अन्याय भी नहीं देखता । अगर न्यायपूर्वक विचार किया जाए तो पहना होगा कि मसिका भी न्याय-भाग पर नहीं है ।

मिर्जा इनाहीबख़्त और गुद स्वार्थ की दृष्टि से भी दान की यथमान स्थिति पर विचार किया जाए, तब भी मसिका ए हिन्दू, घाप अनुभव करेगी कि सम्राट का घंटाओं के विरुद्ध

किए जानेवाले इस संग्राम में सम्मिलित होना उनके और उनकी सतान के हित में अच्छा नहीं है। यदि बिद्रोह प्रसक्त हुआ तब तो सर्वनाश है ही और यदि घरेलू को देश से निकाला भी जा सका तब भी मुगल साम्राज्य का पुनरुद्धार तो हागा ही नहीं। जिन शक्तियों के सहारे सम्राट आज इस संग्राम में कूदे हैं उनके मुंह में खून सग चुकने के कारण वे सम्राट को भी अपनी फिर धतुप्त भूख का प्राण बनाएंगी। सदा के लिए मुगल साम्राज्य को कब खोद कर गाड़ दिया जाएगा। जो स्वप्न शिवाजी के उत्तराधिकारी पूरा न कर सके वह पूर्ण हो जाएगा।

हफ्तीम एहसानुस्तार्खा प्रत्येक स्थिति में मुगल राजवंश पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ेगा। जिस हरे भंडे के नीचे आज भारत के कुछ स्वार्थी और उत्पातप्रिय लोग घरेलू से संग्राम छेड़ रहे हैं उसे वे पांवों से कुचल डालेंगे। मुगल राजवंश के प्रत्येक व्यक्ति को मौत के घाट उतार दिया जाएगा यदि कोई बच भी जाएगा तो उसकी स्थिति मिखा रियों से भी गई-बीती होगी। हरम की वेगमों को वासियों का काम करना पड़ेगा। शाहबादियों को जकिया पीसकर पेट भरना पड़ेगा। राजमहल में रहनेवाली महिलाएं पेट भरने के लिए इस्बत बेचती फिरेंगी। कमी नस्पना भी की है इस स्थिति की।

खोजत महल लेकिन सम्राट को मैं किस मुह से इस संघर्ष में जबकि उनको घरेलू से संग्राम छेड़ने के लिए उतारित करनेवालों में एक मैं भी हूँ। अब तो सम्राट मेरी

बात भी नहीं सुनते ।

मिर्जा इलाहीयका यह धापका भ्रम है । संसार में यदि वे किसीकी बात सुनते हैं तो केवल धापकी । धापकी खातिर वे एक बार खुदा की बात को टाल सकते हैं । धापको ही मज्जर में रसकर उन्होंने कहा है— 'मारो भी तुम जिसाओ भी तुम, तुमको क्या कहूँ ? तुमको खुदा कहूँ या खुदा को खुदा कहूँ ।' मत्र-मुग्ध धाप की भांति यह धापके संकल पर मानते हैं ।

हकीम एहसानुस्त्राका सम्राट बहुत भोल हैं । संसार में धिराग सेकर शोजते फिरने पर भी उनके जसा समुदय व्यक्ति दूसरा नहीं मिलेगा । इसमें संदेह नहीं कि भारतवासियों के दुःखों के प्रति उनके हृदय में सच्ची सहानुभूति है लेकिन भारतवासियों के दुःख-दरों का उपाय यह नहीं है जो सम्राट ने इस समय सोच रसा है । इससे तो भारतवासियों के दुःख-दर बढ़ेंगे । कुछ स्वामी लोगों ने यह हंगामा खड़ा किया है और पबयंत्र रखकर उन्होंने इसमें उन्हें सम्मिलित कर लिया है । धाप ही धव उन्हें इस जाल से बाहर निकाल सकती है ।

खीनत महस तुम्हें इस संबंध में सोचना पड़ेगा ।

मिर्जा खवायकत नहीं धम्मी जान इस संबंध में धम कुछ भी सोचने की मुजादत नहीं है । मैं इस बात पर विदवास नहीं करता कि धगर हम धंग्रेजों को भारत से निकालने में सफल हुए तो भारतयासी मुगल राजवंश के साथ धन्याय करेंगे । केवल धीरगजेव को छोड़कर मुगल राजवंश में ५१

व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ, जिसने वर्माघटा के बघीरूथ होकर सत्ता-मद में भ्रष्टा होकर अपना अपम भोग-विनाश के लिए भारत की प्रजा को ब्यर्थ सताया हो। माना कि किसी समय हम भी बिबेधी थे और वायरणाह ने भारत में साधों की भीमारे लड़ी करके अपना मनोरंजन किया था, लेकिन उन्होंने अपने उत्तराधिकारी को सखीयतस्वस्व नसीहत दी थी कि अपनी प्रजा पर रडम करना सबको अपने पुत्र समझना और किसीके धार्मिक विश्वासों पर घाघात न करना। मुसल साम्राज्य में शांति का दौर-दौरा था किधाम प्रसन्न थे, व्यापारी सम्पन्न थे रहंस प्रसन्न थे। कला, व्यवसाय और साहित्य सभी की चतुर्दिक उन्नति हो रही थी। उस समय की स्थिति स भाव प्रप्रेमी शासन के समय की स्थिति का मुकाबला करते हैं तो भारतीयों के हृदय में मुगलों के लिए प्रेम उमड़ घाटा है। भारतवासी हमें सब्से दिस से ध्यार करते हैं। हम बर्बाद हुए हैं तो अपनी ही निपसताओं के कारण। हमें हमारे प्रति भारतवासियों के प्रेम का मूम्य चुकाना है। भसे ही हम बर्बाद हो जाएं, मुपस राजवश में से कोई भी जीबित न बचे लेकिन हम जमाने द्वाप नितरज और कायर कहा जाता स्वीकार नहीं करेगे।

जोमत महस भावुकता में बहने की आवश्यकता नहीं, जबा बस ! हमें सारी बातों पर गम्भीरता से विचार करना होगा।

[सम्राट बहादुरशाह 'बक़र' मिर्जा कोयास, मिर्जा मुश्त धीर मिर्जा अक़बर का प्रवेश । मिर्जा मुश्त के हाथ में कुछ समाचार पत्र धीर पत्र कापड हैं । सम्राट बहादुरशाह 'बक़र' इस समय घाही बोझाक में हैं । तीनों शाहबादे सैनिक बेध में हैं । सम्राट के धाममक कर पहले से मीरुष सभी व्यक्ति उठकर उड़े हो जाते हैं धीर इन्हें कोनिय प्रसा करते हैं ।]

बहादुरशाह मसिका की राजसभा में किस प्रश्न पर विचार हो रहा है ?

खीमत महस कुछ हम्हीं सब लोगों के हित की बातों पर । जब एकांत होगा तो निवेदन करूमी ।

मिर्जा कोयास धरर बातें हमसे गुप्त रखने की हैं तो हम लोग पसे जाते हैं ।

बहादुरशाह नहीं चाहबादी । गुप्त बातें सुनने के लिए हम प्रसंग से समय निकालेंगे पहले हमें आवश्यक काय समाप्त कर सेना चाहिए ।

खीमत महस हकीम एहसानुत्साता, मिर्जा इसाहीबख्त धीर जयावक्त मेरे साथ धाएं । मैं भी अधूरी बातों को धूमरो जगह समाप्त करना आवश्यक समझती हू ।

हकीम एहसानुत्साता धरर जहापनाह धनुमति दें !

बहादुरशाह हम धनुमति क्यों नहीं देंगे, लेकिन मसिका जो प्रसंग दरबार भगाने लगी है इससे दिस में बटका हाता है । धीर, कोई घात नहीं, धाप लोग अपनी मजसिस जमाइए । धरबादा पाने पर, यदि मसिका ने धनुमति दी ता, हम भी धापकी महफिस में सम्मिलित होंगे । धाप लोग जा सकते हैं ।

खीनत महस (बुद्ध रीपपूर्वक) सम्भाट शायद यही चाहते थे कि हम लोग यहाँ से टर्न ।

बहादुरसाह (निर्बोध हंसी हंफता है) बच्चों के सामने जो बात हम नहीं कहना चाहते वह सुनना चाहती हो क्या ? बहादुरसाह 'अक्रर' के जीवन में अब कुछ भी छुपा नहीं है जिसे हम छुपाना चाहेंगे वह भी अपनी मस्तिका से ! शायद तो बेचारा बहुत बेबस होता है । वह अपने शरीर के ही नहीं, दिल, दिमाग और आत्मा के भी वस्त्र उतार डालता है । उसकी खायरी क्या है ? उसकी अपनी नंगी तस्वीर ।

मिर्चा अबूबकर घोरत ही बुरके में रहना चाहती हैं ।

खीनत महस बुरके कई प्रकार के होते हैं चाहनाया अबूबकर ! तुमने मुझसे बोट की है लेकिन बात इस प्रकार कही कि यह मैं जान पड़े कि किसीपर सीधा प्रहार किया गया है । यह भी तो वास्तविकता को बुरका पहनाना है । बहुत-सी झालें इतनी पैनी होती हैं कि वे बुरके के भीतर की वास्तविकता को देख लेती हैं ।

मिर्चा अबूबकर बहुत-सी छुरियाँ ऐसी होती हैं जो म्यान में रखकर भी प्रहार कर जाती हैं । उनके प्रहार के घाव का पता भी सुरम्ह नहीं सगता लेकिन अब रुद उठता है तभी पता सगता है ।

बहादुरसाह अरे तुम लोग जो बातों की तलवारें बसाने लगे ! छोड़ो इन बातों को और अपना-अपना काम करो । समय बहुत मूस्यबान है ।

[मिर्जा इलाहीबख्श हकीम एहसानुस्खाजी खदीरक घोर खोजत महम का प्रस्थान ।]

बहादुरशाह मिर्जा मुगल ! अब हमें जरूरी बात सुनाओ ।

मिर्जा मुगल पहला पत्र हमारे गुप्तचर तानुद्दीन का है ।

बहादुरशाह उसे हमने पंजाब के समाचार जानने के लिए भेजा था । उसे हमने यह भी आदेश दिया था कि पंजाब में अंग्रेजों की भारतीयों की जो सेनाएं हैं उनसे सम्पर्क स्थापित कर उन्हें शीघ्रतम स्वाधीनता के संग्राम में सम्मिलित होने के लिए उभाड़ो । वहाँ की प्रजा को भी विप्लव करने के लिए तैयार करो । क्या मिला है उसने ?

मिर्जा मुगल मिला है—पंजाब के सोग, विद्येपत राजा जिनके पास धन भी है, समाए भी घोर जिनका प्रजा पर भी प्रभाव है, किरगियों के हाथ के खिसीने बने हुए हैं । मैं स्वयं इनसे एकान्त में मिला हूँ । मैंने उनसे घातपीत की घोर उनके सामने अपना फसेजा पानी पर दिया । मैंने उनसे कहा—“घाप सोग किरगियों का साथ क्यों देते हैं और देश की स्वाधीनता के साथ बिदवासघात क्यों करते हैं ? क्या स्वराज्य में घाप इससे घण्टे न रहेंगे ? इसलिये कम से कम अपने साम के लिए ही घापको दिल्ली के सम्राट का साथ देना चाहिए ।” इसपर उन्होंने उत्तर दिया—“देखिए, हम सब मौके की प्रतीक्षा में हैं । सम्राट की आज्ञा मिलने पर इन अंग्रेजों को मार डालेंगे ।” किन्तु मेरा लयास है कि उनपर रत्ती भर भी बिदवास नहीं किया जा सकता ।

बहादुरशाह और पंजाब के राजाओं ने हमारे वृत्तों का बच करके हमारे भावेष का प्रसम्मान किया। हमें पंजाब से बहुत आशाएं थीं, लेकिन हमें प्रसीध निराशा वहाँ से प्राप्त हुई। हाँ, प्रागे क्या लिखा है तानुद्दीन ने ?

मिर्जा मुसस लिखा है—अंग्रेज अधिकारियों ने गुज तेगबहादुर और गुज गोविन्दसिंह आदि पर हुए सम्राट औरंगजेब के काम के अत्याचारों की स्मृतियों को ताजा करने पंजाब के पूरे एक वर्ग को इस स्वाधीनता के युद्ध से न केवल अदासीन, अपितु हमारा शत्रु और अंग्रेजों का मित्र तथा सहायक बना दिया है। इतना ही नहीं, सम्राट बहादुरशाह के हस्ताक्षरों का एक जाली घोपणा-पत्र भी पंजाब में वितरित किया गया है जिसमें कहा गया है कि इस विद्येप बग के सब लोगों को मार डाला जाएगा।

मिर्जा फोयाद (कोब से भरकर) दुष्ट अंग्रेज ! ये इन्हीं वृत्तों के अस्त्रों से भारत में पर जमा पाए हैं। यहाँ जहाँपनाह गली-गली अपने मुँह से घोपणा करते नहीं सकते कि भारत का प्रत्येक वासी जाहे बहु किसी धर्म का पासनेवाला हो हमारी आँखों की पुतली है और उधर अंग्रेजों की जाल साजी उनके नाम से घोपणा-पत्र घटबा रही है कि भारत के पूरे एक बग को वे मरवा डालेंगे ?

मिर्जा मुसस और धिन्कार है उन भारतवासियों की मुसठा फो, जो इस प्रकार के घोपणा-पत्रों पर विश्वास करके देश के राज्यों का साम देती है।

बहादुरशाह (दुख-भरी आँखें भर) लेकिन इसने लिए हम

बिसे दोग दै । निश्चय ही हमारा इतिहास भी हमारा घातु है । एक-दो व्यक्तियों के कारण विभिन्न कौमों के बीच गहरी दरारें पड़ जाती हैं, जिन्हें पाटना बहुत कठिन हो जाता है । बहुत कठिन हो जाता है क्योंकि देश के घातु इतिहासकी शिक्षा देने के नाम पर इन्हीं दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं को उभार-उभारकर सामने रखते हैं । हम युग-युग के लिए एक-दूसरे के घातु बने रहते हैं । भारत के जीवन का यह मासूर न जाने कब भरेगा ।

मिर्जा अबूबकर जब तक अंग्रेज भारत में हैं तब तक इस मासूर को ये लोग कुरेवते रहेंगे । उनकी उपस्थिति उस मासूर को बढ़ाती ही रहेगी ।

बहादुरशाह लेकिन जब तक इस मासूर को हम भरेंगे नहीं तब तक अंग्रेजों को भारत से बाहर निकाल भी कैसे पाएंगे ? हमारी शक्ति तो हिन्दू मुसलमान और सिख आदि सारी कौमों की एकता ही है । इसीके बल पर हम अंग्रेजों पर विजय पा सकते हैं । हम समझते हैं कि अंग्रेजों के परयापार इस मासूर के लिए घोषणा सिद्ध होगी लेकिन अंग्रेज के समाचारों ने हमें दुर्दिग्धता में डाल दिया है ।

मिर्जा अबूबकर अहापनाह मैं तो बहुत अज्ञानी और अचर्यापी आदमी हूँ—इस सम्बन्ध में आपको संतोष देनेवासी बात क्या कह सकता हूँ, फिर भी मुझे कहना ही पड़ता है कि अंग्रेजों को बसने दीजिए अपनी बालें, हमें तो बचाई और ईमानदारी से अपना नाम लिए जाना चाहिए । हमारा

दिस घगर साफ होगा सो जोग हमपर विश्वास करेंगे ।
घाब नहीं ठो कस हमारे बीते जी नहीं ठो हमारे मर
जाने पर ।

बहादुरसाह बहुत पते की बात बही तुमने प्रयुवकर । सच्चाई
धीर ईमानदारी में बहुत शक्ति होती है । प्रेम से प्रेम की
उत्पत्ति होती है । हमारे सूफी धीर हिन्दुओं के सत इस
सत्य को प्रत्यक्ष करते रहे हैं । सच्चा मानव सम्प्रदायों की
सीमा में बंधा नहीं होता । गुरु मानक मे कहा है

बंदे इक लुदाय दे, हिन्दू मुसलमान
दावा राम रसूलकर, लड़दे वेईमान ।

निर्वा मुगल जहापनाह यह पत्र सो प्रपूरा ही रह गया ।
बहादुरसाह हां, हां सुनाया ।

निर्वा मुगल लिखा है—पंजाब में प्रयोज अधिकारी नेरठ धीर
दिस्ती की घटनाओं से बहुत सावधान हो गए । तुरन्त
ही सभी छात्रियों में बहुत चतुराई से भारतीय
सैनिकों से बनी पल्टनों को निरक्षत्र करने का कार्य उन्होंने
प्रारम्भ कर दिया । साहीर के निकट मियां भीर में पंजाब
मर में सबसे अधिक प्रयुक्तों की भारतीय सैनिकों से बनी
सेना थी । यह सना बिद्रोह करने के अवसर की प्रतीक्षा
में थी लेकिन १३ मई को प्रजातक ही इन्हें परेड पर
सुनाया गया । प्रयुक्तों ने प्रपना छोपलाना ऐसे स्थान पर
रखा कि प्रगर भारतीय सना जरा भी गड़बड़ करे ता
उमे भून जाला जाए । इसके पदघात इस सेना के अस्त्र
रखवा लिए गए धीर इसे बर्खास्त कर लिया गया ।

मिर्जा की आज्ञा तो इस प्रकार अप्रेतों ने साहीर पर से अपना प्रमुख समाप्त होने से बचा लिया।

बहादुरशाह अब तो तुम मानोगे कि मेरठ के सैनिकों ने समय से पूर्व अप्रेतों के विरुद्ध संध्याम छेड़कर हमारे कार्य को कितनी हानि पहुंचाई है ?

मिर्जा अबूबकर लेकिन ये निरक्षर सैनिक निरिपथ रूप से दिवंगत आएंगे। इस तरह हमारी सेना में वृद्धि होगी। हमारे अस्त्र बनाने के कारखाने अब घुस्ती से काम करने लगे हैं। हम इन सैनिकों को अस्त्र दे सकेंगे।

बहादुरशाह यह सच होगा अबूबकर, लेकिन प्राग की लपट जगह-जगह एक साथ फैलती तो उसमें अप्रेतों से टुकड़ों-टुकड़ों में घटी रहकर जलकर भस्म हो जाती। और प्राग पड़ो क्या सिपा है ?

मिर्जा मुगल सिपा है—झीरोखपुर में भी १३ मई को अप्रेत अधिकांशियों ने भारतीयों से बनी अपनी सेना को परेड पर बुलाया किन्तु सैनिकों ने परेड पर न आकर अप्रेतों के बंगलों में भाग लगा दी। वहाँ एक पड़ा अस्त्रागार भी था जिस भारतीय सैनिकों के हाथ में पड़ने देने के लिए अप्रेतों ने भाग लगाकर लाक कर दिया। यह सेना अब दिवंगत की घोर रवाना हो गई है।

मिर्जा अबूबकर (अचानक उत्तजित होकर) शाबाह भारतीय सैनिक जिनाबाह ! सम्राट बहादुरशाह की जय !

बहादुरशाह क्या तुम अबूबकर कभी रभी तुम्हारे सर पर अनून सवार हो जाता है।

मिर्जा अबूबकर बनून मही बादशाह सनामत, मुम्बयर एक जिन हावी हो जाता है। और प्रागे सुनाओ दीवाने प्राला साहजादा मिर्जा मुगल !

मिर्जा मुगल प्रागे सिखा है—पेशावर में २४, २७ और २१ नंबर की भारतीय सेनाओं के घस्त्र रसवा सिए गए क्योंकि वहां गोरी सेना भारतीयों से कही अधिक थी और गोरी सेना ने भारतीय सेना को अचानक ही बेर सिया। स्वतन्त्रता प्रेमी और और साहसी अफगान और अफरोवी कवीसों को भी अफजों ने बड़ी रफमें देकर खरीब सिया है। उन्हें वे हमारे बिरुद्ध सड़ने के सिए अपनी सेना में भरती कर रहे हैं।

मिर्जा अबूबकर जिन अफजों ने अफगानों पर तरह-तरह के अत्याचार किए, पठान महिलाओं को बेइस्वत किया प्राज वे ही अफजों के रसक बने हैं।

मिर्जा कोयाश हां भाई, सोना मनुष्य का ईगान भी खरीद सता है।

बहादुरशाह प्राग सुनाओ।

मिर्जा मुगल मरदान में ५२ नंबर की भारतीय सेना थी। इस सेना का अमेज अधिकारी सज्जन और उच्च बिचार का था। वह महीं चाहता था कि उसकी सेना के घस्त्र छीन जाएं लेकिन उसकी बात उच्च अधिकारियों ने महीं मानी तो उसने आत्महत्या कर ली। सेना को समाचार मिसा कि उन्हें निरयस्त्र करने के सिए पेशावर से गोरों की सेना प्रा रही है तो वह अड़क उठी। उसने खजाना भूट सिया

घोर घस्पाओं से सज्जित हो दिस्मी की ओर खाना हो गई । मिर्जा कोयाल तो समी जगह 'दिस्मी बसों' का नाव गुन उठा है । अब भारत में अंग्रेजों के दिन इतने-गिने ही रह गए हैं ।

मिर्जा मुयस आगे भी ता मुनिए । अंग्रेज सेनापति निकससन ने अपनी अणवारोही सेना लेकर इस सेना का पीछा किया । उसके साथ सोपखाना था । उसने भारतीय सैनिकों को घेर कर उन्हें तोप के गोसों से उड़ा दिया । भारतीय सैनिकों के हाथ, पैर, सर हवा में उड़ने लगे । इस प्रकार पूरी पस्टन स्वतंत्रता की बसिदेबी पर चढ़ गई ।

मिर्जा अबूबकर ऐसे समाचार सुनकर मेरा खून तो मस्तिष्क की तरफ बौड़न लगता है । ओह ये सार बुस्म हम चुपचाप सह रहे हैं ।

बहादुरशाह अब पत्रेसमाप्त हो गया ?

मिर्जा मुयस नहीं जहाँपनाह ! आगे लिखा है—१० नम्बर की भारतीय सेना को किल्ली में बिठाकर सिम नदी में उतार दिया गया जिसमें मारू आ रही थी । बाद में इस नाव को डुबा दिया गया । साहीर की २६ नंबर की पसटन ने बिद्रोह किया । अंग्रेजों को समाचार मिला तो उन्होंने तुरंत गोरी सेना को एकम की ओर तोपों से बिद्रोहियों पर आक्रमण किया । सफरों सिपाही गोसों ने सिकार हुए । बचे हुए सैनिक प्राण रक्षा के लिए भाग लड़े हुए ओर राबी मदी पार करने का प्रयत्न करने लगे । इस अंग्रेज जो संख्या म कई गुने थे, उनपर गोसियों

मगे । अत में दो सौ ब्यासी भारतीय सैनिक बंदी बनाए गए और २० रावी के गर्भ में समा गए । उन बंधे हुए सैनिकों को बनघोर वर्षा में अजनासे साए गए । मध्य रात्रि में इन्हें तहसील में बंद किया गया । ६६ सैनिक तहसील के छोटे से गुंबद में बंध कर दिए गए । प्रातःकाल इन्हें बाहर निकाल-निकालकर तोप के गोलों से उड़ाया जाने लगा लेकिन जब गुंबद में बंद किए गए सैनिकों को निकाला जाने लगा तो उनमें से कोई हिंसा भी नहीं क्योंकि हुआ न मिसमें से पहले ही वे घस्सा मियां को प्यारे हो चुके थे । पास में एक कुर्घा था उसमें २०२ सारों बाल दी गई और कुएं को मिट्टी से भर दिया गया ।

मिर्जा अबूबकर (पापनों की वच्छ) यह मारा ! मिस गया वन मिस गया भेड़िया, भेड़िया, मनुष्य भेड़िये से भी भया नक, ह-ह-ह ! अब मुझे मत रोकने ! ऐस कुएं बहुत बन सकते हैं ! ह-ह-यन्ने ! अबश्य बनेंगे !

अहाबुरशाह दिमाग फिर गया है तुम्हारा अबूबकर !

मिर्जा अबूबकर (अपना बर टटोलकर बैसता हुआ) दिमाग हा है तो सही कुछ लेकिन मुझे अनुमति बीबिए कि इस दिमाग का नहीं फेंक पाऊं ।

[मिर्जा अबूबकर ठेजी से बाहर जाने लबता है और बाहर से धाटे हुए मिर्जा अबूबकर से टकरा जाता है । दोनों ही ठेजी में होने के कारण टकराने से गिर पड़ते हैं ।]

मिर्जा अबूबकर (उठकर बैठता हुआ) मैं जसा तो था किसी पहाड़ से टकराने और सामने था पड़े थाप बसीघहद !

एक दिन मैंने समझा था जो बलीप्रहद होता है वह बहुत भाग्यवान् होता है, इसलिए मुझे भी भाग्यवान् होना चाहिए। लेकिन आज देखा, बलीप्रहद एक छोटी-सी टक्कर से गिर जाते हैं। बलीप्रहद ! आप मुझसे अप्रसन्न हैं क्योंकि मुझे एक दिन आपको बलीप्रहद कहा जाना पसंद नहीं था—स्वीकार नहीं था—मुझे क्या समी दाह जादों को नहीं था—लेकिन आज हम सारे दाहजादे अपने हृदय के पुन से आपको बलीप्रहद बनाएंगे। है न आपके पास उसबार ? छेदो न कैसे मैं। थोड़ा-सी नौक ही पुसाना ताकि जबल तुम्हारे मस्तक पर टोका गया सकू। हिंदू रीति से। आपको हिंदुस्तान पर राज करना है न इस लिए हिंदू रीति से ही आपको टीका होगा।

मिर्जा जवायक (उठठा हुआ) यह हमारी अतिम टक्कर है भाई जान ! सोन मुगल साम्राज्य को मिट्टी में मिलाने के लिए हमें सज्जते रहे हैं। बलीप्रहदी का धोम मैं सदा के लिए अपने सर पर से दूर फेंकता हू। (अपनी पगड़ी उतारकर फेंका हुआ) जब इसे देवकर भाइयों के दिश में बसना होती है तो यह मुझे हिमालय पर्वत से भारी जान पड़ती है। उठाओ इस। रखो भाईजान अपने सर पर। आप नहीं रखते तो रखो मिर्जा कोषाघ साहय के सर पर। बचकसे बड़े हैं। अग्रजों ने इन्हें बलीप्रहदी का सोम भी दिया था।

महादुरशाह मेरे अग्रे दाहजादो ! यह समय बलीप्रहदी के लिए भगदने का नहीं है। सब मेरे पास आओ। अग्रज

कौन होते हैं किसीको वसीअहद बनानेवासे । समय अपने हाथ से योग्यतम व्यक्ति के मस्तक पर ताब रहेगा । अभी तो हम सबको सर पर कफन बांधकर बचन पर अपना सर बढ़ाने की तैयारी करनी चाहिए । इस समय तो तुम सब आपस में हाथ मिलाओ । दिन से दिन मिलाओ ।

[मिर्जा अबूबकर और मिर्जा अबुबक़र गमै खिचते हैं ।]

[पटाघेप]

दूसरा अंक

पहला दृश्य

[स्थान—पुर्वबत् । समय—राध्या । सम्राट बहादुरशाह 'अकर' एक मसजिद के सहारे बैठे हुए हुक्का पी रहे हैं । उनके हाथ में एक उर्दू भाषा का समाचारपत्र है जिसे वे पढ़ रहे हैं । पीतल महम प्रवेद्य करती है । उसका अनुमन एक चासी कर रही है जिसेके हाथों में एक सराम के बनी मुछही और छटाब पीन का पात्र है । वह मुछही और पात्र रखकर चासी चाती है । बहादुरशाह 'अकर' समाचारपत्र से घाँसें हटाकर पीतल महम की तरफ देखते हैं । तब उनके चेहरे पर प्रसन्नता के भाव बृष्टिगोचर होते हैं । सेकिम जैसे ही मुछही और प्यासे पर नजर पड़ती है त्योंही उनकी घाँसें में रोव दिखाई देता है ।]

बहादुरशाह मसिका !

पीतल महम जहाँपनाह ! साकी सबा मं उपस्थित है ।

बहादुरशाह यह ठीक है कि जब हमार पास कोई काम न पा तब हमें साकी और जाम की आवश्यकता अनुभव होती थी, सेकिम जब तो हम भाठों पहर एक दूसरी ही मदिरा पिए रहते हैं । रज के मद में हमारी घाँसें सदा ही गाल रहती हैं ।

पीतल महम (प्यासे में भरिठ बालजी हुई) किन्तु जहाँपनाह शरीर की शक्ति की भी एक सीमा होती है । रात-दिन रज के मद

कौन होते हैं किसीको बसीमद्द बनानेवासे । समय अपने हाथ से योम्यतम व्यक्ति के मस्तक पर ताज रखेगा । अभी तो हम सबको सर पर कफ़न बाँधकर बसन पर अपना सर बढ़ाने की तैयारी करनी चाहिए । इस समय तो तुम सब आपस में हाथ मिलाओ । दिस से दिस मिलाओ ।

[मिर्जा झूठकर और मिर्जा खचाबख़ नते मिलते हैं ।]

[पटाखेप]

दूसरा अंक

पहला दृश्य

[स्नान—पूर्ववत् । समय—रात्रि । सम्राट बहादुरशाह 'बठर' एक मसब के सहारे बंठे हुए हुक्का पी रहे हैं । उनके हाथ में एक उर्दू भाषा का समाचारपत्र है जिसे वे पढ़ रहे हैं । बीनत महम प्रवेश करती है । उसका अनुमन एक दासी कर रही है जिसके हाथों में एक छटाब के मरी सुटाही और छटाब पीने का पात्र है । वह सुटाही और पात्र रखकर जाती जाती है । बहादुरशाह 'बठर' समाचारपत्र से घाँसें हटाकर बीनत महम की तरफ देखते हैं, तब उनके बेहरे पर प्रसन्नता के भाव दृष्टिगोचर होते हैं, लेकिन बंठे ही सुटाही और प्याले पर मजबूर पड़ती है क्योंकि उनकी घाँसें में रोव दिखाई देता है ।]

बहादुरशाह मसिफा !

बीनत महम जहाँपनाह ! साकी सेवा में उपस्थित है ।

बहादुरशाह यह ठीक है कि जब हमारे पास कोई काम न था तब हमें साकी और जाम की आवश्यकता अनुभव होती थी, लेकिन अब तो हम घाँसें पहर एक दूसरी ही मदिरा पीए रहते हैं । रण के मरु में हमारी घाँसें सदा ही सात रहती हैं ।

बीनत महम (प्याले में मरिच डालती हुई) किन्तु जहाँपनाह, धरीर की शक्ति की भी एक सीमा होती है । रात-दिन रण के मद

में चुर रहना और अपने आराम और मनोरंजन का ध्यान भी ध्यान न रखना क्या उचित है आसीजाह ! आप अपना ध्यान न रखें तो मुझे तो हुजुरेघामा का ध्यान रखना ही चाहिए ।

[जीनत महस मखिरा का पात्र भरकर बहादुरसाह 'जकर' के मुँह की तरफ बढ़ाती है, लेकिन वे उसे अपने हाथ में लेकर नीचे रख बैठे हैं ।]

जीनत महस (घाबों में गधा भरकर) जहांपनाह ने घाब तक साकी का अपमान नहीं किया ।

बहादुरसाह जीनत तुम साकी भी हो और घाम भी । तुम्हें बेक सिया इतना ही पर्याप्त है हमें गधे में चुर होने के लिए । मेे आओ अपनी यह हसकी मखिरा ।

जीनत महस आप थक जाते हैं कार्य करते हुए । निरम दरबार करना सासन प्रबंध की छोटी-बड़ी बातों पर विचार करना युद्ध की गतिविधि की आमकारी प्राप्त करना, नगर में हाथी पर चढ़कर जाना और नागरिकों के सुख-दुःख सुनना और सैनिक खिबरों में पहुँचकर सैनिकों को आस्था सन और प्रोत्साहन देना आदि कितने कार्य करते हैं आप ! आपका बुढ़ापे से जीर्ण शरीर क्या इतना कार्य भार सहस्र सकता है ? इसलिए जीनत साकी मनकर आई है आपको नबीन स्मृति प्रदान करने के लिए ।

[जीनत महस मखिरा-पात्र नीचे से उठाकर फिर बहादुरसाह 'जकर' के मुँह से लपाने का पल करती है ।]

बहादुरसाह : (अपने हाथ से जीनत महस के हाथ से मखिरा-पात्र लेकर

फिर नीचे रखते हुए) चीनत ! हमें किसानके स्नह से दिए हुए पात्र को प्रस्वीकार करते हुए हार्दिक श्रेय होना है बिदेय रूप से उसके हाथ का जो हमारे जीवन का जीवन है लेकिन सत्य यह है कि हमने प्रपञ्च से सी है कि जब इस प्रपञ्च की बेटी को मुह नहीं सगाएंगे । यह मुह सगकर तुरत सर बढ़नी है ।

चीनत महल लेकिन हकीम एहसानुल्लाखा कहते थे कि आपने प्रचानक प्रराव छोड़ दी है, यह आपक स्वास्थ्य के लिए हितकर नहीं है ।

बहादुरशाह कदाचित्, हमें होश में न आने देने में हकीमजो का कुछ साम हो लेकिन तुम्हें क्या साम है मसिका ?

चीनत महल मेरा आपसे प्रपञ्च प्रस्तिस्व ही क्या है ? आपके हित में ही मेरा हित है ।

बहादुरशाह हमारे हित में ही यदि तुम्हारा हित है तो तुम मुझे जीवन भर बेहोश न रखतीं और जब जब हम होश में आए हैं तब तुम हमें फिर से बेहोश करने का यत्न न करतीं ।

चीनत महल जहांपनाह की मजदूरों दासी पर से फिर गई हैं तो मैं यहां से चली जाती हूँ और फिर कभी मुह न दिलाऊंगी ।

[चीनत महल जाने लगती है । बहादुरशाह 'जल' उठकर उठे होते हैं और बढ़कर चीनत महल का हाथ पकड़ते हैं ।]

बहादुरशाह जीवन का बहुत थोड़ा माण ही प्रपञ्च हमें प्राप्त करना रह गया है । इन प्रसिद्ध परिदृश्यों में तो न बूठो चीनत ! बसे तो बूठी हुई प्रियतमा को मनाने में त्री प्रानद प्राप्त

हाता है लेकिन अब हमारे इठने और मनामे के दिन समाप्त हो गए हैं। जीवन के जो दिन हमने बेहोशी में काट दिए आज उनके स्मरण से भी हमें कष्ट होता है। दुःख है सुदा का कि अब हमें अपने वास्तविक कठम्य का ध्यान घाया है लेकिन मुम फिर पुराने पागसपन को जीवित करना चाहती हो इसपर हमें आश्चर्य भी होता है और दुःख भी।

[जीनत बाठे-बाठे रुक जाती है।]

जीनत महल लेकिन, जहापनाह! कई दिनों से मैं आपसे बहुत गंभीर बर्बा करना चाहती थी लेकिन आप रुक ही नहीं मिसाते। एक ही अबसर आपसे खुलकर बात करने का मुझे प्राप्त हो सकता है जब मैं साकी बनू और आप पिए।

बहादुरशाह छि जीनत! तुम समझती हो कि हमसे बात करने के लिए तुम्हें शराब का सहारा लेना आवश्यक है। आज भारत पर अंग्रेजों का जो प्रभुत्व स्थापित हो सका है इसका कुछ उत्तरदायित्व इस शराब को भी है। जब मुगल सम्राटों का स्थान रणभूमि में होना चाहिए था तब वे सुबुमार साकियों के हाथ से जाम पीने में अपने महलों में व्यतीत करते रहे जब उनके हाथ में तलवार होनी चाहिए थी तब उनके हाथ में शराब का व्यासा रहा। हम लोग होश में रहते तो संसार की किसी शक्ति का साहस न था कि वह मुगल साम्राज्य की एक गज भूमि पर भी अभिमार कर पाती। इस प्राणपाठक वस्तु की दासता में हम नहीं पड़ेंगे,

कभी नहीं पढ़ेंगे ।

[बहादुरशाह 'बज़र' खीनत महस का हाथ छोड़कर फर्श पर रसी हुई गुलाही को साठ मारते हैं ।]

खीनत महस बहादुरशाह न खीनत को अपनी मज़रों से गिरा दिया है ।

बहादुरशाह नहीं खीनत तुम अपने मापको पतन क पप पर न न जाओ तो किसकी धक्ति है जो हमारी मज़रों से तुम्हारे सम्मान को कम कर सके । हम तुमको साबो क रूप में नहीं देखना चाहते । हम तो तुमको उस रूप में देखना चाहते हैं जिसे हिन्दू लोग रजबडी कहते हैं जो सिंह की सवारी करती है जिसक हाथ में तलवार होती है, जो घमुरों का रक्त पोती है । बहुमुख्य वस्त्राभूषणों में राजपूतकर धरने सौन्दर्य के आकर्षण से अपने प्रियतम पर विजय प्राप्त करने की आकांक्षा रखनेवासी रमणी धय हमसे सम्मान नहीं पा सकती, हम राजपूत वामाओं की भाँति रंग क साज में सजकर रणभूमि में पवापन करने वाली तुम्हें देखना चाहते हैं ।

खीनत महस मैं जो कुछ हूँ मानकी ही बनाई हुई हूँ ।

बहादुरशाह लेकिन हम पहले जो थे, वे तुम्हारे बनाए हुए थे, घोर माज जो बन गए हैं उसमें भी किसी सीमा तक तुम्हारा हाथ है । तुमने ही कहा था, "घंघड़ हमारे दागु हैं वे हमारे साक्षात्कृत को नियम गए हैं घोर हमारे नाम-आम के राज बिहों से भी वे हमें बंधित करके छोड़ने ।" धय जब तुम्हारी प्रेरणा से हमने घंघड़ों से युद्ध छेड़ दिया है तो तुम

हमें धराब के नखे में गंके करना चाहती हो ?

श्रीमत् महत्स मैं जानती हूँ, जहाँपनाह, कि मैंने ही आपको इस भयानक स्थिति में डाल दिया है।

जहाँपुरशाह तुम इसे भयानक स्थिति कहती हो ? इसमें क्या नक़्सा क्या है ? तोपों का पर्जन्य सुनकर हमें वास्तविक आनन्द प्राप्त होता है। आज हमारे पौरुष की प्रसन्नता की सीमा नहीं है। मुगल राजसत्ता की धार से आज से ७२ वर्ष पूर्व एक हसका-सा प्रयास अंग्रेजों को भारत से निकाल-सने के लिए हुआ था और साहस, दूरदर्शिता के अभाव और पारस्परिक विद्वेष ने जब उस प्रयास को सफल न होन दिया तो हम लोग शास्ता बैठ गए। ये जानकर भारत के नन्दन बन में खुलकर विचरने लगे। ये चर गए मुगल साम्राज्य को और भारत की सुख-समृद्धि को। आज इनको हम अपने अमन से निकाल बाहर करना चाहते हैं तो ये हमपर घुनी पंजों से आक्रमण कर रहे हैं। ठीक है आज अंग्रेजों की तोपें हमपर अग्निबर्षा कर रही हैं, हमारी घोषेँ इसका उत्तर दे रही हैं किन्तु यह स्थिति हमें भयानक नहीं स्वाभाविक जान पड़ती है। जब हमारी सेनाएँ रण माद से आकाश को प्रकंपित करते हुए भागे बढ़ती हैं तो हमारे आनन्द की सीमा नहीं रहती।

श्रीमत् महत्स लेकिन जहाँपनाह जिस उद्देश्य से यह घुनी खेस खेसने की प्रेरणा मैंने आपको दी, वह तो पूरा नहीं हो रहा। मैं चाहती थी कि आप भारत के वास्तविक सम्राट बनें किन्तु बात उसटी ही हो रही है।

बहादुरशाह जसटी कैसे हो रही है ?

सीतल महस जहांपनाह ने स्वयं ही मुबल सत्ता के मृत्यु-सैक पर हस्ताक्षर कर दिए हैं ।

बहादुरशाह यह तुम क्या कह रही हो ? तुम्हें ऐसा भ्रम क्यों हुआ है ? भलीगढ़, मैनपुरी, मसीरबाद, बरेली, ताहबहाबाद, मुरादाबाद, बदायूं, घाजमगढ़, योरसपुर, बनारस, बीनपुर, इलाहाबाद, कानपुर, सधनऊ, झांसी और नामक आदि सभी स्थानों पर अंग्रेजों के विरुद्ध विप्लव की जो उबासा प्रकटित हुई है उसमें सभी स्थानों पर विप्लवी हमारे झंडे के नीचे एकत्र हुए हैं । नाना साहब ने कानपुर में और महारानी सद्मीबाई ने झांसी में घोषणा की 'खस्क छुदा का राज बादशाह का' । सभी स्थानों पर हमारे सम्मान में १०१ तोपों की सलामी दी गई । रहेनसह के इहेसों ने भी जो सम्बी अयि से हमारे पत्र रहे हैं हमारी प्रभुसत्ता स्वीकार कर अंग्रेजों से युद्ध प्रारम्भ किया है । जहां-जहां युद्ध प्रारम्भ हुआ सैनिक 'पसो दिलो' का नाच मंजाते हुए वहां से पस बढ़ और हमारी सेवा में उपस्थित हो गए ।

सीतल महस फिर भी, जहांपनाह !

बहादुरशाह पहले हमारी पूरी मातृ मुता ! जहां-जहां अंग्रेजों के राजाना पर विप्लवी अयिकार पर सक उन्हें उन्हें सारकर हमारे राजाने में जमा किया, जिससे युद्ध की माब-अपकृताओं की पूर्ति की जा रही है । हमें अपने अयिगत सम्मान की चाह नहीं है, लेकिन जब भारत के विभिन्न

स्वानों से घाई हुई सनाएँ, 'भारत-सम्राट बहादुरशाह 'अफ़र' की जय' के नारों से दिशाओं को गुञ्चित करती हैं तो श्रम फूले नहीं समाते । असल में यह सम्मान हमारी अक्षिपन हस्ती का नहीं है बल्कि उस वीरता उदारता और स्नेह का है जो हमारे पूर्वजों के चरित्र की विशेषताएँ हैं । हमें संतोष है बल्कि इसपर गव है कि हमारे एक संकेत पर सहस्रों सैनिक अपने प्राण झुटाने को प्रस्तुत हैं ।

खीमत महस : और जहाँपनाह इन सैनिकों के हाथ में बंदी हैं । सम्राट की जय ये अवश्य बोसते हैं लेकिन सम्राट के हाथ में अधिकार न रखकर स्वयं ही भारत के वास्तविक शासक बने हुए हैं । इन्होंने सेना तथा राज्य की प्रबंधकारिणी समिति के नाम से दस सदस्यों की समिति बनाकर सम्पूर्ण सत्ता अपने हाथ में कर ली है ।

बहादुरशाह नहीं, नहीं हमने स्वयं ही राज्य प्रबन्ध की मुख्यबस्या और युद्ध के सुचारु संभासन के लिए इस समिति को स्थापित किया है ।

खीमत महस आप ऐसा कहकर अपने बिल को आदरस्त कर सकते हैं लेकिन वास्तविकता यह है कि आज सम्राट सैनिकों के हाथ की बन्धपुतली है जिस प्रकार सम्राट श्रीरंगदेव के पदचात सभी मुसल बादशाह अपने किसी वजीर या सनातित के हाथ के जिसने थे । खीमत महस अपनेजों को भारत के निर्वासित बेखना पाट्टी है लेकिन इस मुख्य पर नहीं के सम्राट के हाथ में नाम-मात्र को भी सत्ता नहीं रहे ।

बहादुरगाह यही बात समझाने के लिए तुम हमें प्रायः याम
 पिताकर पहल हमारे होस छीन सेना बाहती थीं मसिका !
 जानता हूँ जीनत, कि तुम अधिकांश की—प्रभुता की
 भूखी हो—धीर यह स्वामाधिक भी है शायद हमारे मन
 में भी प्रभुता की लिप्सा हो, मकिन जो अधिकांश धीर
 सम्मान सेवा, स्नेह और उदारता से प्राप्त किया जाता है,
 वही स्थायी होता है। हम प्रारम्भ ही से जानते रहे हैं कि
 जो उत्तरदायित्व प्रजा ने हमपर सौंपा है, वह सरस नहीं
 है। दाहबादों में अग्रजों से युद्ध करने का उत्साह है मकिन
 उनमें वह चरित्र-व्यस नहीं जो शासन प्रबन्ध धीर मुठ-
 संचालन में आवश्यक है। वे समझते हैं पर बड़े-बिठाए
 राज्य फिर से प्राप्त हो गया।

जोनत भूख दाहबादों की अयोग्यता का दृढ़ धारण क्यों भुगतें ?
 बहादुरगाह यदि हमहीं योग्य हाते तो दाहबादों को भी योग्य
 बनाते न ? हमारे अड़िके से कापनेबासे हाथों में न तो रण-
 भूमि में ससभार धामने की शक्ति है, न शासन प्रबन्ध का
 दृढ़ धामन की। हमें ऐसा उपाय करना आवश्यक हो
 गया कि शासन प्रबन्ध धीर मुठ-संचालन व्यवस्थापक
 हो सक। इसीके लिए हमन र्ग समिति या संगठन किया
 है। हमें इसके लिए विवरा नहीं किया गया। यह सच
 है कि भुगत-साम्राज्य के उस विनाश और भव्य मवन की,
 या संसार को धरित किए हुए या दीवारों घूस में मिस
 चुरी हैं, सब उसे पुनर्निर्मित नहीं किया जा सकटा। अतः
 इस समय अग्रजों से जो युद्ध हो रहा है वह भुगत साम्राज्य

को पुनर्स्थापित करने के लिए नहीं है। वह प्रम कभी स्थापित नहीं होगा। होगा तो उसका रूप ही कुछ और होगा।

जीनत महस क्या रूप होया, जहाँपनाह !

बहादुरशाह अब जो राज्य स्थापित होया वह प्रजा का राज्य होगा। प्रजा ही इस युद्ध की सङ्ग रही है, इसलिये हमने शासन प्रबन्ध और युद्ध-संभालन दोनों काय प्रजा को सौंप दिए हैं। समिति की स्थापना इसी कारण हुई है। समिति ने यह स्वीकार किया है कि प्रत्येक अस्तित्व निर्णय पर हमारी स्वीकृति आवश्यक है।

जीनत महस किन्तु यदि समिति और आपमें मतभेद हुआ तो क्या वास्तव में समिति आपके आदेश का पालन करेगी ? मैं कहती हूँ नहीं। इसलिये मैं यह भी कहती हूँ कि प्रजा के प्रतिनिधियों को शासन में सम्मिलित करना अपने सर्व नाश को आमन्त्रित करना है।

बहादुरशाह मुझे तरस आता है तुम्हारी मादानी पर जोनत। हमें अंग्रेजों की दासता तो स्वीकार हो जाती है और अपने ही देश के व्यक्तियों का शासन-प्रबन्ध में सम्मिलित होना नहीं ! यह तुम्हारी बिबिध मनोभावना है। जीनत, पहले तो तुम ऐसी नहीं थीं। आज पड़ता है, तुम्हें बहकाया जाता है।

जीनत महस जहाँपनाह मुझे भय है कि अंग्रेजों के विरुद्ध यह विप्लव नहीं होगा।

बहादुरशाह हम इस विप्लव की दुर्बलताओं से अपरिचित नहीं

हैं। फिर भी हम इन विप्लव की अपार शक्ति को भी जानते हैं। पञ्जाब के कुछ राजा, नेपाल के महाराणा प्राज प्रप्रेजों को बन, जन और शास्त्रों से सहायता दे रहे हैं लेकिन भारत की प्रजा एकमत से विप्लव के साथ हैं। ग्यासियर के महाराजा ने विप्लव का साथ नहीं दिया लेकिन उनकी सेना विप्लवियों की समर्थक है, इंदौर में भी वहाँ के महाराजा की इच्छा के विरुद्ध सेना ने प्रप्रेजों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया है। राजस्थान के कुछ राजाओं ने प्रप्रेजों की सहायता के लिए जो अपनी सेनाएँ भेजी थी वे स्वाधीनता के समयकों में सम्मिलित हो गई हैं। पूरा दूधमलण्ड, घग्घ गंगा यमुना के बीच का दोषाज—कानपुर और इलाहाबाद सहित सब स्वतंत्र है। महारानी सखीबाई ने झाँसी में प्रप्रेजों की शक्ति को घुस खटा दी है। बिहार का सिह कुंभर दिस्ती में भी हमारे सैनिक प्रप्रेजों को इतने दिनों से छका रहे हैं। विप्लव की सफलता असंभव है यह सोचना बड़ा तब उचित है ?

जोमत महल किंतु जहाँपनाह इन विपरीत परिस्थितियों में प्रप्रेजा के उत्साह में उनकी प्राजा में, उनके प्रयत्नों में रती भर बन्नी नहीं आई है। उनकी प्रतिम विजय पर केवल उगड़े ही विश्वास नहीं है अपितु भारत के राजाओं को विनोय रूप से घोर प्रजा में से भी घनेक को उनकी प्रप्रेयता पर भरोसा है। घग्घया हैदराबाद के निजाम, राजस्थान के राजा सोण ग्यासियर, इंदौर और बड़ौदा

के मराठा नरेश आज तक कभी के हमारे मंत्र के नीचे दिखाई देते। जहाँ-तहाँ धर्मियों के विपक्ष बिद्रोह तो उठ सका हुआ है और हिंसक सैनिकों एवं नागरिकों की भीड़ों में धर्मियों को, जिनमें स्त्री-बच्चे भी थे क्रूरता से मौत के घाट उतार दिया है किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि धर्मियों की सत्ता समाप्त हो गई है। भारतवासियों के रोप के प्रथम प्रसङ्ग को हमें सहकर उन्हेनि समाप्त किया है। उनका इतने दिनों तक इस विपत्ति के तूफान में टिके रहना ही उनकी विजय है और ज्यों-ज्यों हमें पूर्ण सफलता प्राप्त करने में बिसंब हो रहा है अर्थात् यह मुद मवा हो रहा है, धर्मियों की स्थितिमें सुधार हो रहा है। मुझे आश्चर्य हो रही है कि अंत में धर्म ही विजयी होवे।

बहादुरशाह खुदा को यही मंजूर है तो यही होमे दो।

बीनत महल वह तो संभवतः होगा ही लेकिन क्यों नहीं हम अपनी रदा का प्रबंध करें ?

बहादुरशाह रदा का प्रबंध किस प्रकार ?

बीनत महल धर्मियों से संधि करके। मिर्जा इसाहीबख्त और हफीम एहसानुस्लाफा कहते हैं कि उन्हें विश्वस्त रूप से ज्ञात हुआ है कि धर्मों के धासक-दस का विश्वास है कि सम्राट स्वच्छा से इन विप्लव में सम्मिलित नहीं हुए, उन्हें बिद्रोहियों ने बसपूर्वक अपनी तरफ खींच लिया है। धर्मों यह भी बचन देने को प्रस्तुत हैं कि यदि सम्राट इस विप्लव में पृथक् हो जाए तो उनके हितों और सम्मान की वे रदा करेंगे। उनकी पंजाब थामू रहेगी उनके पिता कायम

रहेंगे ।

बहादुरशाह लेकिन यदि धंधेजों को विश्वास है कि प्रतिम विजय उन्हें प्राप्त होगी, तब किसलिए वे मुझसे सधि करना चाहते हैं ? वे विजय प्राप्त करें और मुझसे सधि के प्रतिम गामसेवा को भी मीठ के घाट उतारकर भारत पर निष्कण्टक राज्य करें । भारत की सम्पत्ति से इंग्लैंड को समृद्ध करें । हिंदू और मुसलमानों को परस्पर लडाकर शताब्दियों तक इस देश का रून चुसें ।

खीमत महस उनका विश्वास है कि यदि इस समय बहादुरशाह धंधेजों के समर्थक बन जाएं तो भारत में हा रहा भारतवासियों और धंधेजों का तरसहार किसी सीमा तक रुक जाएगा । मुगल सम्राट के नाम पर जो एकता भारत-भर के विप्लवियों में स्थापित हुई है वह ताज के फिसले की भांति छिन्न-भिन्न हो जाएगी । धंधेज सम्राट की कृपा से सदा श्रेणी रहेंगे ।

बहादुरशाह और उस श्रेण को उसी प्रकार चुनाएँ जिस प्रकार राज ठप चुनाव रहे हैं । धंधेजों में कृतमता की भाषना कितनी है, इसे मुगल राजवंश ही नहीं, भारत का बच्चा-बच्चा जानना है । केवल हम ही नहीं बल्कि बंगाल और प्रबन्ध के नवाब पञ्जाब में महाराणा रणबीरसिंह के बंगाल, महाराष्ट्र का वेगबा बदा, भायपुर के भोंसले, विप के समीर किन-किन का नाम गिनाऊँ, सभी धंधेजों की मित्रता का मूल्य चुना चुने हैं । उनके बचनों पर विश्वास करके अपने देश के प्रति विश्वास 'अच्छा' बरेगा ऐसा

मूर्ख वह नहीं है।

जीतत महल : आपके पदबाट आपके जीनत दर-दर भीख मांगती फिरे, क्या यही आपके स्वीकार है ?

बहादुरशाह : भारत की सम्राज्ञी दर-दर भीख मांगेगी उस दिन यह भरती और आकाश कायम नहीं रहेंगे। जब तक वह जीवित रहेगी, तब तक आकाश के नक्षत्र भी उसके घामे मस्तक मुकाएंगे।

जीतत महल : कल्पना और सत्य में बहुत अंतर होता है। सम्राट औरंगजेब ने चाहा था कि उनकी मृत्यु के पश्चात् उनकी प्रियतमा उदयपुरी बेगम सुख और सम्मान के साथ रह सके और इसीलिए उन्होंने बसीयत करके अपना राज्य चारों छाह्नादों में विभक्त कर उस इतिहास का दोहराया जाना रोकना चाहा जिसका सूत्रपात स्वयं उन्होंने किया था—लेकिन हुआ क्या ? वही भाई ने भाई का खून किया। उदयपुरी बेगम के पुत्र को भी संसार से बिदा सगी पड़ी। उसके पदबाट उदयपुरी की हस्ती ही क्या रह गई। आप अग्रजो को भारत से निकाल भी पाए तब भी मेरी और अर्वाचक की रक्षा तो आप नहीं कर पाएंगे। जहांपनाह : आपका मुझपर जा स्नेह रहा है मैं उसीकी शपथ आपको दिमाती हूँ। आप मेरी बात पर ध्यान दीजिए।

बहादुरशाह : मुनो जीतत, हमारे दुर्भाग्यपूर्ण जीवन का एकमात्र गुण तुम हो—एक विस्तृत रेमिस्तान में जैसे कोई एक करना फूट पड़ा हो। तुम्हारी सेवा और तुम्हारा स्नेह

पाकर मैं घब्र हो उठा। जमाने ने जितने भाव मेरे हृदय में किए उन्हें तुम्हारे बरद हाथों के स्पष्ट ने मर दिया। तुम्हारे धीरे राजसिंहासन दोनों में से एक को चुनने के लिए माग्य यदि मुझे चाहेगा देता तो मैं तुम्हें ही चुनता।

जीनत महल घासीनाह आपकी प्रत्येक मुस्वान में मैंने प्रशंसा देखा है, आपकी प्रत्येक सांस में मैंने वसंत का सौरभ पाया है, आपकी कृपा कोर बांदनी की भाँति शीतल रही है। आपने मेरी सारी कमियाँ पूज की हैं, अब आप मुझपर निर्दय हो जाएंगी, इसपर मैं विवश नहीं करती। [जीनत महल बहानुरशाह 'बकर' का हाथ पकड़कर बैठी है।]

जीनत महल बैठिए, जहाँपनाह! कुछ सगों के लिए तोपों के मर्जन और तसबारों की आवाजों को सुन जाए। फिर उसी संसार में जाए जिसमें आप हों और मैं हूँ और सामने प्रीत से भरे हुए आम हों। हमारा जीवन प्रेम की रागिनी बन जाए।

बहानुरशाह नहीं जीनत अब यह असमय की राहनाई मत बजाओ।

जीनत महल मुझे कोई अपराध हुआ है जिसके कारण आप मुझे अनिदित्त मरिचक के अणुकार में फँक देना चाहते हैं, जहाँ हिंसक जंतु मुझे मास-नोबकर खा जाएंगे, जहाँ प्रत्येक सांस में सहस्रों वृद्धियों का दर्शन भरा होगा। (बहानुरशाह 'बकर' की बीव में सर रखत हुए) यदि इतना ही क्रोध है मुझपर तो अपने हाथ से ही गला घोट दीजिए मेरा।

बहानुरशाह जीनत तुम हमारे पास होती हो तो हमें ऐसा जान

पढ़ता है कि संसार की नियामतें हमारी गोब में पड़ी हैं, लेकिन एक चीज तुमसे भी बड़ी है उसके लिए यदि हमें तुम्हारा भी बलिदान करना पड़े तो हम करेंगे। जानती हो वह वस्तु क्या है? वह है हमारा देश। हमारा धार्मिक सुनकर अपने देश की स्वाधीनता के लिए प्राण देने के लिए जब सहस्रों व्यक्ति सर पर कफन बांधकर निकस पड़े हैं तो क्या हम मुह छुपाए बैठ रहें या उनकी पीठ में छुरा भोंकें? तुमने हमारे लिए बहुत कुरबानियाँ की हैं खीनठ! जब जीवन की अंतिम डगर पर चमते हुए हम तुमसे अंतिम कुरबानी चाहते हैं। सबीषता से ऊपर उठो, देश की पुकार सुनो अपने घौर अपनी संतान के सुख-दुख को देश के सुख-दुख में बिसीन कर दो। हो सकता है इस संघर्ष में मुगल साम्राज्य का अंतिम बिह्व भी मिट जाए, हो सकता है हमारे पास सर छुपाने के लिए एक भोंपड़ी भी न रहे लेकिन हमारा देश जीवित रहना चाहिए।

[खीनठ गोब से उठकर बैठती है।]

शोभत महल जहाँपनाह आप घावदों के जिस ऊँचे संसार की बात करते हैं वहाँ तक उड़ पाना मेरे लिए संभव नहीं है। मैं तो स्त्री हूँ, मेरा पुत्र मेरा पति है मेरा देश मेरा पुत्र है। इससे अधिक मेरा संसार नहीं है। जहाँपनाह, अंग्रेज अर्वाचक को बसीघहद मानने को संसार हो गए हैं, फिर किसलिए यह रक्त-वर्षा बरसि जाती है?

जहाँपनाह तुम साधारण स्त्री नहीं हो शोभत, तुम हो मसिवा

ए हिंदुस्तान । हिंदुस्तान का प्रत्येक व्यक्ति तुम्हारी संतान है । बरोड़ों जवाबदारी की भी दुरवानी करनी पड़े तो करनी होगी ।

[एक बासी का प्रवेद्य]

बासी जहांपनाह, हकीम एहसानुम्मात्ता हुन्दुरेमाना के दर्शन करना चाहते हैं ।

बहादुरसाह माने दो उन्हें ।

[बासी का प्रस्थान]

बहादुरसाह खीनत, मनुष्य और पशु में अंतर क्या है, यह जानती हो ? पशु केवल अपना मुँह-दुस देख पाता है लेकिन इंसान इसलिए इन्सान है कि यह परामे मुँह-दुस का ध्यान भी रखता है । वह दूसरों के मुँह में प्रवेश होता है और उनके दुखों से उसका हृदय व्यथित होता है । अपने और अपने परिवार के वर्तमान और भविष्य को सुखी देखना और उसके लिए प्रयत्न करना भी मनुष्य के लिए स्वाभाविक है लेकिन इतना ही उसका कर्तव्य नहीं है । उसका प्रत्येक ऐसा कर्म, जिससे उसे या उसके परिवार को तो ऐहिक सुख प्राप्त हो जाए लेकिन अन्य लोगों को—समाज या देश को—हानि पहुँचे, पाप है, और पाप है । तुम्हारे हाथों हम ऐसा पाप नहीं होने देंगे । तुम अपने महसूस में प्रकाश करने के लिए सासों बुटियाओं में धंधकार भरने का नीच काम नहीं करोगी हमें तुमसे यही आशा है ।

[हकीम एहसानुम्मात्ता का प्रवेद्य । उसके हाथ में एक प्रार्थना पत्र है ।]

हकीम एहसानुस्लाखा (कोनिष करता हुआ) जहाँपनाह को हकीम एहसानुस्लाखा कोनिष भेदा करता है।

बहादुरशाह भाषो हकीमजी बैठो।

[हकीम एहसानुस्लाखा स्थान ग्रहण करता है।]

बहादुरशाह कहो किसलिए भ्रामा हुआ।

हकीम एहसानुस्लाखा जहाँपनाह भव सम्राट जहाँगीर के समय का सोने की खंजीर से बंधा न्याय का घटा तो है नहीं कि आपकी प्रजा खंजीर खींचकर घटा बजाकर अपनी पुकार अपने न्यायकर्ता के पास पहुँचा सके। एक प्रजाजन ने मुझे ही न्याय का घंटा बना लिया है।

बहादुरशाह बात क्या है साफ कहो!

हकीम एहसानुस्लाखा आपकी प्रजा में से एक व्यक्ति आपकी सेवा में कुछ निवेदन करना चाहता था।

बहादुरशाह हमारे प्रजा में से प्रत्येक व्यक्ति को कुछ भी निवेदन करना हो उसके लिए हमारे द्वार खुले हुए हैं। वह था सचता है।

हकीम एहसानुस्लाखा सेफिन उसे भय था कि यदि वह स्वयं निवेदन करने आएगा तो उसकी जान सतरे में पड़ जाएगी।

बहादुरशाह ऐसा क्यों?

हकीम एहसानुस्लाखा जिनपर आपने प्रजा की रक्षा का भार सौंपा है वे स्वयं ही प्रजा के भेदाक यम जाएं तो किसकी जान की खतर है?

बहादुरशाह : हमारा न्याय भवराधी को दामा नहीं करता, चाहे वह कोई भी हो।

हकीम एहसानुस्ताख़ा मोहल्मा बहरामख़ा में रहनेवासे एक एहसानुसहक़ नाम के ब्यक्ति का यह प्रायना-पत्र है।

बहादुरशाह आप ही पढ़कर सुनाए।

हकीम एहसानुस्ताख़ा लिखा है—जहाँपनाह की सेवा में निवेदन है कि मिर्जा भबूबकर साहब, शाहजादी फ़रमुदाजमानी के घर में।

खीनत महल शाहजादी फ़रमुदाजमानी वह आपकी उस दासी की सड़की जिसपर आपकी कमी कृपा रही थी! वह अपने-आपको शाहजादी कहती है ?

हकीम एहसानुस्ताख़ा क्यों न कहेंगी, आखिर वह है तो शाहजाह की ही बेटी। यह उसका दुर्भाग्य है कि उसकी माँ एक सामारण दासी थी फिर भी उसकी नसों में शाही रक्त तो है ही। उस शाही ख़ानदान से बड़ीफा भी अन्य शाहजादे-शाहजादियों की भाँति प्राप्त होता ही है।

बहादुरशाह (कृप खोप से) यह आप प्रायना-पत्र सुना रहे हैं या शाही ख़ानदान के इतिहास की बिबेचना कर रहे हैं ?

हकीम एहसानुस्ताख़ा अपनी घृष्टता के लिए मैं जहाँपनाह से क्षमा चाहता हूँ।

बहादुरशाह कोई बात नहीं। प्रत्येक ब्यक्ति के जीवन में कम-जोरी क दाग़ भासे हैं। एक बार सम्राट जहाँगीर को जब कि वह शाहजादा शमीम भ एक सामारण मर्तकी धनार बन्सी के दौलत न पागस कर दिया था।

खीनत महल लेकिन उस बेधारी को तो दीवार में चुन दिया

गया था ।

बहादुरशाह : हाँ ससीम और बहादुरशाह की स्थिति में अन्तर था—वे शाहजादा थे और हम बाबशाह । हमपर किसका नियन्त्रण रह सकता था । जवागी ने अपना निर्सम्भ शेष सेना ।

खीनत महल लेकिन जहाँपनाह, जूठी पसल की भाँति फेंके जाने से तो बीमार में घुला जाना अधिक पीरवमय है । अन्तारकाली के प्यार को समाना याद रहेगा लेकिन फरखुदा जमानी की माँ के नाम पर इतिहास धुकेगा ।

बहादुरशाह लेकिन उसे धुक्ना तो हमारे नाम पर चाहिए । जो कुछ हुआ उसमें फरखुदाजमानी की माँ का अपराध क्या है ? वह हमारे हरम में दासी थी—मीन वंश में जन्मी थी यह भी उसका अपराध न था, खुदा ने उसे मुन्दर बनाया था यह भी उसका अपराध न था ।

खीनत महल और जहाँपनाह को सौन्दर्य का पागली हृदय खुदा ने दिया है, यह भी उसका अपराध नहीं था ।

बहादुरशाह लेकिन, वह मसिवा से प्रतिद्वन्द्विता करने बसी थी यही उसका अपराध था । धाम वह छाही हरम में न होकर एकाकी जीवन व्यतीत कर रही है ।

खीनत महल उसने जहाँपनाह को भसे ही क्षमा कर दिया हो क्योंकि वह केवल दासी थी—वैसे से सेवा येचनेवासी उसमें प्रेम भी बैध दिया तो कीन-सी नई बात हुई लेकिन उसकी बेटी ने सम्राट को क्षमा नहीं किया । यह अपने शपको दाहसादी कहकर भी अपने मनमाने बाल-बसम

से घाही बग को सजाने में ही आनन्द पा रही है। यह उसका बदला लेने का तरीका है।

बहादुरसाह खैर, जाने दो इन बातों को, हकीमजी, प्रायना पत्र सुनाइए।

हकीम एहसानुस्ताख़ा मिर्जा अबूबकर, साहजादी फ़रख़ुदा जमानी के घर में, जो बहरामसा के विराहे पर है, आया करते हैं। किस भावना से जाते हैं यह तो जहाँपनाह जानते ही हैं।

बहादुरसाह ठहरो हकीमजी! (बीनत महम से) किसीको भेज कर साहजादा अबूबकर को बुलवाओ।

बीनत महम ओ आमा जहाँपनाह! मैं स्वयं जाती हूँ।

[बीनत महम का प्रस्थान]

बहादुरसाह (हकीम एहसानुस्ताख़ा से) आये पड़िए।

हकीम एहसानुस्ताख़ा मदिरा-पान के पदभात् कोई व्यक्ति जिस प्रकार का आचरण कर सकता है, उसी प्रकार का ये करते हैं। कम मय्याह के पूर्व वह साहजादी के घर पर आए और तिन भर मदिरा पान करते रहे और संगीत सुनते रहे। सूर्यास्त के डेढ़ घंटे के उपरान्त वह जाने के लिए तैयार हुए किन्तु संयोगवश गसी के दरवाजे की चाभी खोनीदार के पास थी। उसके तुरन्त न पहुँचने के कारण साहजादा को विराम्य हो गया। उन्हें जल्दी थी, अतः उन्होंने सेवर पर, जो अपने द्वार पर मित्रों सहित बैठा था, पिस्तौल पताई, यद्यपि इसके लिए कोई कारण न था। साहजादा ने बहुत कोलाहल किया और अचानक वहाँ और

सेवक के घर में प्रवेश करके उसे सूट सेना चाहा । सेवक ने द्वार बंद कर लिया । मिर्जा ने द्वार पर तलवार के कई वार किए और अपने सेवकों को दीवारों तथा द्वार पर पत्थर बरसाने का आदेश दिया । उन्होंने सेना को भी भर सूट सेने का आदेश दिया । ऊँच बाजार का चौकीदार वहाँ आ पहुँचा, शाहजादा ने उसे भी मार-मारकर बच-मरा कर दिया ।

[बहादुरशाह 'बफर' छठकर बचनी से कमरे में भूतने लगते हैं ।]

हकीम एहसानुस्लाखा : मुझे खेद है जहाँपनाह, कि यह प्रार्थना-पत्र साबर मने आपकी बेचैन कर दिया है । इसमें कोई नई बात तो है नहीं, शाहजादों के लिए साधारण-सी बात है ।

बहादुरशाह : यही तो दुःख की बात है कि जिन करतूतों पर एक सम्य मनुष्य का सर सज्जा से भुज जाना चाहिए, वे शाहजादों के लिए साधारण हैं । नीच और बाबाल लोग इनके साधियों में हैं । हमारे सामने देव और भुगसबद के सम्मान के लिए प्राण देने की यात परते हैं और अपने साधियों में पहुँचकर सब-कुछ भूस जाते हैं । अप्रेतों से मुक्त करने के लिए इन लोगों को सेनापतित्व सौंपा गया है इससे बड़ा दुर्भाग्य भारत का क्या हो सकता है ?

हकीम एहसानुस्लाखा : और एने सेनापतित्व में हमें कितनी सफलता प्राप्त हो सकती है, इसका अनुमान जहाँपनाह सगा सकते हैं । इसमें सन्देह नहीं कि देव के अनेक नगरों से सैनिकों की बहुत बड़ी संख्या विस्ती में जमा हो गई है

सेकिन कौन है जो उन्हें एक सूत्र में एकत्र करे। युद्ध की कोई निश्चित दिशा नहीं कोई निश्चित योजना नहीं। अंग्रेजों की शक्ति दिस्ती की पहारदीवारी के बाहर बढ़ती ही जा रही है और मुना है अब यह-अंजक तोपें भी घाने ही वाली हैं। इस स्थिति में जहांपनाह मविष्य के अक्षरों का पढ़ से सकते हैं। अब भी समय है कि आप अपने आपको विद्रोहियों से अलग कर सें।

[साहजादा मिर्जा अदुबकर का प्रवेश]

मिर्जा अदुबकर (कोनिष्ठ करवा हुआ) जहांपनाह न सेवक को किसलिए भाव किया है ?

बहादुरशाह (हकीम एहसानुस्ताछा से) हकीमजी साहजादा को प्राचना-यत्र दो।

[हकीम एहसानुस्ताछा प्राचना-यत्र मिर्जा अदुबकर को देता है।]

बहादुरशाह (मिर्जा अदुबकर से) पढ़ो इसे।

[मिर्जा अदुबकर मन ही मन प्राचना-यत्र को पढ़ता है और उसके अहरे पर रोष के भाव बढ़ते जाते हैं।]

बहादुरशाह मुगल राजवंश का नाम रोशन हो रहा है हमारे योग्य साहजादों के कारण।

मिर्जा अदुबकर (हकीम एहसानुस्ताछा की तरफ अक्षुब्ध देखता हुआ) तो आप साए हैं इस प्राचना-यत्र को ?

बहादुरशाह यह भाव करने की बात नहीं साहजादा, नाम से इत मरने की बात है।

मिर्जा अदुबकर जहांपनाह, एक अदुबकर को ही नाम से इत मरने के लिए क्यों कहा जा रहा है। मुगल राजवंश में यदि

धाम्त्व में धर्म और हया होती, धारम-सम्मान का लेस भी होता तो प्रबूबकर जैसे दवान शाहजादों के परिधान में पलते ही क्यों ? और क्यों शाहजादी फ़रसुदाजमानी ही संसार में प्रयत्नित होतीं । मुगस रक्त भारत के दिल्ली नगर में ही नहीं और भी न जाने कहां-कहां फ़ीलों की तरह बिसबिसा रहा है, अब किस किसको धर्म से दूब मरने के लिए कहेंगे ? बहादुरशाह शाहजादा प्रबूबकर, हम तुम्हारा प्रसाप नहीं सुनना चाहते । तुम अपराधी हो ।

निर्सा प्रबूबकर अपराधी हू ? किस बात का ? धाराव पीने का ? शाहजादी फ़रसुदाजमानी के घर जाने का ? धाराव पीना धम के विरुद्ध है फिर भी शासन के न्याय में यह दण्ड नीय नहीं है । तुदा का न्याय अब होगा तब वह प्रबूबकर को दण्ड देगा लेकिन उस समय जहाँपनाह भी अपराधियों की पंक्ति में होंगे और भी हमारे प्रमेक पूर्वज होंगे और फ़रसुदा के घर जाना अपराध है तो उसकी मां को महम में सुसानेवासा भी अपराधी है । जो अपराध सर पर राज मुकुट होने से दाम्य हो जाता है, वह राजमुकुटहीन ब्यक्ति के लिए भी दाम्य होना चाहिए ।

हकीम एहसानुस्साला शाहजादा हुजूर आपको जहाँपनाह क सम्मान को ध्यान में रखकर बोलना चाहिए ।

बहादुरशाह नहीं हकीम जी, इसे बोलने दो । यह इस जमाने की भावाज है, इसके मुह स इतिहास बोलता है । निदबय ही शाहजादे तुम्हारा पिता न जमाने को मुंह दिसाने योग्य है । जमाने की कृपा प्राप्त करने का अधिकारी । फिर भी

घटे, पाने पीने में घन्तर होता है। एक पीना है अहांगीर का और एक सड़क पर बैठकर पीनेवाले गुब्बे का।

मिर्जा अकबर की हां, लेकिन जित्सेइसाही, दोनों में घन्तर है यही कि अहांगीर बेईमान है और गुब्बा ईमानदार। वह अपने ऐब को छुगाता नहीं है। घम भी दृष्टि से देता जाए तो घम-बिरुद्ध साभरण करके सत्कार से सम्मान की घाशा परनेवाला अधिक अपराधी है।

बहादुरशाह मिर्जा अकबर, तुम्हारी बात सपवार की तरह पीछी होकर भी सत्य है लेकिन हम पूछते हैं कि तुम्हारे पूबजों में यदि अपराध किए हैं तो उनके इब्दस्वरूप उन्होंने अपना राज पाट गबाया है वैनब और ऐस्बय लोपा है, इस आनसे हुए भी तुम उसी पक्ष पर क्यों अपसर होते हो ?

मिर्जा अकबर इसलिये कि अब हमारे पास सामे के लिए कुछ रोप नहीं रहा है। यह गया है केवल रामबंग का नाम और बहपन की इत्तिम सीमा रेखाएं जो हमें उध विस्तृत जगत में प्रवेग नहीं करने देतीं, जहां मानवता मुस्कराती है। जहांपनाह मेरे मस्तक पर स दाहजादापन के बसंके को धो डालिए। मैं तो सुवा सं कहता हूं—वयां तुमे मुझे जन्म लेते समय से ही इन अमिजाप के बोके स लाइ लिया।

बहादुरशाह सुदा को जो स्वाकार या यह उसने तुम्हें बनाया। मनुष्य को उसकी ब्यवस्था में हस्तगत करने का बोर्द अपि पार नहीं है।

हकीम एहसानुत्ताला और न मनुष्य में इतनी शक्ति है।

बहादुरशाह तुम दाहजादी हो या साधारण व्यक्ति, दोनों ही

अवस्थाओं में तुम्हें शासन और मनुष्यता के नियमों का पालन करना पड़ेगा। तुम करपुंदा के पास जाते हो— सराव पीते-हो, यह तुम्हारा व्यक्तिगत मामला है, बुधा तुम्हें बुद्धि दे कि इससे मुगल राजवंश की जो अपकृति होती है उसे तुम समझे, समाज में जो अव्यवस्था होती है, उसे जानो। हमारी बुद्धि में तुम्हारा मुख्य अपराध यह है कि तुमने हमारी प्रजा को मूटने और इन्हें मारने-पीटने का आपत्तिजनक कार्य किया है।

मिर्जा अबूबकर : अपराधी को भी अपना पदा उपस्थित करने का अधिकार होता है।

अहापुरशाह : तुम्हें कुछ कहना है ?

मिर्जा अबूबकर : जी हाँ, जहाँपनाह ! मैं जब शाहजादी के घर से बसा भीर गमी के द्वार पर ठासा पड़ा पाया तो मुझे इसके पीछे किसीका पद्वयत्र दिखाई दिया।

हकीम एहसानुस्माका : पद्वयत्र बँसा, और किसका ?

मिर्जा अबूबकर : हकीम जी, मैं जहाँपनाह से निवेदन कर रहा हूँ। घाप बीच में बोलते हैं तो मुझे चोर की दाढ़ी में तिनका जान पड़ता है। आप इस प्रार्थना-यत्र को लेकर घाए हैं इससे भी मेरे संदेह की पुष्टि होती है—प्रजा के सामने इंगामा सड़ा कराने के लिए ही कुछ लोगों ने गमी का द्वार बंद कराकर चौकीदार को घंठघानि करा दिया। जब हमने चौकीदार की खोज में इधर-उधर देखा तो एहसानुसहक को मुसकराते पाया। वह मेरी परेशानी का आनंद से रहा था। जहाँपनाह, ये लोग मेरी और करपुंदाजमानी

की बात को सब साधारण में चर्चा का विषय बनाने के लिए ही ऐसे पर्यटन करते हैं। इनसे उन्हें दो लाभ हैं। एक तो साहसाद जहापनाह की नज़र में गिरते हैं दूसरे सेना और नगरवासियों में साहजादों का सम्मान घटता है। सम्मान घटने से न तो हम मगर में व्यवस्था रख सकते हैं न सेना पर नियंत्रण परिणाम यही होगा कि हम अप्रेक्षा से जो युद्ध कर रहे हैं उसमें विजय पाता कठिन होगा।

बहादुरशाह सम्मान चाहते हो तो अपने ऊपर उभरी उठान का प्रवसर ही मत दो। अच्छा यह बताओ तुमने एहसानु महक का भर सुटबाया ?

मिर्जा अमूरुत धगर में घर सुटवाता तो उसके घर की एक इट भी न बचती। मैं किसीको घाघा मारकर छोड़ देने के पदा में नहीं हूँ। अमूरुत अत्याचार या अमूरी दया मेरे स्वभाव में नहीं है।

[मिर्जा कोषान का प्रवेद्य।]

मिर्जा कोषान जहापनाह गजब हो गया।

बहादुरशाह क्या अंप्रेक्ष नगर में प्रवेश करने में सफल हो गए ?

मिर्जा कोषान नहीं जहापनाह, जिन अंप्रजों को, जिनमें अंपि काय स्त्रियाँ और बच्च थे, जहापनाह ने कारण दी थी उन्हें गुंडों की भीड़ ने मार डाला है।

बहादुरशाह गुंडों की भीड़ ने ? वह सासकिस में कैसे प्रवेद्य पा सकी ?

मिर्जा कोषान अंपदम ही किले का भी कोई व्यक्ति इस पद

यत्र में सम्मिलित होगा ।

बहादुरशाह यह हमारे लिए बुरा मरने की बात है । वेबस स्त्रियों और भोसे वपुषों ने क्या विवादा वा हमारा ? भारत अपनी सम्मिता और दया के लिए प्रसिद्ध है, भले ही आज अंग्रेज इसे धवनाम करें । इसी भारत में मनुष्यता को सञ्चित करनेवासी इस प्रकार की घटनाएं—वे भी सभ्राट की भाष के नीचे हों यह कितने दुःख की बात है । मिर्जा अकबर आधी आधी होती है—बिबेकहीन उसी प्रकार विन्सब भी—सवनाथ उसका स्वभाव है । अंग्रेज तो अपराधी नी हैं । उन्होंने पिछले ही वर्षों से क्या नहीं किया, और आज तो हिंसा का नंगा नाच बे कर रहे हैं । आज नासे में उन्होंने क्या किया ? अंग्रेजी सेनाओं ने दिस्ती की और आते समय रास्ते में जिस तरह धामों में आग लगाने और बस्ते धाम के अपन्य कृत्य किए हैं उन्हें क्या हम अपराध सह लेंगे ? उन्होंने हमारी प्रजा के पेट में संघीमें बुभोई, सोपों के घास सींचे उन्हें खवर्दस्ती गाय का मांस खिलाया, स्त्रियों का बर्ष भूटा, क्या नहीं किया ? हिंसा का उत्तर तो हिंसा ही है जहापनाह !

बहादुरशाह कुछ युवा का लीफ लाओ, अकबर ! अंग्रेजों ने जो अत्याचार किए हैं उससे भारतवासियों का प्रोध से पागल हो उठना स्वाभाविक तो है लेकिन इस प्रकार मिर्जाप म्भी-वपुषों के रक्त से हाथ रंगना कीरता नहीं है । सब कुछ तो आज हमें जितना दुःख हुआ है उतना तब भी न होता जब कोई हमारे अपने बन्धे को निष्कृता से मार

डासता । सर, जो हो चुका वह तो हो ही चुका अब जिन गुर्बों ने यह जयमय घपराघ किया है, उन्हें गिरफ्तार करके ऐसा दंड देना चाहिए कि लोग जान सें कि हम इस प्रकार के हत्याकांड के विरुद्ध हैं । हम इसी समय घटनास्थल पर बसेंगे ।

मिर्जा कोषाहा जहांपनाह के लिए सवारी ।

बहादुरशाह नहीं, हम भूतारामाओं के सम्मान में पैदल ही जाएंगे ।

[सबका प्रस्थान]

[पट-परिवर्तन]

दूसरा दृश्य

[स्थान—यूबंनत् । समय—संध्या । घमाएं बलाई या चुका है । गंगाट बहादुरशाह 'जफर' मसंद के सहारे बैठे हुबना पीठे हुए बिचारों में मग्न दिखाई देते हैं । मिर्जा इसाहीबख्त जिसके हाथों में वेदसी उर्दू घराबार की प्रति है प्रवेच करके कोनिष्ठ कण्ठा है ।]

मिर्जा इसाहीबख्त जहांपनाह को मिर्जा इसाहीबख्त कोनिष्ठ प्रदा करता है ।

बहादुरशाह मामो मिर्जा, बैठा ।

[मिर्जा इसाहीबख्त अपना स्थान ग्रहण करता है ।]

बहादुरशाह नहीं मिर्जा, मगर क एवं रणनेत्र के क्या समा-
चार हैं ?

मिर्जा इसाहीबख्त रणनेत्र के समाचार तो मुझसे अधिक

मिर्जा मुमस यत्ना सकते हैं क्योंकि वे प्रधान सेनापति हैं। इतना आप भी जानते हैं मैं भी जानता हूँ दिल्ली की प्रजा भी जानती है कि अंग्रेजी सेना दक्षिण ओ बाईंमाल लंबी पहाड़ी यमुना-सट के किनारे-किनारे है उसपर सुदृढ़ मोर्चाबंदी करके बटी हुई है। पहाड़ी दिल्ली की भूमि से ६० फुट ऊंची है। उसपर हमारी तोपों द्वारा की जानेवासी अग्नि-बर्षा का भी प्रभाव नहीं पड़ता। हमारी जो ठोपें सासकिसे में हैं वे भी अंग्रेजी छावनी पर मार करने में सफल नहीं हो रहीं।

बहादुरशाह इसमें तो सदिह नहीं कि अंग्रेज सेनापति मुझ कीशत में हमसे अधिक चतुर हैं। यदि हम लोगों में दूर दक्षिण होती तो हमारी सेना नगर की बहारदीवारी की छाड़ न लेकर पहाड़ी पर पहले से ही अपना मोर्चा बनाती। फिर भी हम यह कहे बिना नहीं रहेंगे कि योग्य सेनापति के अभाव में भी हमारे सैनिक अंग्रेजी सेना को नाकों बने पड़वा रहे हैं।

मिर्जा इसाहीवशा किन्तु इस युद्ध में समय का बहुत मूल्य है जहाँपनाह! ज्यों-ज्यों समय व्यतीत हो रहा है त्यों-त्यों अंग्रेजों की शक्ति बढ़ती जा रही है और हमारी बठिनाइयाँ बढ़ रही हैं। नगर की शासन-व्यवस्था बिपड़ रही है, नागरिकों पर सेना के अत्याचार बढ़ते जा रहे हैं। दिल्ली के नागरिक आतंकित और भयभीत होते जा रहे हैं। यह देखिए आज के 'देहली' उदू अत्याचार न क्या सिखा है।

[मिर्जा इलाहीबख्श समाचारपत्र बहादुरशाह 'जऊर' की तरफ बढ़ाता है लेकिन वह उधे अपने हाथ में नहीं लेता ।]

बहादुरशाह तुम हा सुनाओ, मिर्जा !

मिर्जा इलाहीबख्श कुछ लोगों में यह कार्य धारण कर दिया है कि तिसगों का वेद्य बनाकर मगर को सूटते हैं। सहर क सुन्ने कुछ तिसगों को भी अपने साथ मिला लेते हैं और हर रोज किसी भलेमानस का घर सूटते हैं। पसीगंज मल्सन जी हसमगढ़ तथा धलीपुर के गुजर जहां-तहां सूट मार करते घूमते हैं। केवल गुंडे ही ऐसा करते हों ऐसी बात नहीं है। मोहल्साशाहगंज में घाही सेना अजमेरा शार से निकलकर घुस जाती है और दूकानदारों से बिना मूल्य चुकाए सामान ले जाती है। सैनिक दीन-बुसिया के घरों में घुसकर विछीने सकड़ियां छीन ले जाते हैं। आसोग उन्हें रोकने का प्रयत्न करते हैं, उन्हें हथियारों में भायल कर देते हैं। जोधपुर से जो सवार आए हैं, उन्होंने दूरानों के सामने घोड़े बांध दिए हैं और बहुत-सी दूकानों पर अधिकार जमा लिया है। बहुत-से दूकानदार दूकान छोड़कर भाग गए हैं और खेप भी भाग जाये।

[बहादुरशाह 'जऊर' यह सब सुनकर बेचैन हो उठे हैं और उठ कर राके हो जाते हैं तथा कल में घूमने लगते हैं। मिर्जा इलाहीबख्श भी उठ रहा होता है।]

मिर्जा इलाहीबख्श में जानता है कि जहांपनाह को इस समाचारों से कष्ट होता है किंतु मेरा निवेदन यही है कि अपने जी को दुखाने से साम क्या है ? सब जानते हैं कि

मित्रों मुगल बतल सकते हैं क्योंकि वे प्रधान सेनापति हैं। इतना घाप भी जानते हैं, मैं भी जानता हूँ दिस्ली की प्रजा भी जानती है कि अंग्रेजी सेना दक्षिण ओर डार्ड मीस संवी पहाड़ी यमुना-तट के किनारे-किनारे है उसपर सुदृढ़ मोर्चाबंदी करके बटी हुई है। पहाड़ी दिस्ली की भूमि से ६० फुट ऊंची है। उसपर हमारी तोपों द्वारा की जानेवाली अग्नि-वर्षा का भी प्रभाव नहीं पड़ता। हमारी जो तोपें सालकिसे में हैं वे भी अंग्रेजी छावनी पर मार करने में सफल नहीं हो रहीं।

बहादुरशाह इसमें तो सबिह नहीं कि अंग्रेज सेनापति युद्ध कौशल में हमसे अपेक्षित बलुर हैं। यदि हम सोचों में दूर दक्षिण होती तो हमारी सेना नगर की बहारखीबारी की छात्र न भकर पहाड़ी पर पहले से ही अपना मोर्चा बनाती। फिर भी हम यह कहे बिना नहीं रहेंगे कि योग्य सेनापति के प्रभाव में भी हमारे सैनिक अंग्रेजी सेना को नाकों बने बचवा रहे हैं।

मित्रों इभाहीबख्श किन्तु इस युद्ध में समय का बहुत मूल्य है, जहाँपनाह! ज्यों-ज्यों समय व्यतीत हो रहा है स्थों-स्थों अंग्रेजों की शक्ति बढ़ती जा रही है और हमारी कठिनाइयाँ बढ़ रही हैं। नगर की शासन-व्यवस्था बिगड़ रही है, नागरिकों पर सेना के प्रत्याचार बढ़ते जा रहे हैं। दिस्ली के नागरिक आतंकित और भयभीत होते जा रहे हैं। यह देखिए आज के 'देहली' उर्बू प्रभाव न क्या लिखा है।

[मिर्जा इलाहीबख्श समाचारपत्र बहादुरशाह 'जंज़ूर' की तरफ बढ़ावा है लेकिन वह उसे अपने हाथ में नहीं लेता ।]

बहादुरशाह तुम हा सुभापो मिर्जा !

मिर्जा इलाहीबख्श कुछ लोगों ने यह कार्य धारम्भ कर दिया है कि तिलंगों का वेदा बनाकर मगर को सूटते हैं । सहर के लुब्धे कुछ तिलंगों को भी अपने माप मिला सते हैं और हर रोज किसी भलेमानस का घर सूटते हैं । मसीगंज, मत्सम जी हसनगढ़ तथा मसीपुर के गुजर जहाँ-तहाँ सूट मार करते घूमते हैं । केवल गुडे ही ऐसा करते ही ऐसी बात नहीं है । मोहल्लानाहगंज में धाही सेना धजमेरा धार से निकलकर घुस धाही है और दूकानदारों से बिना मूल्य बुकाए समान से जाती है । संमिक दीम-बुलियों के घरों में घुसकर बिछीमे सकड़ियां छीन ले जाते हैं । आ सोम उन्हें रोकने का प्रयत्न करते हैं उन्हें हथियारों म धायस कर बेते हैं । जोषपुर से भी सवार धाए हैं उम्हाने दूकानों के सामने धोड़े बांध दिए हैं और बहुत-सी दूकानों पर धधिकार जमा लिया है । बहुत-से दूकानदार दूकान छोड़कर भाग गए हैं और शेष भी भाग जाएंमे ।

[बहादुरशाह 'जंज़ूर' वह सब सुनकर बैचन हो उठते हैं और उठ कर पड़े हो जाते हैं तथा कछ में घुमने लबते हैं । मिर्जा इलाहीबख्श भी उठ ताड़ा होता है ।]

मिर्जा इलाहीबख्श मैं जानता हू कि जहाँपनाह को इन समा धारों से कष्ट होता है किन्तु मेरा निबेदन यही है कि अपने जी को दुखाने से सावध क्या है ? सब जानते हैं कि

आपने नगर में शांति रखने के लिए क्या नहीं किया। सच बात तो यह है कि इस समय मुंडों और स्वतंत्रता सेनिकों पर नियंत्रण रखना संभव भी नहीं है। ज्यों-ज्यों युद्ध लड़ा होगा, प्रजा के कष्ट बढ़ेंगे और छत्र का हमारा समर्थक है वे भी हमारे विरोधी बन जाएंगे और अंत में अग्रिम विजयी होंगे। जो हो चुका सो हो चुका, अब मैं यदि सम्राट् चाहें तो अपने भविष्य को सुदृढ़ और सुदृढ़ रखने का उपाय शोध सकते हैं।

बहादुरशाह मिर्जा, जेकर का भविष्य तो अब भारत के भविष्य में बिलीन हो चुका है। भारत के भविष्य को सुदृढ़ करने अपने मुसलमानी विचार करने की आशा अब कोई हमसे न करे। हम अंग्रेजों से युद्ध बंद नहीं करेंगे लेकिन साथ ही हमारा यह भी कहना है कि यदि प्रजा पर अंग्रेजों का राज के समान अत्याचार होता रहा तो हमारा राज अर्थ है। स्वतंत्रता का सुख शांति में ही है। युद्धकाल में भी हम सेनिकों को प्रजा पर अत्याचार नहीं करने देंगे।

[मिर्जा मुगल का प्रबंध। उसके हाथ में अनेक कावचात हैं।]

मिर्जा मुगल (कोनिप करता हुआ) जहाँपनाह को मिर्जा मुगल कोनिप धरा करता है।

बहादुरशाह धमका हुआ तुम भा गए दाहबादे नहीं तो हमें तुम्हें घुसाना पड़ता।

मिर्जा मुगल मेयफ को क्या धामा है जहाँपनाह की ?

बहादुरशाह तुमसे धाज का देहली उर्दू धामार पड़ा है ?

मिर्जा मुगल जो हाँ ! उगमें मुंडों द्वारा जो नहीं-नहीं मू

मार की जाती है, उसके सम्बन्ध में समाचार प्रकाशित हुए हैं आप समस्त इसीसे खुशी हैं।

बहादुरशाह हाँ चाहेंगे हमारा हृदय बुर बुर हो गया है। दुःख की बात तो यह है कि तुम्हारी सेना के भावमी भी हमारी प्रजा को कष्ट देते हैं। तुम्हारे सैनिक सप्तवार वाले हैं, उनके हाथों में धरित्र है उसका प्रयोग वे प्रजाओं के विरुद्ध करें हमारी प्रजा पर नहीं। इसके पूर्व प्रवेश मन माने प्रायेण निकास करते थे और हमारी प्रजा तबश व्यथित और व्याकुल रहती थी। अब तुम लोग उसे कष्ट पहुंचाते और सूटते हो। यदि तुम्हारी यही दसा है तो इस जीवन के संख्या ०९ में हमें राज्य तथा धन की इच्छा नहीं। हम त्याग साहय की ओर प्रस्थान कर जाएंगे या मक्का धरीक जाकर जीवन के दोष दिन काटेंगे और पुदा की उपासना में मन लगाएंगे।

[बहादुरशाह 'अकर' की धारों में धामू धा जाते हैं। मिर्जा मुगल की धारों भी गीली हो चली है।]

मिर्जा मुगल जहाँनाह, आपने हृदय के दद को मैं समझता हूँ और आपके इस दद का उपचार करने के लिए मैं आपन हृदय का रक्त भी देने को प्रस्तुत हूँ। इस समय दग में आ धनिदिधत परिस्थिति है, उसका लाभ स्वेच्छाकारी लोग उठाना चाहते हैं। केवल दिल्ली में ही नहीं अन्य स्थानों पर भी यह हो रहा है। जहाँनाह इस धारों से विचलित हो जाएंगे तो हम लोग धरित्रों से मुक्त करने का साहम बहा से पाएंगे ?

बहादुरशाह लेकिन हम अंग्रेजों से युद्ध करने में तब तक सफल नहीं हो सकते जब तक हम अपनी सेना को अनुशासन में नहीं रख पाते। सेना का काम रक्षा करना है, ध्वंस तथा मारना नहीं। हम यह पसंद नहीं कर सकते कि हमारे नगर सुटें—अपने ही सैनिकों से अक्षय तो नष्ट न हों किन्तु अपने ही वेशवास नष्ट हो जाए। हमें यह स्पष्ट पृष्टियोज्य होता है कि अन्त में अक्षय दिल्ली पर विजय प्राप्त कर सेंगे और हमारी हत्या कर डालेंगे।

मिर्जा इसाहीबख्त जहांपनाह इसीलिए मैं कहता हू कि आप एक बार फिर विचार करें कि क्या आपका बिरोहियों के साथ रहना उचित है? मैं भी मुगल हूँ जहांपनाह मुगल साम्राज्य का वक्ता फिर लौटे, यह मेरी भी आन्तरिक अभिलाषा है लेकिन उसकी कोई सम्भावना भी तो हो। अंग्रेजों के साथ हमारा अज भी मत हो सकता है।

मिर्जा मुगल जहांपनाह, दुःख की बात है कि अज भी हमारे नगर में और हमारे महल में और अज भी हमारी सेना में भी कुछ ऐसे देशद्रोही मौजूद हैं जो ऐसा आतावरण बना रहे हैं कि जहांपनाह निराश होकर अपने-आपको अंग्रेजों के बगुल में फसा दें ताकि अंग्रेजों से जो युद्ध भारतवासी सम्राट के भ्रष्ट के नीचे लड़ रहे हैं वे स्वयं ही अपनी मौत मर जाए। मैं जानता हूँ और मानता हूँ कि कहीं-कहीं कुछ गुण्डे सिर उठाते हैं लेकिन यह बात सवषा झूठी है और देशद्रोहियों की कैसाई हुई है कि सैनिक प्रजा पर मनमाने अत्याचार कर रहे हैं। विष्णुसंतोषी लोग प्रजा में जान-बूझकर अक्षय का

वातावरण उत्पन्न करते हैं। दरिबे में सिर्फ एक सर्राफ की दूकान खुली थी जिसपर सब सर्राफों ने अपना सोना गहना तथा रुपया धर बसता किया और अपनी दूकानों के सामने बिस्ताप करने लगे कि हाय हम लुट गए, यद्यपि सभी गनी-कूबों में स्थिति साधारण थी।

बहादुरशाह लेकिन हम नहीं चाहते कि हमारी प्रजा की एक भोंपड़ी को भी हमारे आदमी घाब पड़भाए। हम उपद्रवियों का कठोरता से दमन करना होगा।

मिर्जा मुगल जहाँपनाह की आज्ञापूर्ति के लिए मैंने कुछ उठा नहीं रखा है। कस पाँच आदमी ऐसे पकड़े गए जो बेश भ्रूषा में हमारे सैनिक जान पड़ते थे उनके पास बंदूकों की थीं, जो नगर में लूट-मार कर रहे थे। ज्ञात हुआ कि इनमें से एक साहमन साहब का कहार था, एक महीर और एक चमार जो छावनी में मुण्डे बनाता था। भेद गुप्तने पर सैनिकों ने उनको लूट लूटे मारे, अब वे कैद में हैं। दुर्भाग्य से दिल्ली में ऐसे भी लोग हैं जो प्रसोभन देकर सागास उत्पात कराते हैं, उसका दाय सैनिकों के सिर सादना चाहते हैं और प्रजा और सेना में मतभेद उत्पन्न कर हमारी समस्याओं को बढ़ाते हैं और चाहते हैं कि जन में अंग्रजा की विजय हो।

[मिर्जा कोषास का प्रवेश जो मिर्जा मुगल ने कबल का लूट लूट प्रवेश करने के पूर्व मुन हुआ है।]

मिर्जा कोषास (कोनिग कूठा हुआ) जहाँपनाह को बीनाग कोनिग भदा करता है।

उसको भी प्राण-दण्ड दिया जाएगा। हिन्दू और मुसलमान दोनों भारत की सन्तान हैं दोनों भाई भाई हैं, दोनों को एक-दूसरे की धार्मिक भावनाओं का ध्यान रखना आवश्यक है। इस समय जबकि भारत की स्वतन्त्रता के लिए हिन्दू और मुसलमान दोनों अपने मस्तक कटा रहे हैं, हमें अपनी राष्ट्रीय एकता हर कीमत पर कायम रखनी है।

मिर्जा इसाहीबख्श जहाँपनाह, इस सम्बन्ध में यदि मौलवियों से परामर्श कर लिया जाए और उनकी अनुमति से ली जाए तो मुसलमानों की धार्मिक भावना भी सन्तुष्ट हो जाएगी।

बहादुरशाह लेकिन मौलवियों से परामर्श लेने की आवश्यकता क्या है? हम भारत के शासक हैं, जिस भारत में हिन्दू भी हैं और मुसलमान भी। अगर हिन्दू गो-वध से दुःखी होते हैं तो हमारा कर्तव्य है कि यदि कोई मौलवी भी धर्म के नाम पर गो-वध करने का आदेश दे तो हम उसे रोकें। गो-वध करना ही तो मुसलमान का धर्म नहीं है। धर्म तो आत्मा के ऊँचे गुणों का नाम है और प्रत्येक धर्म इस सम्बन्ध में एक-सा है।

मिर्जा कोषास किन्तु जहाँपनाह, क्या मात्र इस घोषणा से गो-वध रुक जाएगा? जहाँ तक मुझे ज्ञात हुआ है मैं यह सकता हूँ कि अंग्रेजों ने कुछ मौलवियों को बड़ी रकम खटाकर इस अवसर पर उत्पात कराने का प्रयत्न किया है।

बहादुरशाह अंग्रेजों ने कुछ भी पर्यन्त किया हो लेकिन हमारा दृढ़ निश्चय है कि हम गो-वध नहीं होने दिये चाहें मूल

पश्चिम से उदय हो। धर्रेजा से जो हमारा युद्ध हो रहा है उसका परिणाम चाहे कुछ भी हो लेकिन कम से कम इस मोर्चे पर हम उनसे नहीं हारेंगे। हिन्दू और मुसलमानों के जीवन अब एक-दूसरे से इतने गुप्त गए हैं कि प्रेम दोनों के पृथक अस्तित्व की कल्पना करना भी पाठक है। दोनों के बीच घातृत्व रहे बिना भारत स्वतंत्र हो नहीं सकता और स्वतंत्र रह नहीं सकता।

मिर्जा मुगल और कुछ भी जाना है मुझे, अहाँपनाह !

बहादुरशाह हाँ, हाँ, अभी तो बहुत काम करना है तुम्हें।

सिखा "

मिर्जा मुगल सिखाइए अहाँपनाह !

बहादुरशाह : बीर मुबारकशाहना कोतबास पहर की जात हो—इस घाताघम के साथ भेजे हुए हमारे आदेश की घोषणा कल करा दी जाए। इसके अतिरिक्त तुम्हें घाताघी जाती है कि नगर के द्वारों पर इस प्रकार का प्रबन्ध करो कि कोई भी गाय का व्यापारी घाज से बकरीद के तीन दिन तक नगर में गाय तथा भैंस बेचने के लिए न आ सके और जिन मुसलमानों के घरों में गायें पसी हों उन्हें लेकर कोतवाली में बंधवा दिया जाए। यदि कोई मुसलमनमुल्ता अथवा छुगाकर पसी हुई गायों की अघने घर में बुरबानी करेगा तो उसे प्राण-दण्ड दिया जाएगा। ईदुबजुहा के मबसर पर गऊ-वध के सम्बन्ध में इस प्रकार का प्रबन्ध हो कि गाय बिकने के लिए भी न आए और पसी हुई गऊघों का भी वध न हो। कोतबासी की ओर से इस सम्बन्ध में जितना

भी बेष्टा की जाएगी वह हमारी प्रसन्नता का कारण बनेगी ।

मिर्जा मुयस बहापनाह, संवक के मन में एक घंका उत्पन्न हुई है । धात्रा हो तो निवेदन करूँ ?

बहादुरशाह प्रबल्य ।

मिर्जा मुयस धापने कोतबाल को धो धात्रा थी है वह उचित है लेकिन कोतबाली में तो इतना स्थान नहीं कि पचास भी रासों बांधी जा सकें, यदि नगर के समस्त मुसलमानों के घरों में पक्षी हुई जाए मंगवाई जाएगी तो उनके लिए स्थान न हो सकेगा । इसके लिए विस्तृत हाता होना चाहिए जिसमें वे वहाँ छ दिन बंद रखी जा सकें ।

बहादुरशाह ठीक कहते हैं शाहबादे ! इतना बड़ा हाता प्राप्त नहीं होगा । इसलिये कोतबाल को सिख गए धात्रा-पत्र में धापे धो हम बोसों वह बड़ा दो ।

मिर्जा मुयस धोसिए अहापनाह ।

बहादुरशाह अगर इतनी गायों को बांधने योग्य स्थान प्राप्त न हों तो उन मुसलमानों के, जिनके घरों में जाए हैं नाम सिख लिए जाएं उनकी गायों की संख्या उनसे से सी जाए । और उनसे मुयसके तथा धादबासन-पत्र सिलवा लिए जाए कि वे न तो सुल्समरुल्सा और न घोरी से गऊ-बाध करेयें । जिन घरों में जाए बंधी हों वे उसी प्रकार बंधी रहें । उन्हें तीन दिन तक दाना-धारा उसी स्थान पर पिसाया जाए और घरने के लिए सेधमात्र न छोड़ा जाए । उन्हें नसी भांति समस्त सेना चाहिए कि तीन दिन

उपरान्त यदि सूची के अनुसार गाएं नहीं मिसीं धीर यदि किसीने छिपाकर उन्हें शिवह कर दिया तो उसे प्राण-बंद मिसेगा ।

मिर्खा इनाहीबद्धा जहांपनाइ की उदारता हिंदुओं का हृदय प्रबद्ध पीत लगी लेकिन मुझे भय है कि इससे मुसलमान मन में समझेंगे कि जब भविष्य में उन्हें हिंदुओं की कृपा पर जीवित रहना पड़ेगा । उनके मन में एक प्रसन्नोप थर कर स यह भी संभव है ।

ब्रह्मचरभाह यदि ऐसा हो तो उस प्रमान की उपज ही कहा जाना चाहिए । प्रत्येक देश का अपना प्रतीक होता है, अपनी इतिहास, अपनी परंपराएं धीर अपनी संस्कृति । उस देश के प्रत्येक निवासी को चाहे वह किसी धर्म का पालन करने वाला हो, उसकी विशेषताओं को मान्यता देनी ही चाहिए । परब ईरान और तुर्किस्तान में मुसलमानों का जीवन कुछ भी रहा हा, कुछ भी हो, लेकिन भारत में चाकर तो उन्हें भारत की आत्मा में अपनी आत्मा गिनामी ही होगी । तभी यह दंग उन्हें प्यार कर सकेगा । एक हिंदू अपने रीति-रिवाज बचसम को पढ़े तो किसी सौमा नक हम उसपर आपत्ति पर भी सकेते हैं लेकिन जब एक मुसलमान ही अपने स्वधर्मिया को जिस देश में बह रह रहा है उसके अनुसार परिवर्तित होम को बहे तो उसमें आपत्ति का क्या कारण हा सबठा है ? हमें स्वच्छा से एक-दूसरे को परम्पराओं का ध्यान रखना है । तुम तो जाते ही मुसल चासक होली दीवाली

भावि त्योहार मनाते रहे हैं और उसी प्रकार ईद की खुशियों में हिंदू मुसलमानों के साथ सम्मिश्रित होते रहे हैं। हमें एक-दूसरे के सुख-दुःख का साथी बनना ही चाहिए।

[मिर्जा अबूबकर का प्रवेश]

मिर्जा अबूबकर (कोजिब करता हुआ) जहाँपनाह को अबूबकर को निराश प्रदा करता है।

बहादुरशाह कहो शाहजादे तुम क्या समाचार लाए हो ?

मिर्जा अबूबकर जहाँपनाह में समाचार भी लाया हूँ और शिकायत भी।

बहादुरशाह : पहले हम शिकायत सुनें।

मिर्जा अबूबकर शिकायत करती है मुझे सैनिकों की ओर से। उन्हें व्यवस्था के अनुसार वेतन प्राप्त नहीं होता। जीवन की आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त करना भी उन्हें असंभव हो गया है। यही स्थिति रही तो वे सुटमार करके अपनी आवश्यकताओं का प्रबंध स्वयं करेंगे या अपने घरों को लूट आएंगे।

बहादुरशाह मिर्जा मुगल इस शिकायत के संबंध में तुम्हारा क्या कथन है, तुम सेना के मुख्य सेनापति हो।

मिर्जा मुगल जहाँपनाह में मुख्य सेनापति हूँ और युद्ध का संचालन मैं देखता हूँ किन्तु सैनिकों को वेतन बांटने का काम हमीम एहसानुस्तासा को घापने सौंपा है। वह किसी सेना को भासिक वेतन देते हैं किसीको दानिक। कुछ सैनिक ऐसे हैं जिन्हें नित्य का भोजन भी उपलब्ध नहीं और कुछ गुमछरें उड़ा रहे हैं। इस प्रकार सैनिकों

में परस्पर मन मुटाव उत्पन्न होता है ।

मिर्जा कोयाश मैं तो समझता हूँ कि हकीमजी जान-बूझकर बेतम बांटने के अपने तरीके से सेनाओं में असंतोष पैदा कर रहे हैं । खुदा जाने क्यों, वे प्रारंभ से ही अग्रजों से मुट्टा करने के पक्ष में नहीं हैं । किसी न किसी प्रकार वे जहांपनाह को बाध्य कर देना चाहते हैं कि वे युद्ध का नेतृत्व छोड़ दें ।

मिर्जा इलाहीवशा जहाँ तक मैं समझता हूँ हकीम जी पर इस प्रकार के आरोप लगाना उनपर अन्याय करना है । अग्रजों से मुट्टा करना चाहिए या या नहीं इस संबंध में हकीम जी का मत आप लोगों से नहीं मिलता । मेरी भी आपसे असंगत राय है, और हमने अपना मत प्रकट किया, किन्तु अब शिल्स इलाही इस संग्राम में नूतन पड़े तो हमारा यह कर्तव्य है कि अपनी दक्षिण-मर मुट्टा में भाग लें । जहांपनाह के भाग्य के साथ हमारा भाग्य भी जुड़ा हुआ है ।

जहांपनाह और सारे देश के भाग्य के साथ हमारा भाग्य जुड़ा हुआ है । खर, हमें अस्सी विषय पर ध्यान चाहिए । हमें ठीक नहीं ज्ञात कि अज्ञान की स्थिति क्या है ?

मिर्जा मुगल जहांपनाह घन एष्य करने के सभी उपाय किए गए हैं । अज्ञान भी लिया है, विभिन्न म्यानों से जो सेनाएं आई हैं वे भी अपने साथ घन सार हैं यह भी अज्ञान के प्रमाण होता रहा है, फिर भी युद्ध का युद्ध है । पहले

हमारे पास कुल ५००० सैनिक थे, अब तीस हजार क सगमय और नये-नये लोग सेना में भरती होने के लिए आ रहे हैं।

बहादुरशाह नई भरती सर्वथा बंद कर दो। जब हम वर्तमान सैनिकों को ही भरपेट भोजन नहीं दे पाते तो नई सेनाओं की भीड़ क्यों बढ़ाएं ?

मिर्जा मुयल—आपकी आज्ञा का पालन होगा जहांपनाह ! सेना के बेतन के प्रतिरिक्त अस्त्र-शस्त्र मोम सेने या अपने कारखानों में बनवाने में भी कम व्यय नहीं हुआ है। इस कारण इस समय स्थिति यह है कि हमारा खजाना शून्य के लगभग है।

बहादुरशाह कुछ भी हो, सभी सैनिकों को दैनिक बेतन मिलना चाहिए। हम जहां यह चाहते हैं कि सैनिक नगर में सूटमार न करें वहाँ हम यह भी चाहते हैं कि उन्हें समय पर बेतन और रसद प्राप्त हो। यदि वे भूखे रहे तो मुझ क्या खाक करेंगे ? (अपने पैसे से मोठियों का द्वार उठाएँ हुए) से जाओ हमारा यह हार। इसे बेच दो और स्वयं सैनिकों में बाँट दो।

मिर्जा इसाहीवटा जहांपनाह, यह पुस्तैनी हार

बहादुरशाह अब हमारे सैनिकों को रोटियां मसीब नहीं हो रहीं तब हमें क्या अधिकार है कि हम बहुमुख्य घामू पण पहन रहें। हम अपने और बेगमात के सभी घामूपण बेच डालेंगे लेकिन जो सैनिक हमारे लिए और अपने देश के लिए प्राण ग्योछावर करने आए हैं वे रोटियों के लिए

तरसें यह हमें मसूर न होगा ।

मिर्जा अग्रपूरकर जहांपनाह की उदारता की सीमा नहीं । आप मनुष्य नहीं करिखता हैं । दुर्भाग्य भारत का कि आप सम्राट औरंगजेब के सुरत बाद नहीं उत्पन्न हुए । उमर्या कठोरता के प्रहार से भारत का जो हृदय विदीण हुआ था उसे आप अपनी उदारता से जोड़ देते और देश की महान शक्ति अक्षुण्ण बनी रहती । अंग्रेज अपने पांव न पसार पाते ।

मिर्जा मुगल इस समय तो जहांपनाह, यह हार अपने पास रखें । हम लोग प्रयत्न करेंगे कि सैनिकों का कष्ट दूर हो । वैसे तो सैनिक जब सुनेंगे कि उनसे लिए जहांपनाह अपने आभूषण भी बेचने को प्रस्तुत हैं तो वे भूसे पैट भी काम करने में अपना सीमाग्य समझेंगे । सम्राट के प्रति सेना में घट्ट धड़ा है ।

मिर्जा अग्रपूरकर आशा हो तो अब मैं जहांपनाह को एक पुत्र समाधार भी दे दूँ ।

बहादुरशाह बहो ।

मिर्जा अग्रपूरकर समाधार यह है कि बरेली के सरदार बख्तवां अपनी सेना, खजाने और तोपखाने के साथ जमना के उस पार आ पहुँचे हैं । नदी में बाढ़ होने के कारण बरेली की सेना अभी उसी तट पर टिकी हुई है ।

बहादुरशाह सुक मुदा का, उसने हमारे पास एक ऐसा आदमी भेजा जिसने अपने युद्धों में भाग लिया है ।

मिर्जा इलाहीबख्त अंग्रेजों की ओर से ।

बहादुरशाह किसीकी ओर से सही लेकिन उसे युद्धभोग का प्रत्यक्ष अनुभव है। अब हमारा युद्ध एक नया मोड़ लगा। मिर्जा मुग़ल पुत्र के प्रबंधकों को आदेश दो कि वे जितनी नावें एकत्र कर सकते हों एकत्र कर लें और इस सेना को मदी के पार उतार दें। मौकाधों द्वारा सेना थोड़ी-थोड़ी करके पार उतर सकेगी, एक साथ नहीं, इसलिए तुम सेना के अधिकारियों के नाम भी आदेश निकाल दो कि न तो कोई सैनिक और न कोई अन्य अधिकारी मौकाधों से पार उतरते समय प्रत्येक घण्टा मन्साहों के साथ दुष्प्रवृत्त घण्टा घत्याचार करे। सैनिकों को थोड़ी-बहुत असुविधा हो तो वे प्रसन्नतापूर्वक सहन कर सें।

मिर्जा मुग़ल बहादुरशाह की आज्ञा का पासम होया।

बहादुरशाह अब समय काफ़ी हो चुका है। आज की हमारी बैठक समाप्त हाठी है। कम हम भोग फिर एकत्र होंगे जिसमें सरदार वक्ताओं का स्वागत किया जाएगा, एवं भविष्य के लिए योजनाएं बनाई जाएगी।

[सबका एक ओर ओर दूसरी ओर बहादुरशाह 'अफ़र' का प्रस्थान।]

[बट-परिचयन]

तीसरा दृश्य

[स्थान—युवक । समय—दिन । बस घाज विशेष रूप से सजा हुआ है और घनेक लोगों के बैठने के लिए मसंर रखे हुए हैं । जीनत महल और हुकीम एहसानुस्मायाँ बैठे हुए परस्पर बर्बाएँ कर रहे हैं ।]

जीनत महल हुकीमजी, घाप तो कहते थे कि बिजय अंग्रेजों की होगी किंतु दिस्ली में हमारे ऋंठे को फहराते हुए ४२ दिन हो गए हैं लेकिन रामु का एक परिदा भी दिस्ली की चहारदीवारी के अंदर प्रवेश करने में सफल नहीं हो सका । देश के अन्य भागों में भी किरमियों का मूय अस्थापन की ओर बढ़ी शीघ्रता से बढ़ रहा है । म्हांसी और बानपुर में अंग्रेजी राज्य समाप्त हो गया और अग्र्यक गारे का, यहाँ तक कि स्त्री-अश्वों तक का सफाया किया जा चुका है । सखनऊ में भी अंग्रेज रेजीडेंसी के भीतर पिजरे में पड़े चूहे की भांति बेबस घिरे पड़े हैं । अब भी क्या घाप वही राग असाप जाएंगे कि बिजय अंग्रेजों की होगी ?

[मिर्जा बर्बावत का प्रवेश ।]

अर्थावत नहीं, नहीं, अंग्रेजों को बिजय प्राप्त नहीं होगी— कभी नहीं होगी । अंग्रेज से जो समाचार हमें प्राप्त हुए हैं उनसे जान पड़ता है कि अंग्रेजा की न बेवस से सेनाएं जो भारतीय सनिका से निर्मित हुई हैं इस संग्राम में हमारे ऋंठे के नीचे घा गई हैं यस्वि अंग्रेज के नवाब के ६० हजार घादमी भी जिन्हें अंग्रेजों ने पदच्युत कर लिया है बेगम

हजरत महस के नेतृत्व में अंग्रेजों से मोहा लेने 'मैदान में उतर पड़े हैं। अन्ध और स्तब्धता के अधिकांश जमींदार, उनके सिपाही तीन सौ किसे बिनमें बहुतों पर भारी टोपें लगी हैं सब अंग्रेजों के विरुद्ध खड़े हो गए हैं। अंग्रेजी सेना से जो सैनिक पेंशन पा चुके वे वे भी हमारे पक्ष में विष्वक् में सम्मिलित हो गए हैं। भारत की सोई हुई अस्ति जाग पड़ी है। अब अंग्रेज भारत में कुछ समय के ही मेहमान हैं।

[मिर्जा पनाबक बँठा है।]

हजोम एहसानुल्लाहा ये घटनाएँ हमें अवश्य ही एक भाषा दिलाती हैं कि अंग्रेजों की प्रभुता का सूर्य सदा के लिए अस्त हो जाएगा, अंग्रेजों के लिए काल रात्रि का आगमन हो गया है। लेकिन जो दृष्टि दूर तक झांक सकती है वह भ्रम में नहीं पड़ेगी। जानपुर में १००० अंग्रेज छोटी-छोटी और सीधता में बनाई हुई यड़ी में २३ दिन तक माना साहब के सहयोगी सैनिकों का सामना करते रहे यह क्या साधारण बात है? माना साहब और सार्या टोपे जैसे रज-कुसम सेनापतियों को उन्होंने क्या काम उकसाया? घाठों पहर की गोसावारी में भी उन्होंने धीरज नहीं छोड़ा। दिल्ली नगर पर जो उस पहर का दसवाँ हिस्सा भी अभी नहीं टूटा। मुदा न करे वह बुरा दिन आए, लेकिन यदि आया तो बेसना जो आज यड़ी-यड़ी डींगे मारते हैं उनके दगम मिलने भी कठिन हो जाएगी।

तित्त महस किन्तु ऐसे कृतकर्म की आप कल्पना ही क्यों करते

हैं, हथीमजी !

हकीम एहसानुस्साला मैं तो ऐस कुचमय को दिस्ती स दूर ही रखना चाहता हू । जीवन भर मैं जहांपनाह की सेहन का रखवाला रहा हू इस कारण वे मेरा बिश्वास करते हैं मेरी सम्मति का प्रादर करते हैं लेकिन इस बार दाहजादे उनपर हावी हो गए हैं मेरी बात ही नहीं मुनत । दाहजादों ने कभी थोड़े की रास भी नहीं घामी और कदाचित् एक पिड़िया भी नहीं मारी, आज वे सेनापति बने हैं । और क्यों न बनते ? उनको अपनी भविष्य इसीमें सुरक्षित नजर आता है । कस तक उन्हें अपने मनोरंजनों के लिए सवा हो घनाभाव रहता था—आज ये सैनिकों के शय्य के नाम पर मगर के घनी साहूकारों से मनमाना रुपया लूटकर घमीर बन गए हैं । सैनिक अपनी जानें सपाते हैं ये ऐग करते हैं । मैं कहता हू यह क्या युद्ध करने का तरीका है ? हमारा उससे भी बुरा हास होगा जैसा पदकों का बानपुर में हुआ है ।

जवांपदत (भट्टहास करके) बुरा हास होगा ? मैं कहता हू दिस्ती में भी अंग्रेजों का वही हास होगा जो बानपुर और भद्रसी में हो चुका है । अब हमारे बीच भी एव सतुर सना पति आ गया है ! मिर्जा मुसल, मिर्जा पोयाण दिर्जा पदुवकर और मिर्जा गिष्य सुलतान के अनाडो और दुबान हायों में अब युद्ध का संघातन नहीं रहगा ।

जोगन महल मैं इहेसों से पूचा करती हू, फिर भी एव प्रकार में यह पच्छा समाचार है यही बहूगी । सब पूछो तो न

शाहजादे इतने शक्तिशाली हो उठे थे कि हमारे लिए संकट ही बन गए थे। अब इनकी शक्ति पर प्रकृष्ट तो सगेगा। हकीम एहसानुस्साला इतना तो प्रच्छा है कि जो शाहजादे वसीमहद के माग के कांटे हैं उनकी स्थिति अब कम खोर हो जाएगी लेकिन साथ ही यह स्त्रेला सरदार अंत में जहांपनाह के लिए भी एक विपत्ति बन जाएगा ऐसी मुझे आशंका है। वहेलों और मुगलों की बधानुगत धनुता रही है और समय पाकर यह बदला बुराएगा।

[बहादुरशाह 'अठर' का प्रवेश। उनके पीछे-पीछे एक नीकर हुका लिए आता है जो उसे सम्राट के आसन के पास रदकर बसा जाता है। सम्राट पूछे आही पोछाफ में है। उनके आते ही सब बड़े होते हैं।]

बहादुरशाह यही तो मसिका का दरबार सगा हुआ है। खीनत महस नहीं जहांपनाह, दरबार तो सम्राट का ही सग सकता है। हम लोग तो आपके सुख-सौभाग्य के संबंध में चर्चाएं कर रहे थे। सुना है बरेमी का सरदार वस्तुता विल्मी आ पहुंचा है।

बहादुरशाह हां विजयी सेनापति सरदार वस्तुता बरेमी में अंग्रेजी राज का अंत करके अब हमारी सेवा में उपस्थित हुआ है। हमन उसे यहीं बुसाया है। आज सबमुख बहुत प्रसन्नता का दिन है। अभी-अभी बिदूर से भी एक प्रसवा रोही समाचार आया है कि परसों वहां नाना शाहब पेशवा का राज्याभिषेक घड़ी नूमघाम से हुआ है।

हकीम एहसानुस्साला : अब मेरी आशंका सत्य ही सिद्ध हो रही है।

महादुरशाह : कसी प्रायंका ?

हकीम एहसानुस्साफ़ी यह मराठा शाहजहाँ बहुत वास्तविक है। यहाँ तो आपसे कह गया था कि भारत से अंग्रेजों को निकालकर मुगल सम्राट को फिर से भारत का शासक बनाएगा लेकिन उसने आपको धाम-ए शक रतकर अपना राज्याभिषेक भी करा लिया। असल में वे भारत में हिंदू राज्य स्थापित करना चाहते हैं।

महादुरशाह (मुसकराते हैं) वत, इतनी-सी बात के लिए हकीम जी का दम निकलन लगा। तुमको मासूम होना चाहिए कि पेशवा के राज्याभिषेक के समय सबसे पहले १०१ तोपों की सलामी देकर हमारा सम्मान लिया गया और हमें भारत का सर्वोपरि शासक स्वीकार लिया गया है।

हकीम एहसानुस्साफ़ी माना साहब की ईशामदारी की परीक्षा का समय बद्राघित् धर्मा आया नहीं। यदि सबमूख ही प्रपञ्च भारत से चले गए तो वेगेंगे कि कौन भारत का वास्तविक शासक बनेगा।

जोनस महस दिस्ती सदा से ही भारत के शासन का कन्द्र रही है और जो दिस्ती का अधिपति होगा वही भारत का सम्राट होगा, इसमें संदेह करने का कोई कारण नहीं है।

हकीम एहसानुस्साफ़ी लेकिन अंग्रेजों के चले जान क या माना साहब अब पछुए अपने हाथ-पैर बाहर निकालेंगे। तब देरना है कि दिस्ती पर वास्तविक अधिकार किसका होगा। वहीं ऐसा तो नहीं होगा कि जहाँपनाह मराठों के

उसी प्रकार आश्रित बने रहेंगे जिस प्रकार भ्रष्टों के थे ।
बहादुरशाह हकीमजी याद रखिए, बिश्वास करने से विश्वास उत्पन्न होता है । हमारे हृदय में यदि कपट नहीं है तो हमस भी कोई कपट नहीं करेगा यदि उसमें सेशमाम भी इंसानियत है । माना साहब और हम एक ही नौका के यात्री हैं और सम्मिलित प्रयत्न से ही मंवर से अपनी नौका को पार सगा सकते हैं । यह संकट हम सारे भारत-वासियों को एक मूत्र में बांधन के लिए आया है और एक प्रकार से अभिशाप के रूप में हम परदान सिख होगा । हम जानते हैं हकीमजी, कि आप जो कुछ कहते हैं हमारे प्रति हितचिन्तना से ही कहते हैं सक्रिय हमें ऐसा लगता है कि आजकल आपकी दृष्टि धुंधली पड़ गई है ।

[बहादुरशाह 'बदर' अपने विषेय महर के सहारे बैठे हैं और हुक्मे का सेवक हाथ में लेकर बघ खींचते हैं ।]

हकीम एहसानुस्ताना यदि मेरा परामश बर्हापनाह को अनुचित जान पड़ता है तो मैं इसके लिए जमाप्रार्थी हूँ । मैं जो कुछ कहता हूँ अपने विश्वास के अनुसार ही कहता हूँ । आपके सेवक के नाते आपकी आज्ञाओं का पालन भी करता हूँ चाहे उनसे सहमत न होऊँ ।

बहादुरशाह बठो मसिका ! तुम भी बठा हकीमजी, शाहजाद तुम भी, अभी बाड़ी दर बाद ही सरदार यस्तता आएगा । उसे हम नियमपूषक मुख्य सेनापति बनाएंगे तथा मसिफ्य में नगर का प्रयाप और मुख का संभासन कस किया जाए, हम गम्बाय में भी निर्णय लेंगे । तुम साथ भी अपनी

सम्मति दे सकते हों ।

[इकीम एहसानुल्लाहां घोर मिर्ची अबाबकत बैठ जाते हैं लेकिन बीनत महल नहीं बैठी ।]

महादुरशाह तुम भी बठो मेरी नूरजहाँ । तुम्हारे बिना तो कोई भी महत्त्वपूर्ण निजाम नहीं लिया जा सकता ।

बीनत महल मामा कीशिर जहाँपनाह । अब न तो आप जहाँ गीर हैं न मैं नूरजहाँ । वे दिन गए जब शाहशाहे हिंद को एक स्त्री के परानश की भावश्यकता थी । मेरा स्थान हरम में है । मैं जाने की आज्ञा चाहती हूँ ।

महादुरशाह लेकिन आज तक हर महफिल में, हर मजलिस में तुम हमारे साथ रही हो आज क्या बिल्सी रास्ता काट गई ?

बीनत महल अबत बात यह है कि जहाँपनाह तो राग-द्वेष से ऊपर उठकर करिदता बन गए हैं लेकिन मैं तो इसी जगत में रहनेवासी नारी हूँ । आसिर बक़्तलां रहेला है, उसकी रगों में ऐसे व्यक्ति का रक्त है जिसने सभी मुगल शाहजादियों को निर्यस्त होकर अपने सामने नृत्य करने को बाध्य किया था । मैं किसी छेत्त को अबत नहीं देखना चाहती ।

[बीनत महल का प्रस्थान ।]

महादुरशाह कितने दुःख की बात है कि मनुष्य बाप-दादों के पदराप के लिए उनकी सत्ता को दंड देते हैं । जिसके पुरतों में जिसके पुरता के साथ क्या किया, इसका हिस्सा सपाया जाए तो सारे संसार में एक भी व्यक्ति ऐसा न

निकलेगा जो किसी दूसरे व्यक्ति की गर्दन काटने के लिए तैयार न होमा। इंसानियत बर को याद रखने में नहीं भूल जाने में है। ध्यान हम सारे अतीत काम के बैर भावों को भुलाकर एक जान होकर अपने वेद की पराधीनता की बेड़ियां काटने के लिए प्रसन्न हुए हैं। हमें एक जग के लिए भी अपना सक्य नहीं भुलाना चाहिए।

[बस्तसा का प्रवेश। वह प्रौढ़ धाम का लंबे धीरे बलिष्ठ शरीरवाला व्यक्ति है। उसका व्यक्तित्व प्राकर्षक धीरे प्रभावशाली है।]

बस्तसा (कोनिश करता हुआ) अर्हानाह को मुहम्मद बस्तसा कोनिश प्रदा करता है।

बहादुरशाह हम वीरवर सरदार बस्तसा का स्वागत करते हैं।
धामो, बठो हमारे पास।

बस्तसा अर्हानाह में सिपाही प्रदमी हू राबसमा में चाह दाहे हिग्द के पास बैठने की घुष्टना में नहीं कर सकता।
घोड़े की पीठ ही मेरे लिए सबसे ऊंचा स्थान है।

[मिर्जा मुगल मिर्जा कोयाश धीरे मिर्जा प्रबूबकर का प्रवेश।]

मिर्जा मुगल (कोनिश करता हुआ) अर्हानाह को मिर्जा मुगल कोनिश प्रदा करता है।

मिर्जा कोयाश (कोनिश करता हुआ) अर्हानाह को कोयाश कोनिश प्रदा करता है।

मिर्जा प्रबूबकर (कोनिश करता हुआ) अर्हानाह को प्रबूबकर कोनिश प्रदा करता है।

अर्हानाह बंठो दाहबासो।

[तीनों दाहबासो बैठे हैं।]

बहादुरशाह हम कहते हैं, बस्तुवा, तुम भी बैठो ।

बस्तुवा जहाँपनाह, यस्तुवा, सभी बैठेगा जब वह उम उद्देश्य की पूर्ति कर लेगा जिसके लिए वह यहाँ आया है ।

हकीम एहसानुस्नायाँ दिस्लीवासों को आपसे बहुत घागाएँ हैं ।

मिर्जा जयाँपत हम ४२ दिन से दिस्ली की स्वामीनता के लिए जूझ रहे हैं लेकिन अभी तक न तो अंग्रेजों की नगरी में प्रवेश करने में सफल हुए न हम उन्हें पहाड़ी पर से हटाने में ।

बहनवाँ दिस्ली के युद्ध पर सारे भारत की दृष्टि गड़ी हुई है । यहाँ सम्पूर्ण भारत की प्रतिष्ठा दाव पर लगी हुई है । इस कारण यह हम सभी का कर्तव्य है कि हम पूरा पराक्रम संपन्न, उत्साह और अनुशासन से यहाँ के युद्ध का संचालन करें । मैं वरेली में रहकर भी दिस्ली की परिस्थिति के समाचार एकत्रित करता रहा हूँ । और मुझे आप लोग क्षमा करें कि उन समाचारों से मेरे मन को सन्तोष नहीं हुआ इसीलिए मैंने शाहंशाह की सेवा में उपस्थित होने का निर्णय लिया । मैं अपने साथ चार पन्नाति पसदनों, सात सौ घादबारोही सैनिक छः पुङ्गवही तोपें, तीन बड़ी तोपें और अस्त्र-शस्त्र लेकर आया हूँ । मैंने अपनी सेना का छः महीने का वेतन अग्रिम दे दिया है इसके बदला में मेरे पास चार सौ रुपये धोप हैं जो मैं शाही कोष में जमा करा दूँगा ।

बहादुरशाह हम तुम्हारी इस सहायता के लिए बहुत धांधरी हैं ताकि हमारे लिए सेना, अस्त्रों और धन से अर्पित

मूल्यवान् तुम्हारा युद्धक्षेत्र का अनुभव है। युद्ध के सवाल-जवाब का भार भी हम तुमको सौंपना चाहते हैं।

वस्तुतः : जहाँपनाह, मैं प्रकट पठान हूँ। आप के लिए प्राण बड़ा देना हम पठानों के लिए एक खेल है। लेकिन अंग्रेजों से युद्ध करके सफलता प्राप्त के लिए केवल व्यक्तिगत वीरता ही पर्याप्त नहीं है। वीरता में हम भारतीय किसी भी प्रकार अंग्रेजों से हीन नहीं हैं, अंग्रेजों की भारत में हुई सभी सहायता उनके लिए हमें भी मिलनी पड़ी है। आज भी दिल्ली को पुनः जीतने अंग्रेजों की जो सेनाएं आई हैं उनमें भी बहुसंख्या भारतीयों की है। अंग्रेज यदि धैर्य है तो अनुशासन और सैन्य-संगठन में—योजना के अनुसार कार्य करने में, सेना और सस्त्रों का समयानुक्रम प्रयोग करने में। यह तभी सम्भव है जब सारी सेनाएं किसी एक अनुभवी, योग्य और साहसी व्यक्ति की आधीनता में हों, सेना के पास पर्याप्त सस्त्र हों, उसे समय पर प्राप्त हो।

निर्वाह बर्बाद आपसे अधिक योग्य व्यक्ति हमें और कौन प्राप्त होगा। माग्य से सुवा ने आपको यहाँ भेज दिया है।

निर्वाह बर्बाद हम आपके आदेशों का पालन करेंगे।

निर्वाह बर्बाद मैं तो एक साधारण सैनिक के रूप में भी युद्ध भूमि में कार्य करने को प्रस्तुत हूँ।

कौम एहसानुस्ताफा किन्तु एक कठिनाई है कि विभिन्न स्थानों से आई हुई सेनाएं क्या वस्तुतः बहापुर के नेतृत्व

में युद्धभूमि में काय करने को प्रस्तुत होंगी ? साहसादे धातिर मुगल राजवंश के दीपक हैं, उनके ब्यक्तित्व की पृष्ठभूमि में एक गौरवपूर्ण इतिहास है जिसके कारण प्रत्येक सैनिक उनका सम्मान करता है और उनकी आज्ञा मानता है। भारत में परम्परा ऐसी ही जसी आई है कि सेनापति प्रायः राजवंश में से ही होते वसे आए हैं।

मिर्जा मुगल मुझे ब्यक्तिगत रूप से मुख्य सेनापति बने रहने का पाव नहीं है लेकिन देश के ब्यापक हित में मुझे कहना पड़ता है कि मुगल साम्राज्य में जो प्रसिद्ध सेनापति, हिन्दू धरवा मुनसमान हुए हैं वे सभी राजवंशों में से होते आए हैं। इसलिये सम्राट कोई नई परम्परा बनाने के पूव उसके परिणामों को सोच लें।

बहादुरशाह समय और परिस्थिति के अनुसार परम्पराओं को परिवर्तित करनेवाले देश ही जीवित रह सकते हैं। यदि राजवंश के ब्यक्तियों में युद्ध-सञ्चालन की योग्यता हो, साहस हो, नतिक बल और धार्मिकविश्वास हो तो निदर्य ही उनके सेनापतित्व में सेना उल्टाह से भाग लेगी लेकिन उनमें इन गुणों का अभाव हो तो मुख्य सेनापतित्व की पगड़ी उसी ब्यक्ति के सर पर बांधी जानी चाहिए जिसने युद्धों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया हो, इसलिए हमारा यह निदर्य है कि आज से सेना के मुख्य सेनापति सरदार बल्लखा बहादुर होंगे जिन्हें आज हम अपना पुत्र स्वीकार करते हैं। मुख्य सेनापति के साथ हम उन्हें दिल्ली का मुख्य शासक भी नियुक्त करते हैं—

हकीम एहसानुल्माजा : किन्तु, जहाँपनाह !

बहादुरसाह ठहरो, अभी हमारी बात पूरी नहीं हुई। साहजादा मिर्जा मुगल मुख्य सेनापति का सहायक होगा। इसके प्रतिरिक्त बख्तखां जिस व्यक्ति को जो काम सौंपना चाहें सोपें इन्हें पूर्ण स्वतंत्रता होगी।

बख्तखां जहाँपनाह सेबक से क्या अपेक्षा करते हैं ?

बहादुरसाह हमारी तुमसे पांच अपेक्षाएँ हैं। पहली यह कि दामुघों के मोर्चों को छोड़ो जिन्हें छोड़ने का हम इतने दिनों से प्रयत्न कर रहे हैं, दूसरी यह कि जो सवार तथा सिपाही किसे के भीतर तथा मगर में अबदस्ती घुस आए हैं उनके लिए ऐसा उपाय करो कि वे दारपनाह के बाहर ठहरे और सूट-मार तथा प्रजा को कष्ट पहुँचाने से उन्हें रोका जाए, तीसरी यह कि नदीन तथा प्राचीन सेवकों का वेतन बंट जाए, चौथी यह कि सगान की बसूसी तथा यामों का प्रबन्ध सेना द्वारा किया जाए, पाँचवीं यह कि दारु के अधिकांश दुष्ट सिर्सगों का वेश बनाकर खरीकों तथा भसे घावमियों के घरों में वे बहाना बनाकर घुस आते हैं कि वे दामुघों को शरण दिए हुए हैं अथवा रसव या समाचार दामुघों को पहुँचाते हैं और उनकी घम-सम्पत्ति सूट सेते हैं उनकी रोकथाम की जाए।

बख्तखां : जहाँपनाह मैं सैनिक और नागरिक दोनों दासनों का उत्तरदायित्व मुख्यतः डालता उसको मैं सफलतापूर्वक निभा सकूँ इसके लिए मुझे आशीर्वाद दीजिए। मैं गंवार पठान आदमी हूँ मुझे घुमा-फिटाकर बात करना नहीं आता

इसलिए मैं स्पष्ट कहता हूँ कि मेरा शासन फ़ीरोर होगा, यदि शाहशादे हुबूरो ने भी नागरिकों से अपने लिए धन प्राप्त करने की कोशिश की तो मेरा शासन-वण्ड उम पर भी चलेगा उस समय सम्राट पितृ प्रेम के कारण दया करना चाहेंगे तो मुझे बहुत मिराजा होगी।

अहाबुरदाह हम ऐसा ही कठोर शासन चाहते हैं। शाहशादा को भी नियम, नियंत्रण और अनुशासन में रहना होगा।

अस्तस्ता अहापनाह मैं गरीब लोगों में से हूँ और समझता हूँ कि सबसाधारण प्रजा की सहानुभूति ही यह बस है जो हमें विजय के निकट ले जाएगी, अतः मैं चाहता हूँ कि अंग्रेजी राज और हमारे राज का अन्तर वे तुरन्त समझें।

मिर्जा बोयाज इसके लिए क्या किया जाए ?

अस्तस्ता अहापनाह नमक और धनकर पर से कर उठा दें।

हकीम एहसानुस्तस्ता युद्ध के समय हमें आमदनी बढ़ाने का यत्न करना चाहिए न कि घटाना।

अस्तस्ता युद्ध एक असाधारण स्थिति है और उसमें व्यय भी असाधारण होता है और उसके लिए प्रजा को भी और शासकों को भी त्याग करना पड़ता है और बचत सहन पड़ते हैं। फिर भी शासन का अर्थ है कि निर्धन प्रजा के कष्टों का ध्यान रखें। धन तो प्राप्त करना ही होगा लेकिन वही सब जिनके पास है। जो गाय भूखी है वह दूध क्या दगी ? हमें रईमों आगारदारों सेठ-साहूकारों का विद्वान और सहयोग प्राप्त कर युद्ध के व्यय का प्रबंध करना होगा मामगुदारी को धन की ठीक प्रबंध करना होगा तथा

अपने व्यक्तिगत सर्वे काम करने होंगे ।

बहादुरशाह हम तुमसे सहमत हैं, बक्तशां ! तुम जिस तरह भी चाहो राज का प्रबन्ध करो, हमारी एकमात्र शर्त साफ़ यह है कि सेनिकों को वेतन समय पर मिले, उनका जो पिछला बकाया हो वह भी दे दिया जाए, साथ ही प्रजा पर भी ऐसा आर्थिक बोझ न पड़े कि वह हमारे राज को अस्थिरता से भरने लगे । हम आशा करते हैं कि राजबन्ध से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्ति सादा जीवन बिताकर अपने कर्तव्यों में कमी न करेंगे । हमने शराब पीनी छोड़ दी है, हम शाहसदों से भी चाहेंगे कि वे समय की मांग को समझें ।

बख्शशां जहाँपनाह की उदारता ने मेरे हृदय को जीत लिया है । बड़े भाग्य से ही किसी देश को पिता के समान स्नेहपूर्ण शासक प्राप्त होता है । एक निवेदन मेरा शीर है ।

बहादुरशाह कहो । निस्संकोच कहो ।

बख्शशां शत्रु दो प्रकार के होते हैं । एक आंतरिक दूसरे बाह्य । बाह्य शत्रु को हम देख पाते हैं और उससे मोहा से सकते हैं किन्तु जो विश्वासघाती साँप बिनो में छुपे बैठे रहते हैं और रात्रि के अंधकार में बाहर निकलकर घापात करते हैं वे अधिक भयानक होते हैं । मैं यद्यपि दिस्ती में नहीं था फिर भी मुझे इसके समाचार प्राप्त होते रहे हैं कि अंग्रेजों ने यहाँ अपने समर्थक प्राप्त कर लिए हैं । उनके गुप्तचर हमारी सामरिक योजनाएँ उनको पहुँचाते रहते हैं दिस्ती से शराब और प्रस्त्र-शास्त्र भी उन्हें प्राप्त

होते रहते हैं। रात्रु ने हमारी मुरापा के दुग में जो गुप्त संघ लगा रखा है उसका भी प्रबंध करना होगा।

मिस्रि अब्दावक्त निश्चय ही हमें देशद्रोहिनों का पसा लगाकर उन्हें तोपों से उड़ा देना होगा।

बस्तुना ही, हम इस संबंध में अपराधिया पर दमा नहीं कर सकते। मुझे भंडारों की सेना का डर नहीं उनकी तोपों का हम उचित उत्तर देने में समर्थ हैं—लेकिन हिंदुओं में बहादुर है कि घर का बेदी संका बहावे। उसके अनुसार हमारा संपूर्ण साहस सारी बीरता और सामरिक योजनाएं विफल हो जाएंगी यदि हम देशद्रोह के पद्यों का समाप्त न कर सके।

मिस्रि अब्दुकर इस संबंध में प्राय क्या कदम उठाना चाहते हैं ?

बस्तुना पहल हमें इन बात पर सोचना होगा कि भंडारों से मिलकर देशद्रोह करने में व्यक्तिगत लाभ किस हो सकता है एवं स्वराज्य में किन व्यक्तियों को कष्ट प्राप्त होने की प्रायश्चा है। उदाहरण के लिए उन लोगों को सीजिए जो भंडारों से पैसा पाते हैं। इस अनिश्चित समय में उनकी पैसों पर है तथा वे समझते हैं कि यदि भंडार पराजित हुए तो उन्हें भविष्य में पैसों नहीं मिलेंगी। ये सोच, स्वाभाविक है कि, भंडारों की विजय चाहते होंगे और उन्हें गुप्त समाचार पहुंचाने में सहायक होंगे।

बहादुरशाह हम समझ गए तुम्हारे भाषण को, बस्तुना ! पहले हमें ऐसे उपाय करने चाहिए जिनसे उनके मय दूर

हो जाए और वे भी स्वाधीनता के सपना में हमारे सम-
वर्क बन जाएं ।

राज्यपाल इसलिये यह आवश्यक है कि अर्हापनाह घोषणा करें
कि यह बात सर्वपर विवित है कि बहुत-से पेंशन पानेवाले
—माफी की भूमि के स्वामी आदि जो इस शहर तथा पास
पास रहते हैं, उन्हें इस बात की संका हो सकती है कि
अंग्रेजों का राज्य समाप्त होने के कारण उनकी जीविका
का सामन बंद हो जाएगा और इस विचार से वे अंग्रेजों
के हितैषी बनकर पश्यन रब सकते हैं, समाचार और
रसव पहुंचा सकते हैं, मत यह धाम हुनम दिया जाता
है कि विजय के उपरान्त प्रमाण मिस जाने पर जो जिसका
होगा उसे प्रदान किया जाएगा, अशांति के कारण अितने
दिन बंद रहेगा वह भी उन्हें प्राप्त होगा । इस आदेश क
प्राप्त होने के परवाह जो व्यक्ति किसी प्रकार के समा-
चार अथवा रसद अंग्रेजों को पहुंचाएगा उसे कठोर बंद
दिया जाएगा । कोतवाल शहर को आदेश दिया जाता है
कि तुम अपने इलाके क माफीदारों, आगीरदारों तथा
पेंशनदारों को हमारा यह आदेश पहुंचा दो ।

निर्वा अचूककर इससे उन लोगों के मय तो बुर हो जाएंगे
जिनके हित अंग्रेजों से संभल हैं लेकिन जिन लोगों का
अपराध प्रमाभन देकर हमारे विच्छ पश्यन करने के
लिए राजी बन रहे हैं, उनका भी तो उपाय होना
चाहिए ।

राज्यपाल हमें अपने गुप्तपर विभाग का उसी प्रकार संयुक्त

करना चाहिए जिस प्रकार अंग्रेजों ने हमारे विरुद्ध किया है। और, ये बातें हैं जो हमें सोच बिचारकर निश्चय करनी हैं। इस समय तो जहाँपनाह माझा वें तो मैं दिल्ली में पहले से आई हुई सेनाओं का मुआयना करना चाहूँगा। दो-एक दिन के भीतर ही सपूख सेना को एक सूत्र में बाँध कर अंग्रेजों को पहाड़ी पर से हटाने के लिए सुयोजित प्राक्रमण करूँगा और मुझे विश्वास है कि तुदा की मर्जी, जहाँपनाह का भागीर्वादि और दाहजार्दों का सहयोग मुझे मिता तो पीछे ही हम अंग्रेजों पर विजय प्राप्त करेंगे।

बहादुरशाह बहादुर बस्तपा, हम तुम्हारी वीरता, सगन देश-प्रेम और मूर्च्छरू से बहुत प्रसन्न हुए। हम तुरन्त ही तुम्हारे मुख्य सेनापति और मुख्य शासक नियुक्त होने की घोषणा करवाते हैं, उसके पदवात् हम स्वयं छापनियों में तुम्हारे साथ चलेंगे और सेनाधिकारियों से शपथ लेंगे कि सारी सेनाएं तुम्हारे अनुशासन में मुँद करेंगी। तुम उन्हें प्वासा-मुसी के मुँह में बूद जाने को कहो तब भी सकोच न करेंगी। आज की सुधी के उपसक्ष्य में हम हकीम-एहसानुस्साफी को आज्ञा देते हैं कि ४००० रुपया तुरन्त सरकार दरतला को प्रदान किया जाए जो वे अपनी सेना में बटिया दें।

[बहादुरशाह 'उधर' चलने स्थान से उठकर बल्लला के पास पाते हैं और उसके घर पर अपना हाथ रखते हैं।]

बहादुरशाह तुम न केवल सेनानायक हो अपितु हमारे पुन

से भी बढ़कर हो । (मपनी कमर से तलवार खींचकर बख्शियों को देते हुए) हम तुम्हें अपनी निजी तलवार भेंट करते हैं । यह हमारे स्नेह और विश्वास की प्रतीक है । इसके साथ और सम्मान का ध्यान रखना ।

[बख्शियां तलवार लेकर अपने बांधे से लपटा है ।]

[पदाब्ज]

तीसरा अंक

पहला दृश्य

[स्वान—पूर्ववत् । समय सन्धा । सम्राट बहादुरशाह 'जङ्गल' मछल के सहारे बैठे हैं और निर्जाबबाबल पाद में बैठे हुए समाचारपत्र पढ़कर मुना रहा है ।]

बहादुरशाह पढ़ो, आज के देहली उर्दू बसवार ने क्या लिखा है ।

जवाबल (समाचारपत्र पढ़ता है) जो सूरत और ठठान सरकार बखला के कायों की है, उससे पात होता है कि तुदा की कृपा से यह सेना तथा मगर की प्रजा का सोमाम्य है कि यह उषष पदाधिकारी राज्य-व्यवस्था तथा मुद-संवाजन के लिए निमुक्त हुआ । जो-जो बपसर जिस जिस कार्य के योग्य थे उनके लिए उसी प्रकार के काय नियमानुसार तथा राज्य के हित को दृष्टि से निर्दिष्ट किए गए । जो अधिकारी राज्य प्रबध समिति में सम्मिलित किए जाने योग्य थे, उन्हें उसमें लिया गया । ब बफसरों, सैनिकों तथा प्रजा से बड़ा सौजन्यपूर्ण व्यवहार करते हैं । उनके मुप्रबध से इस सप्ताह में जो मुद हुआ उसमें बहुत गोरे मारे गए पशुओं की बहुत बड़ी भीड़ मूठी और मारी गई । एक दिन पशु की रसद पर अधिकार

जमा लिया गया। पूर्ण विश्वास है कि यदि इसी प्रकार इन्हींके हाथ में घासन और मुठ-संघासन रहा तो प्रजा भी सुखी रहेगी और घनेजों पर भी विजय प्राप्त होगी। बहादुरशाह हमें संतोष है कि प्रजा न बकल्ला के कायों का मुख्य समझा।

[मिर्जा मुगल का प्रवेश।]

मिर्जा मुगल जहाँपनाह को मिर्जा मुगल कीर्तिश प्रशंसा करता है।
बहादुरशाह प्राप्ति वीठो।

[मिर्जा मुगल बैठा है।]

बहादुरशाह कहो कुछ मई बात है ?

मिर्जा मुगल बातें तो बहुत हैं लेकिन जहाँपनाह उनपर गम्भीरता से विचार करे तो मैं कुछ निवेदन करूँ नहीं तो मैं अपनी शब्दावली पर तामा लगाए रखना ही उचित समझता हूँ।

बहादुरशाह हमारे पास साधारण से साधारण व्यक्ति भी स्वतंत्रतापूर्वक अपनी बात कह सकता है फिर तुम तो साहजादे हो और जब से हम गद्दी पर बैठे हैं तुम हमारे मुख्य दीवान के रूप में कार्य करते रहे हो। अन्य साहजादों की भाँति तुम सूफानी प्रवृत्तियोंवाले नहीं हो, इसलिए भी हम तुम्हारी कद्र करते हैं। तुमने कभी बलीमहदी के लिए झगड़ा नहीं किया। हमने कुछ मोप-मममकर ही तुम्हें सेना का मुख्य सेनापति भी बनाया था।

[हकीम एहसानुस्लाखा का प्रवेश। उसके हाथ में कुछ कापडा है।]

हकीम एहसानुस्लाखा (कीर्तिश करता हुआ) जहाँपनाह को हकीम

एहसानुस्मातां कोनिध बदा करता है।
बहादुरशाह आया हकीम जी यहाँ।

[हकीम एहसानुस्मातां स्वागत प्रकृत करता है।]
बहादुरशाह (निर्वा मुगल से) तुम्हें जो कहना हो, निस्संकोच
घीर निर्भय होकर यहाँ।

निर्वा मुगल जब से बरतलों का आगमन हुआ है मुझे दुःख के
साथ कहना पड़ता है कि मगर के रईसों घीर सेठ साहू-
कारों में घातक छा गया है। वे अपने उत्साह में इस
बात को भूल गए हैं कि मुगल घातकों का इन रईसों से
ब्या परम्परागत संबंध है।

हकीम एहसानुस्मातां जी हाँ जहाँपनाह मेरे पास भी अनेक
प्रायना-पत्र आए हैं जिनमें इस वृत्ता शरदार के कामों
की आलोचना की गई है।

निर्वा अर्थात्कित्तु इस अन्तबार ने उनकी बहुत प्रशंसा की है।
हकीम एहसानुस्मातां अन्तबार में अपनी प्रशंसा प्रकाशित
कराने की वस्तुओं को आवश्यकता जान पड़ी यही इन
बात का प्रमाण है कि कुछ दास में वास्तव प्रवृत्त है।

बहादुरशाह हम अनुभव करते हैं कि वस्तुओं के आगमन के
दिन से ही तुम लोग उसके विरुद्ध हो। हम ठो समन्तरे हैं
कि यह एक ईमानदार शासन घीर और मोटा है। राज्य
प्रथम में भी घीर संघासन में भी यह कटोर अनुशासन
देतना चाहता है, क्योंकि उगने अंग्रेजी सेना में रहकर
स्वयं कटोर अनुशासन में जीवन व्यतीत किया है घीर
उसके महत्त्व का समझता है।

जमा लिया गया। पूरा विश्वास है कि यदि इसी प्रकार इन्होंने हाथ में शस्त्र घोर युद्ध-सञ्चालन रहा तो प्रजा भी सुखी रहेगी और अंग्रेजों पर भी विजय प्राप्त होगी। बहादुरशाह हमें संतोष है कि प्रजा में बख्तस्तों के कामों का मुख्य समझा।

[मिर्जा मुगल का प्रवेश।]

मिर्जा मुगल जहांपनाह को मिर्जा मुगल को नित्य भया करता है।
बहादुरशाह घामो बठी।

[मिर्जा मुगल बैठा है।]

बहादुरशाह कहो कुछ नहीं बात है ?
मिर्जा मुगल बातें तो बहुत हैं लेकिन जहांपनाह उनपर गम्भीरता से विचार करें तो मैं कुछ निवेदन करूँ नहीं तो मैं अपनी शपथ पर तामा लगाए रखना ही उचित समझता हूँ।

बहादुरशाह हमारे पास साधारण से साधारण व्यक्ति भी स्वतंत्रतापूर्वक अपनी बात कह सकता है फिर तुम तो चाहना हो और जब से हम गद्दी पर बैठे हैं, तुम हमारे मुख्य-दीवान के रूप में कार्य करने लगे हो। अन्य चाहनाओं की भाँति तुम तूफानी प्रवृत्तियोंवाले नहीं हो, इसलिए भी हम तुम्हारी फ़र्द करते हैं। तुम भी बलीमहदी के लिए लड़ा नहीं किया। हमने कुछ मोच-भ्रमभङ्कर ही तुम्हें सेना का मुख्य सेनापति भी बनाया था।

[हकीम एहसानुस्ताख़ा का प्रवेश। उनके हाथ में कुछ कागज़ात हैं।]

हकीम एहसानुस्ताख़ा (को नित्य करता हुआ) जहांपनाह को हकीम

एहसानुस्ताखों को निश्चिन्त छोड़कर देना है।

यहानुरशाह आशो हकीम जी, बठो।

[हकीम एहसानुस्ताखों को स्थान प्रदान करता है।]

यहानुरशाह (मिर्जा मुगल से) तुम्हें जो कहना हो, निस्संकोच और निर्भय होकर कहो।

मिर्जा मुगल अब से यरतखों का आगमन हुआ है मुझे दुःख के साथ कहना पड़ता है कि नगर के रईसों और सेठ साहूकारों में घातक छा गया है। वे अपने उस्ताह में इस बात को भूल गए हैं कि मुगल शासकों का इन रईसों से क्या परम्परागत सम्बन्ध है।

हकीम एहसानुस्ताखों जी हाँ, जहाँपनाह मेरे पास ही अनेक प्रायना-पत्र आए हैं जिनमें इस छद्मा सरकार के कार्यों की आलोचना की गई है।

मिर्जा जहाँपनाह किन्तु इस सरकार में उनकी बहुत प्रशंसा की है। हकीम एहसानुस्ताखों अक्सर में अपनी प्रशंसा प्रकाशित करने की कसूरियाँ को आवश्यक्ता जान पड़ी यही इस बात का प्रमाण है कि कुछ दास में कासा अवश्य है।

यहानुरशाह हम अनुभव करते हैं कि कसूरियों के आगमन के दिन से ही सुम सोग उसके दिखने लगे। हम तो समझते हैं कि यह एक ईमानदार शासक और धीरे धीरे है। राज्य प्रथम में भी धीरे धीरे संघासन में भी वह फटोर अनुशासन देरना चाहता है, क्योंकि उसने अंग्रेजी सेना में रहकर अंग्रेज सरकार अनुशासन में जीवन व्यतीत किया है और उसके महत्त्व का सम्मता है।

मिर्ठा मुघल क्षमा कीजिए जहाँपनाह, आप जो देखते हैं अपने कानों से देखते हैं और हम लोग जो देखते हैं वह घासों से देखते हैं, आप जो विचार करते हैं वह हृदय से करते हैं और हम लोग अपने मस्तिष्क का भी प्रयोग करते हैं। जिन्हें रात-दिन सैनिकों और प्रजा में रहने का प्रबन्ध मिसता है वे ही उनकी वास्तविक भावनाओं और समस्याओं को जान पाते हैं।

हकीम एहसानुल्लाहा (एक पत्र खोलता हुआ) यह देखिए, नगर के गण्यमान्य व्यक्तियों का यह पत्र है। इसमें लिखा है कि कोतवास ने उन्हें आदेश दिया है कि वे सदास्त्र तथा संगठित होकर बरेली की सेना के अधीन तयार रहें, पता नहीं इस आदेश का अर्थ क्या है, क्या उन लोगों को भी जिन्होंने अभी सस्त्र नहीं पकड़े अब युद्धभूमि में प्राप्त गंवाने जाना पड़ेगा ?

[बस्तियों का प्रवेश]

बस्तियाँ : जहाँपनाह की बस्तियाँ बर्तन भरा करता है।
 बहादुरशाह मामो बस्तियाँ बर्तन तुम्हारे ही संबन्ध में हो रही थी।

बस्तियाँ जी अंतिम कथन मैंने सुन लिया है। मेरे मुँह से यदि कोई बठोर शब्द निकल जाए तो मैं उसके लिए पहल ही से क्षमा मांग लेता हूँ। मानता हूँ, मैंने नागरिकों को सदास्त्र रहने की आज्ञा दी है, जिनके पास सस्त्र नहीं उन्हें मुफ्त सस्त्र देने का प्रबन्ध भी मैंने किया है पता नहीं कोतवास ने किस रूप में मेरी बात नागरिकों के पास पहुँचाई और बिम्ब

संतोषियों ने उसका क्या आग्रह उन्हें समझकर भड़का दिया। मैंने उन्हें सेना में कार्य करने का आदेश तो नहीं दिया।

मिर्जा जवाबदस्त नागरिकों का सहाय्य करने से आपको क्या साम है ?

शरतदा साह प्रत्यक्ष है। सेना का कोई व्यक्ति हो, चाहे पुंडा हो, यदि वह नागरिकों को घुटने का यत्न करे तो बे धपनी रदा तुरन्त कर सकेंगे। नागरिकों में आत्मविश्वास और धपनी रदा स्वयं करने की भावना जागनी चाहिए। धपनी प्रजा को निर्यास्य वही दासक करता है जो विदेशी और आत्माचारी दाता है, जिसे प्रजा का विश्वास प्राप्त नहीं है।

मिर्जा मुघल आपने मेरे विद्वत् भी जांच जारी की है यह आरोप लगाकर कि मैंने सेठ-साहूकारों से बसपूर्वक धन एकत्र किया है और उसे राजकोष में जमा नहीं किया।

शरतदा मैंने साहसाह को प्रारम्भ में ही कह दिया था कि मैं साहसाहों की मनमानी भी नहीं करने दूंगा। म्याय के सम्मुख छोटे और बड़े का भेद नहीं होता। आपकी जो आशयकथाएं हैं, उनके अनुसार आपका बेतन निपुक्त है, आपकी कोई अधिरार नहीं कि आप अपने दरवाजे के लिए या मीठ-मजे के लिए प्रजा से अनियमित तरीक से धन बसूल करें। मात्र आप ऐसा करेंगे तो कस साधारण सैनिक भी नहीं करेगा।

मिर्जा मुघल भविष्य आप मुझसे मिथ्या आरोप लगाकर साहसाह, प्रजा और सैनिकों में बदनाम करके मुझे

सबकी मजदूर में गिरा देना चाहते हैं—मेरा प्रभाव नष्ट कर देना चाहते हैं ताकि आपका कोई प्रतिद्वन्द्वी न रहे। मैं कह देना चाहता हूँ कि मैंने कभी किसीके धन का धप हरण नहीं किया। एक स्वयं और एक साज स्वयं का मूल्य बराबर मानता हूँ। आज आप चाहें तो निरक्षर बनाने में लगे हैं, कस के दिन चाहें तो के ऊपर भी हम साज करेंगे।

बस्तुवा नहीं चाहें तो हूँ! बस्तुवा की सत्ता प्राप्त करने का मोह नहीं है। वह तो एक सामान्य सैनिक है। जैसे तो खींचतान करने से उसका भी किसी राजवंश से सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है लेकिन वह राज वंश में जन्म लेने को कोई गौरव की बात नहीं मानता। चाहें तो आप भी वह कैसे इसलिये करता है कि वे एक उदार और स्नेही पुरुष हैं। आज भारत ने उन्हें भारतीय एकता का प्रतीक बनाया है। आज भारत को एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है, जिसके नाम पर बिगुंसस घटिया एकत्रित हो सकें। वह व्यक्ति है सम्राट बहादुरशाह 'अकबर'। उनके सम्मान की रक्षा में भारत का सम्मान है और भारत का सम्मान आज उनके नामों पर निर्भर है। यदि वे चाहेंगे तो बस्तुवा दिस्ती में रहेगा नहीं तो बसा जाएगा।

बहादुरशाह तुम लोगों के भगवों में हमें बहुत दुःखी कर दिया है। क्या हम भारतीय एकता होकर कभी अपने देश की स्वतंत्रता और उन्नति के लिए कार्य नहीं कर सकते ?

मिर्जा मुगल एकमत होने का भय यह नहीं है जहाँपनाह कि साधारण-सा व्यक्ति घाकर सारी सत्ता पर अधिकार कर से, अपने-आपको सम्राट का भी सम्राट समझे और हम सारे अपमान तिरिहू गये की भाँति सहते जाएं। इन्हें प्रजेजों से सड़ने की चतनी विन्ता नहीं है जितनी अपनी प्रभुता के प्रदशन की। आज मैं सेना को तयार करके घाक्रमण हेतु बाहर निकसा किन्तु इन्होंने विघ्न डालकर पूरी सेना को व्यथ छाड़ा रखा। यह कहकर कि इनकी अनुमति के बिना सेना बाहर नहीं जा सकती इन्होंने सेना को वापस सौटा दिया। इससे एनियों के सामने मेरा अपमान हुआ।

बस्तासा मुझे दुःख है कि मुझे आपकी कायवाही में हस्तक्षेप करना पड़ा किन्तु मेरा उद्देश्य आपका अपमान करना नहीं था। आपन घाक्रमण की क्या योजना बनाई है, इसकी कोई जानकारी मेरे पास नहीं है। हमारे लिए यह बहुत ही नाजुक समय है प्रजेज युद्ध-कीदत में घसाधारण योम्यता रखते हैं उनपर हम जो भी घाक्रमण करें, उसे परस्पर मसी भाँति सोच-विचारकर याचनापूर्वक करें। एक-एक कदम समझारी के साथ चठाएँ। हमारी सेनाओं का पारस्परिक धारत्वम्य टूटने न पाए। इसी काम के लिए तो मुख्य सेनापति होता है। हो सस्ता है आज के घाक्रमण में आपको कुछ सफलता भी मिल जाती— आपको भाँति भी प्राप्त होगी किन्तु क्या किसी एक सड़प से हम पूर्ण विजय प्राप्त कर सकते हैं? नहीं। ऐसी

स्थिति में मैं अपनी किसी सेना को स्वतंत्र कार्यवाही करने की आज्ञा नहीं दे सकता ।

मिर्जा मुग़ल इस अपमानजनक परिस्थिति में मैं इस युद्ध में कोई भाग नहीं ले सकता । शाहंशाह मुझे छुट्टी दे सकते हैं ।
हकीम एहसानुस्खाना लेकिन इतनी सरसता से घाय अपने उत्तरदायित्व से छुटकारा नहीं पा सकते । माना कि बरेली की सेना बख्तखा के द्वारे पर प्राण देने को प्रस्तुत है लेकिन दिल्ली में केवल बरेली की ही तो सेना नहीं है । देश के कोने-कोने से अनेक सेनाएं एकत्र हुई हैं, उनका विश्वास किसपर है, यह भी तो हमें मासूम करना चाहिए । अनेक सेनाओं ने यह प्रार्थना-पत्र शाहंशाह की सेवा में उपस्थित करने के लिए दिया है ।

[हकीम एहसानुस्खाना एक पत्र शाहंशाह बहादुरशाह 'बखर' को देने के लिए चला है ।]

बहादुरशाह घाय ही पढ़कर सुनाए, हकीम जी ।

हकीम एहसानुस्खाना इसका आशय यह है कि बख्तखा तोपखाने के अफसर थे । वे इसी नाम को जानते हैं । युद्धक्षेत्र में सम्पूर्ण युद्ध के संचालन के वे योग्य नहीं । मिर्जा मुग़ल को सेना के समस्त प्रबन्धों का जो अधिकार दिया गया था, वह उनके योग्य था । समस्त सेना चाहती है कि वे हमारे सेनापति नियुक्त हों ।

बख्तखा इस प्रकार के मैं भी अनेक प्रार्थना-पत्र मिलना सा सकता हू कि समस्त सेना बख्तखा को मुख्य सेनापति चाहती है और उत्तर हस्ताक्षर करनेवाले वे लोग भी हो सकते

हैं जिन्होंने निर्वा मृगम द्वारा लिखवाए हुए इस प्रापना-पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं। लेकिन मैं विवाद बढ़ाना नहीं चाहता।

[बस्वला अपनी तलवार बहादुरसाह 'बकर' के चरणों में रखता है।]

बस्वला एक दिन बड़े उत्साह के साथ यह तलवार मेरे प्रापसे प्राप्त कर अपने मन्त्रक से लगाई थी। आज बहुत दुःख के साथ इसे साहसाह की लीटा रहा हूँ। मैं सौट जाऊंगा बरेली, वहाँ से थला जाऊंगा लखनऊ। आज तो सारे देश में अण्डों के विह्वल भाग भड़की हुई है। मेरे लिए खेत खुला हुआ है। अपने देश के लिए युद्ध करना मेरी साम्राज्य में अत्यन्त पूज्य करनेवा। मैं आपसे विदा लेता हूँ प्रहोपनाह।

[बस्वला पाने लयता है। बहादुरसाह 'बकर' उठकर बस्वला का हाथ थामता है। सेप लोम भी घट खड़े होते हैं।]

बहादुरसाह ठहरो बस्वला! अगर तुम लोम अपने आपोमे तो इसे हम अपनी सबसे बड़ी हार समझेंगे। जब तक हमारा विन्वास तुमपर है तुम्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं।

बस्वला अहोपनाह दिस्ती का दावाकरण ही विचित्र है। जब यहाँ कोई सना घाती है तो बहुत उत्साह से मरी हुई घाती है, लेकिन दिस्ती का पानो पीकर और चांदनी चौक के दो बकर लगाकर उनकी मनोबुद्धि ही बदल जाती है, मानो वे युद्ध करने नहीं आए हैं, पता नहीं इस नगर की बाहु में अफीम का प्रभाव है या क्या बात है ?

मुख्य कारण यह जान पड़ता है कि प्रारम्भ से ही इन्हें अनुशासन में रखने का यत्न नहीं किया। पहले से जो सैनिक यहाँ हैं उनका प्रभाव नबायुंत्सकों पर भी पड़ता है।

मिर्जा मुगस क्या आपके पहले हमारी सेनाओं ने अंग्रेजों से युद्ध ही नहीं किया ?

वस्तुतः किया क्यों नहीं ? आखिर जो पसटनें यहाँ आईं, वे अंग्रेजों के नियन्त्रण में सैनिक शिक्षा पाई हुई थीं। उन्होंने युद्ध सड़े थे। उन्होंने अपनी परम्परा धीरे धम्यास के अनुसार युद्ध तो किए लेकिन नेतृत्व के अभाव में उनकी विजय भी पराजय में परिणत हो गई।

हज़ीम एहसानुल्लाहा अब आप ही कुछ बमत्कार कर दिखाइए। अंग्रेजों की मकसद तो आप बहुत करते हैं। आज मगशीन का मुद्रायमा करते हैं कम नगर के रईसों को पुत्तिस द्वारा बुलवाते हैं, परसों राशन खाटा देलते हैं। यही सब-कुछ करते रहने से तो आप अंग्रेजों को पहाड़ी पर से न हटाने पाएंगे।

बस्तुतः लेकिन मैं यदि सभी धीरे नहीं देखूंगा तो अगल वस सास तक भी पहाड़ी पर से नहीं हटाए जाएंगे। यह मुठ है इसका प्रत्येक विभाग एक-दूसरे का पूरक है। एक विभाग की दुबसता से भी जीती बाजी हारी जा सकती है। मुझे खुशी होती कि मेरे पास योग्य और ईमानदार अधिकाारी हों जो प्रत्येक विभाग को बुलु रखते। योग्यता के सम्बन्ध में मैं बहुत बड़ा दावा नहीं करता लेकिन ईमानदारी के सम्बन्ध में मैं कह सकता हूँ कि मैं आप सब

भागों से होइ से सञ्चता ह । भाप सुनकर चौंक्य कि प्रयत्न करने पर भी हम अंग्रेजों के गुप्तचरों और देशद्रोहियों के प्रयत्नों का जाम नहीं ठोड़ पाए हैं । आज हम जो भापस में विवाद कर रहे हैं, यह भी अंग्रेजों के जरूरीद लोगों का काम है जो हमें परस्पर सड़ा रहे हैं ।

हकीम एहसानुस्साला भाप समझते हैं कि हम अंग्रेजों के हाथ बिके हुए हैं ?

बदतला यह न समझिए हकीम साहब कि मैं यहाँ बचा होकर सड़ रहा हू । मेरी एक नहीं हजारों भाँसे हैं, हजारों हाथ-पाँव हैं मेरे । आपने अनेक पत्र मेरे विरुद्ध जहाँपनाह के सम्मुख उपस्थित किए । मेरे पास भी एक पत्र है जो मैं जहाँपनाह के हाथों में ही रूमा ।

[बदतला के ब से एक पत्र निकालकर बहादुरशाह 'अकबर' को देता है जिसे वे खोजकर बढ़ते हैं ।]

बहादुरशाह (मन ही मन पढ़ता है और पढ़ नये के बाद) इमारी भाँसे योगा ग्या रही हैं या हम स्पन्द-माद में हैं ?

हकीम एहसानुस्साला जगमें है क्या जहाँपनाह ?

बहादुरशाह यह है आपका, मिर्जा इनालीबदग धीर अफ़्दुल-घमी का अम्बिनिन पत्र अंग्रेजों के दूतद्वारा बिजल । अचिराती हकान के नाम । इमारा म, अंग्रेजों के दूतद्वारा बिजल गार है और अंग्रेजों तथा अंग्रेजों के अंग्रेजों के हाथों कर देन का मा अंग्रेजों के हाथों है ।

हकीम एहसानुस्साला जग में है या अंग्रेजों ?

[बहादुरशाह 'अकबर' के दूतद्वारा बिजल गार है ।]

हकीम एहसानुस्लाखी कितना पबदस्त आस है मह !
बख्तखी क्या मैंने जाल किया है ?

हकीम एहसानुस्लाखी मैं यह तो नहीं कहता कि आपने जाल किया है। हो सकता है कि अंग्रेजों ने ही यह जाली पत्र बनाकर आपके हाथों तक पहुंचवा दिया ताकि हमारे सम्बन्ध एक-दूसरे से विगड़ जाएं। सार्हंशाह की सेवा में मेरा सम्पूर्ण जीवन व्यतीत हुआ है और आपका नामक मेरी रम-रग में बिधा हुआ है। मैं देश को नहीं जानता लेकिन सार्हंशाह को अपना खुदा मानता हूँ। मैं अपनी मान्यता के अनुसार उनकी शुभ कामना के लिए कुछ भी निवेदन कर सकता हूँ, लेकिन सच्चाई से विश्वासघात करने की अपेक्षा गले में फांसी लगाना पसन्द करूँगा। जहाँपनाह मेरी गर्दन हाथिर है यदि आप समझते हैं कि यह पत्र जाली नहीं है तो असाइए तसवार !

[हकीम एहसानुस्लाखी गर्दन झुकाते हैं।]

बहादुरशाह उठिए हकीमजी ! जानते हो कि हम आपपर इतना विश्वास करते हैं कि आप कभी हमारे कसबे में छुरी भी मार दोसे तो हम शिवायत न करेंगे। हमारी जान तो सदा ही तुम्हारे हाथों में रही है और अनेक बार तुमने हमें नई बिस्ली दी है, कोई कारण नहीं कि आज तुम्हें हमसे अधिक अंग्रेजों की बिस्ला हो।

बख्तखी अब मेरे लिए क्या आशा है ?

बहादुरशाह (तसवार बन्दगी को देखे हुए) सम्हालते अपनी तसवार, यही हमारी आजा है। तुम पूवपत् मुख्य सेनापति

धीरे मुख्य घासक हो, लेकिन कुछ ऐसा भी उपाय करना चाहिए जिससे चाहनादे भी उत्साहपूर्वक युद्ध में भाग ल सकें। इसपर हम विचार करेंगे। भव हम लोग विदा से एक-दूसरे से। कस्त फिर मिलेंगे।

[सबका प्रस्थान]

[पट-परिषत्तेव]

दूसरा युद्ध

[स्नान—पूर्वकम्। समय—दिन। जब वहाँ उठता है सब एक दामो वध्या बहानुरणाह 'बद्धर' का चिरसंगी हुका साकर रखते हुए दिखाई देती है। उसी समय मिर्जा इसाहीबख्त धीरे हकीम एहसानुस्मायी प्रवेश करते हैं।]

मिर्जा इसाहीबख्त (बायी से) यदि मलिका-ए-हिन्द को प्रवकाश हो तो हम उनके दमन करना चाहते हैं।

बायी भाप शयरीफ रसिए, मैं उन्हें समाधार देती हूँ।

[बायी का प्रस्थान। दोनों बँधे हैं।]

हकीम एहसानुस्मायी माई मिर्जा इसाहीबख्त, हम जो कुछ करते रहे हैं धीरे जो कुछ करना चाहते हैं, उसके विरुद्ध मेरी ही आत्मा विद्रोह करती है। माना कि हमारे गुप्त सहयोग से अंग्रेज फिर से दिल्ली पर अधिकार कर लेंगे धीरे यदि दिल्ली में अंग्रेजों को सफलता मिल गई तो उसका प्रभाव सारे भारत पर पड़गा, अंग्रेजों का बढ़ जाएगा धीरे भारतीय निरास होकर

जाएँ, प्रंग्रजों की सत्ता भारत पर और भी दृढ़ता से स्थापित हो जाएगी, इस स्थिति में वे हम हमारे सहयोग के बदले में पुरस्कृत करेंगे लेकिन इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि इतिहास हमारी करतूतों पर चुकेगा।

मिर्जा इनाहोबख्श हुकीमजी घापका कथन किसी सीमा तक उचित है लेकिन अथ मैं अपनी विधवा पुत्री को देखता हूँ जिसे विधवा बनानेवाली मसिका-ए-हिन्द खीनत बेगम है, तो प्रतिशोध की भावना मुझे घन्घा बना देती है। इस नोष औरत से बदला लेने का मैं निश्चय कर चुका था और खुदा ने वह दिन भी सा दिया तो उसका उपयोग क्यों नहीं किया जाए ? इस सम्बन्ध में घापने मुझे जो सहयोग दिया उसके लिए मैं बिर श्रेणी रहूँगा। समय घापको इसका बदला देया। प्रंग्रेज घापको मासामास कर देगे एक बड़ी जागीर के घाप स्वामी होंगे, घापकी पीढ़ियाँ जिसका उपयोग करेंगी।

हुकीम एहसानुस्साला समय खीनत महल का उसकी बुद्धता के लिए दण्ड दे, इसमें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं, लेकिन अथ मैं बड़े बादशाह के सविष्य क सम्बन्ध में सोचता हूँ तो मेरा कसेजा कांपता है। मेरा भी चाहता है कि मैं घातम हत्या करूं।

मिर्जा इनाहोबख्श घाहंदाह के लिए तो मेरे दिम में भी दद है हासकि नैतिक दृष्टि से वे भी घपराधी हैं। उन्होंने घाप होते हुए भी यह जानने के आवश्यकता न समझी

कि येचारा किसके पदचमन से मारा गया । इसके विपरीत, खीनत महल के कहने से, उन्होंने सारे शाहजादों से उस कागज पर हस्ताक्षर लिए जिसमें जवाबकत को उन्होंने बसीमहद स्वीकार किया है । उन्हें माध्य किया कि यह सिद्ध कर दें कि उन्हें सम्राट के नियम से सहमति है । सौर, कुछ भी हो मेरा धाम भी यत्न यही है कि विजय के पदचमन संघर्ष उनके मुक्त और सम्मान का ध्यान रखें । [खीनत महल का प्रवेश । उसका धाते ही मिर्जा इलाहीबख्श और हमीम एहसानुस्साला उठकर खड़े हो जाते हैं । जब खीनत महल बैठ जाती है तो वे दोनों भी बैठ जाते हैं ।]

खीनत महल कहिए क्या कहना चाहते हैं आप लोग ?

मिर्जा इलाहीबख्श मलिका ए हिन्द ! हम आपसे यही निवेदन करने आए थे कि मुगल राजवंश को सवनाथ से बचाने के लिए यदि आप सब भी प्रयत्न कर में तो प्रच्छा होया । अप्रेतों का साथ देने में ही आपका और शाहशाह का भसा है ।

हमीम एहसानुस्साला : अन्त में एक दिन संघर्ष विजय तो प्राप्त करेंगे ही, तब क्यों न शाहशाह विद्रोहियों का सभी से साथ छोड़कर अप्रेतों की धरण में चले जाए । उस स्थिति में हम यत्न करेंगे कि सम्राट का रतवा और उनका बजीका पूर्व पत्त वायम रहे ।

खीनत महल 'सेकिन क्यों ? यन्तों से शहमा होने के कारण मैं पूजा करती हूँ लेकिन फिर भी इस बात से इन्कार नहीं कर सकती कि उसने मुठ का स्व ही बदल दिया है ।

का समय था गया है। प्रंग्रस पहले घके को सम्हाल चुके हैं। उन्होंने कानपुर पर अधिकार कर लिया है। धीमे ही लखनऊ पर कर लेंगे। दिल्ली अधिक दिन नहीं टिकेगी।

[इसी समय एक भवाङ्क विस्फोट सुनाई देता है। तीनों चौकर उठ बैठते हैं।]

कीर्ति महल यह कैसा विस्फोट हुआ ? आकाश को प्रदम्बित करनेवाली इस आवाज ने मेरे हृदय को भयभीत कर दिया है।

[बहादुरसाह का बरपाए हुए प्रवेश।]

बहादुरसाह यह विस्फोट कहाँ हुआ ? वहीं प्रंग्रस नगर की बहारदोबारी में सुरंग लगाने में सफल तो नहीं हुए !

मिर्जा इसाहीबख्श ऐसा ही हुआ हो तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है जहाँपनाह ! प्रंग्रस सनिक इन्जीनियर, सुना है कि, अनेक स्थानों पर सुरंगें लगाने का यत्न कर रहे थे।

हकीम एहसानुस्माना लेकिन यह आवाज तो किसी साधारण सुरंग के फटने की नहीं है। इस प्रकार की आवाज तो केवल उस समय हुई थी जब मेरठ की सेना दिल्ली आई थी और अंग्रेजों ने अपना अस्त्रागार उनके हाथ में न पड़ने देने के लिए उसमें स्वयं ही आग लगा दी थी। कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि हमारे अस्त्रागार पर प्रंग्रसी तोपखाने ने गोला फेंका हो।

मिर्जा इसाहीबख्श : जहाँपनाह यह तो प्रंग्रसी सेना के वास्तविक आक्रमण का प्रारम्भ है। मैं कहता हूँ अब भी समय

है कि हम अपने लिए एक निश्चित माग चुन लें। जिन प्रदेशों से टीपू मुस्तान, जिसके पास फ्रांसीसिया द्वारा शिक्षित सना उबदस्त लोपें और कुदस सेनापति थे पार न पा सका, जिन्होंने नैपोलियन जैसे बिम्बविजयी सेनापति को भी पराजित कर दिया उनसे य विद्रोही सन्धि जीत सकेंगे, यह सोचना भ्रम है। आप चाहें तो आज भी वे आपका स्वागत करने को प्रस्तुत हैं। आप आज्ञा दें तो अंग्रेज अधिकारियों से आपकी गुप्त रूप से भेंट कराने का प्रयत्न किया जाए।

दीनत महस जी ही जहाँपनाह वक्तु ऐसा घा गया है कि हमें हठ छोड़कर अपनी रक्षा का उपाय करना चाहिए। यदि सम्राट को भय हो कि अंग्रेज अधिकारियों से भेंट करना संकटमय है सम्भव है कि हमारी सेना के अधिकारी बन्धुओं आदि जान जाए और आज सेना उनके अधिकार में है, इसलिए बदायित्त वे चाहनाह को ही बन्धी बना सेना चाहें, तो आप अंग्रेज अधिकारियों के नाम पत्र ही लिख सकते हैं।

बहादुरशाह नहीं, नहीं, मसिबा, हम मन्थार में नाब नहीं बदलेंगे। हमारे हमने अपने गारोरिब मुगों के लिए तो यह समझ नहीं छोड़ा है बहुत गर्द फोड़ी रही, हम नदी किनारे के पेश हैं, समय की एक सहर अभी भी हमें यहाँ से जाएगी। जिसलिए अपने राजिब मुगों के लिए हम देवद्रोह करें। अगर हमें कस्त्रामूपनों में सजकर मान दिलाना, मुग की सेना पर सोना और धराब के आम

पीकर सांसारिक भ्रान्द का उपभोग करना होता तो क्यों न हम प्रारम्भ से ही भ्रष्टों का साथ देते ।

खीनत महल लेकिन जहाँपनाह आपके साथ और भी बहुत लोगों के साथ संबद्ध हैं । आप तो नदी किनारे के पेड़ हैं—लेकिन मुझे तो अभी जीवन की सदी डगर पार करनी है, अभी आप साथ हैं—लेकिन पुराने परे कस में सबका झकेसी हो जाऊँ तो मरना क्या सहारा होगा ? फिर जवाबकत भी है, जिसे बलीग्रह्य बनवाने के लिए मैंने कौन-सा पाप नहीं किया, उसीके लिए पहले भ्रष्टों से मेल किया, उसीके लिए भ्रष्टों से कुछ छिड़वाया और उसीके लिए फिर उनसे मेल करना ही आवश्यक समझती हूँ । चाहूँगा, यदि आपको अपने ऊपर दया नहीं आती तो कम से कम मुझपर और जवाबकत पर तो दया कीजिए ।

[खीनत महल की छाँवों में घाँस भर आते हैं ।]

जहाँपनाह हमारी झण्टी बेगम ! तुम्हारे एक घाँस पर हम सत्तार भर के साम्राज्य को कुरबान कर सकते हैं लेकिन संसार के साम्राज्य से भी बड़ी वस्तु है इंसानियत । जरा उन लोगों के विषय में सोचो जो हमारे लिए अपने प्राणों की यात्री लगाए हुए हैं । क्या उनके बीबी-बच्चे नहीं हैं ? यदि उनकी पत्नियाँ और बच्चे छाँवों में घाँस भरकर उनकी राह में लड़े हो जाते और वे उन घाँसुओं से प्रभावित होकर बनिदान के पथ पर भ्रष्ट न होते तो देव और धर्म के लिए सड़ता कौन ? राष्ठा इंसान बह

हू जो परमार्थ के लिए स्वार्थ को तिसांजलि देता है ।

जीनत महस मैं नहीं जानती थी कि जहाँपनाह का हृदय पत्थर का बना हुआ है ।

बहादुरशाह गुन का घमस्कार देखो, जीनत कि जो मालन की भांति मरम होता है वही पत्थर की भांति कठोर भी । देता के दोन दुखिया की स्थिति से जिसका हृदय विषसित हो उठता है, वही उनके दुःखों को दूर करने के लिए तमवार पकड़ता है और वही स्वजनों के प्रांगुलों का वेदनी सं कुपलता हुआ समरभूमि में प्राण बढ़ाने जाता है ।

जीनत महस घबेजों के हाथ से मेरी बद्धबन्दी कराने के पहले घाप मेरा गला घोट दीजिए, जहाँपनाह ! मार डालिए मुझे । मार डालिए अपनी इस बेगम को जिसे घाप अपनी जिदगी कहते थे । घापने मुझे बेहद प्यार किया है, मैं घापके हाँ हाथ से मरना चाहती हूँ ।

बहादुरशाह (परे हुए बने थे) बेगम, हमारी और परीक्षा न लो । मुगल घराने की महिलाओं को इतनी कायरता नहीं दिखानी चाहिए । घब रसो, गुदा इतना तिष्ठर और घन्यायी नहीं है कि सत्य, धर्म और अपने देश को प्यार करनेवालों पर बहुर डाले । इसमें संदेह नहीं कि हमारी नाव भंवर में है लेकिन हाथ पाँव फुला सेने से तो सहूरें हमें निगम जाएगी । वीर हृदयवाला वह है जो विपत्ति में घबे नहीं छोड़ता ।

[छः सात वैनिकों के साथ बकाबा का प्रवेश। बस्तियों के हाथ में लंबी तलवार है। वैनिक लोग बंदूकों लिए हुए हैं। बकाबा की प्राण-श्रेय से घास हो रही है।]

बस्तियाँ (वैनिकों से एहसानुस्माता की धोर हंगित करके) बंदी बना सो इन्हें।

[एहसानुस्माता बहादुरशाह 'कठर' के पीछे बड़ा हो जाता है।]

बहादुरशाह ठहरो। कम से कम हमारे राजमहल में घभी हमारा ही राज है। हमारी अनुमति के बिना कोई किसी के घरीर पर हाथ नहीं लगा सकता।

मिर्जा इलाहोबखश बस्तियाँ, तुम्हारा इतना साहस बढ़ गया कि छाहशाह को कोनिश घदा करने की भी आवश्यकता तुमने नहीं समझी और उनके सामने ही उनकी अनुमति के बिना उनके पुराने बिस्वस्त घाभी को गिरफ्तार करने लगे।

बस्तियाँ : (छाहशाह को कोनिश करवा हुआ) क्षमा कीजिए जहाँ-पनाह। उसजना की पराकाष्ठा में मैं साधारण शिष्टाचार को भी भूल गया, इससे सम्राट यह न समझें कि मैं आपका धादर नहीं करता। आपका धादर करते हुए ही मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि इस देशद्रोही को हमारे हथामे कर देने की कृपा कीजिए।

खीनत गज़न इन्होंने क्या देशद्रोह किया है ?

बस्तागाँ ये घप्रेडों से मिले हुए हैं। घभी आपने जो विस्फोट सुना है, वह हमारे दरवागार के जलने से हुआ है और उसे जलबाया है इस कापुरूप देशद्रोही ने।

बहादुरशाह क्यों हकीम को आपका क्या कहना है ?

हकीम एहसानुल्लाहो जहाँपनाह मैं ऐसा कर सकता हूँ, इसपर यदि आप बिस्वाम कर सकते हैं तो मुझे कुर्ते की मोठ दीजिए ।

बकसली कस मैंने मामकिस पर से दूरबीन से देखा था । ये जमुना में एक नौका पर हड़मन के साथ बैठे हुए थे । घाम हम देखते हैं कि हमारे घस्त्रागार में भाग लयी हुई है । हम और भी प्रमाण एकत्र कर रहे हैं संकित देशद्रोही को हम और भी घनर्य करने के लिए खुला नहीं छोड़ सकते । जहाँपनाह, इन्हें हमारे हवासे कर दें इतनी ही मेरी प्रार्थना है ।

खोजत महल और जहाँपनाह ऐसा न करें तो ?

बकसली तो, मैं जहर का घुंटा पी जाऊँगा, लेकिन यह बड़े बिना न खूया कि स्वयं जहाँपनाह मोहबसा स्वाधीनता के मुद्दे को विफल करने का कारण बन रहे हैं । मेरे घाने के पूष भी हमारे सनिक बीरता से लड़े हैं यद्यपि उन महादर्यों के पीछे निश्चित योजना का प्रमाण था । मेरे घाने के पदशात् भी इतने तिनो तक हमारे सनिक बीरता से लड़े हैं । उनमें पहले को अपेक्षा अधिक घनुगायन भी है, पर सभी भी पूष एतता हम स्थापित नहीं कर पाए, इसका कारण प्रंसरों के ऐस अतगत है । अब जबकि प्रंसर घपनी सक्ति पूषरूपेण जुटा चुके हैं और हमारे निचारक घात्रमण करनेवाते हैं तो हमारे घस्त्रागार में भाग लाने कर हमें घनाद्विज बना देने या जपय काय ऐसे लोग कर

रहे हैं। और जहाँपनाह ऐसे देशद्रोहियों को खरब दे रहे हैं। ऐसी स्थिति में हम किस प्रकार युद्ध कर सकते हैं ?

जीतल महस ता आप युद्ध बन्द कर दीजिए और सातकिसे पर सफेद झंडा फहरा दीजिए।

वस्तुता मैं जहाँपनाह के मुँह से सुनना चाहता हूँ।

बहादुरशाह नहीं बकलता खब तक हमारे भड़ पर सर कायम है सातकिसे पर सफेद झंडा नहीं फहराया जाएगा।

वस्तुता और यदि जहाँपनाह चाहते तब भी यह संग्राम बन्द नहीं होता। चिन्ता नहीं आज किसीकी दुष्टता से हमारा सस्त्रागार खल गया है, फिर भी अंग्रेजों के हीसे पस्त करने की हमारे सैनिकों में अभिसाया का अन्त नहीं हुआ है। हमारे पाँच कारखाने काम कर रहे हैं हमें थोड़ा भी समय मिल गया तो अस्त्र-शस्त्रों की कमी की पूर्ति हम कर सके और नहीं भी कर पाए तो हमारे पास जो कुछ है, उसी साधन से हम लड़ेंगे। यह तो प्रजा का विदेशियों से संग्राम है, यह बंद बादी के दुकड़ों के लिए सैनिक का पेया खपानेवालों की भीड़ नहीं है—यह तो देश पर प्राण खड़ानेवालों का दस है। यह तो आपकी अबला बरके युद्ध जारी रखेगा।

बहादुरशाह हम अपने सैनिकों की सयन को देखकर बहुत प्रसन्न हुए।

वस्तुता हमें अंग्रेजों की संघीनों का डर नहीं, हम उनकी तोपों के धावे छीने बढ़ा देंगे, लेकिन यदि विदवासघात आपकी छत्रछाया में पड़ेगा तो हमारे सारे प्रयत्न, संपूर्ण

साहस, सारी सगन और सारी रणधातुरी व्यय जाएगी । हकीम एहसानुस्ताखी जहाँपनाह निश्चय ही बरतलों को घोसा हुआ है । हो सकता है, हडसन ने किसी व्यक्ति को मेरे जैसा कपड़ पहनाकर, कुछ मेरे जैसा रूप भी उसका बनाकर चांदनी रात में यमुना की सहरोँ पर नाव में अपने साथ इसीलिए घुमाया हो कि कोई हमारी घोर से देखे घोसे में भाए और फिर धूममें परस्पर सघप छिड़ । घंघेजों के लिए सब कुछ समव है । वे अद्भुत शस्त्रों से सड़ते हैं ।

बहादुरशाह कुछ भी हो । बरतलों हम नहीं चाहते कि केवल सदेह में हो किसीपर अत्याचार हो आए, इसलिये हम जाँच करेंगे । यदि एहसानुस्ताखी अपराधी पाए गए तो हम स्वयं दंड देंगे यद्यपि हमपर इनके बहुत उपकार हैं । इन्होंने हमें अनेक बार मौत के मुँह में से बचाया है । फसहान ये हमारे पास रहेंगे । तुम वाहो ठो लासकिस में ऐसा पहरा रख सकते हो कि इन्हें भाग जाने का अवसर न प्राप्त हो ।

बरतलों जहाँपनाह को भाभा को पीसे टासा या सऊता है ?

बहादुरशाह हा इस समय हम साग एक-दूमेरे से बिना सैं ।

[बहादुरशाह 'अठर' चीनत मदन और हकीम एहसानुस्ताखी का एक घोर घोर दुसरी घोर रोष सऊता प्रत्यान ।]

[पट-परिचयन]

तीसरा दृश्य

[स्नान—गुर्बखत् । समय—रात । पर्दा उठता है तब सम्राट बहादुर शाह 'अफ़्जर' कबिता लिखते हुए बिछाई पढ़ते हैं । उनके सामने एक सभा बस रही है । बख्तखा प्रवेश करता है ।]

बख्तखा (कोनिश करवा हुआ) जहाँपनाह को सेबक बख्तखा कोनिश भेदा करता है ।

बहादुरशाह प्रायो बख्तखा आज हम बादशाह नहीं, घायर हैं । पास बैठो । हम अपनी नई रचना सुनाएँगे ।

[बख्तखा अपना स्नान प्रहण करता है ।]

बख्तखा सुनाइए जहाँपनाह !

बहादुरशाह कहा है—

दुदमन अब हर तरफ भाबुर्द
या भसीमे वसी बराये खुदा,
कौने गैबी पये मदद बे फिदस्त,
अबतु स्वाहद हमों अफ़्जर व दुभा ।

बख्तखा यह तो फारसी है जहाँपनाह ! मैं तो कुछ हिंदुस्तानी सैनिक हूँ । मुझे तो हिंदुस्तानी में अब समझाएँ तभी मैं पूरा ध्यान दे सकूँगा ।

बहादुरशाह अब है—उनु मे प्रत्येक बिद्या से घेर लिया है
हे इमाम हेजरसभसी खुदा के लिए सहायताय दीबी सेना
भेजिए, अफ़्जर तुमसे यही प्रायना करता है ।

बख्तखा जहाँपनाह प्राय जित दली सहायता की याचना कर रहे हैं वह तो हिंदुस्तान के कोने-कोने में बिगरी पड़ी है । उसके लिए आपको दिल्ली छोड़कर चलना पड़गा ।

भारत का प्रत्येक हृदय आपकी राजधानी है। लोग आपको घर घाँसों पर रखेंगे।

बहादुरशाह क्यों बरखा, क्या दिल्ली सचमुच अंग्रेजों के हाथ में धली जाएगी? सुनने ला फहा था—मैं मैगजीन को नगर के बाहर से आ रहा हूँ। मैं अंग्रेजों के गोसों की वर्षा का मुकायमा ४० टोपों से करूँगा जिसके लिए बट्टियाँ तैयार कर रहा हूँ जो अंग्रेजी सेना को रमद पहुँचना रोक देंगे। किन्तु हुमा क्या? अंग्रेजों ने दिल्ली नगर में प्रवेश पा ही लिया।

बहादुरशाह जहाँपनाह, इसमें मेरा क्या है। हमारी प्रत्येक योजना से शत्रु पहले ही परिचित हो जाता था। शत्रु ने हमारे बीच गुप्तधरों का ऐसा जाल बिछा दिया कि हमारी कोई योजना गुप्त नहीं रही। हमारी पराजय हो, ऐसा चाहनेवाले और इसके लिए प्रयत्न करते रहनेवाले हमहीं लोगों में मरे हुए थे और अभी तक भरे हुए हैं। फिर भी एक-एक चप्पा भूमि के लिए हम लड़ रहे हैं। एक तिहाई दिल्ली पर अधिकार करने में अंग्रेजी सेना के ६६ अफसर और ११०४ सैनिक शेर रहे। यह तो केवल एक दिन में हुआ, उधर पञ्जाब भी हमने कंपनी सरकार के सामग ४००० व्यक्तियों को भीत में घाट लगाया। हमने अपना नी और शत्रु का भी रक्त पानी की तरह बहाया।

बहादुरशाह दगाका वो हमें अफसोस है कि दिल्ली की घसी-गसो में रक्त गी बाढ़ था गई, फिर भी हम शत्रु के

हुए कदम को रोक नहीं पाए। अब ये सालकिले पर भी आक्रमण करेंगे और मुगल साम्राज्य के गौरवपूर्ण अतीत की याद दिमानेवाला यह भव्य किसा भी घूम में मिस जाएगा।

बख्तखां किन्तु जहाँपनाह, इस सालकिले से भी अधिक मजबूत, अधिक गौरवमय है मुगल राजवंश की कीर्ति। उसकी रक्षा करने के लिए यदि सालकिले को घूम में भी मिलना पड़े तो अफसोस करने की कोई बात नहीं, लेकिन मैं देखता हूँ कि हमने गढ़ और चहारदीवारी की घाड़ सेकर ही घूम की। हमने दून दीवारों की घाड़ सेकर १३५ दिन युद्ध किया जबकि हमें चाहिए था पहले ही दिन से हम चहारदीवारी के बाहर निकलकर अंगरेजों से युद्ध करते। यदि दिस्ती की तरफ जानेवाले रास्ते हम रोक बैठते तो कैसे वे हमसे सड़ने के लिए सनाभों और तोपों का इतना आभाव कर पाते, और कैसे उन्हें हममें पारस्परिक कूट उत्पन्न करने का अवसर प्राप्त होता ?

[मिर्जा इसाहीबख्त का प्रवेश]

मिर्जा इसाहीबख्त जहाँपनाह को मिर्जा इसाहीबख्त को निश्चय भेदा करता है।

बहादुरशाह बैठे।

[मिर्जा इसाहीबख्त स्थान ग्रहण करता है।]

बख्तखां जहाँपनाह अभी तक कुछ विगड़ा नहीं है यद्यपि हमारे सहस्रों सैनिक दिस्ती छोड़कर चले गए हैं फिर भी अभी सहस्रों-साराओं तमबारे आपके सैनिक पर उठने को

प्रस्तुत हैं। भारत की प्रथा का मुगल राजवंश से कितना सगाव है और अंग्रेजों से कितनी घृणा है इसका अनुमान स्वयं आपकी नहीं। और जहाँपनाह, मैं इस बात को भी नहीं मानता कि दिल्ली पूज्य हमारे हाथ से निकल गई है। सकिम अब उसे बचाने का यत्न करना व्यर्थ है। फिर भी शत्रु के आगे मस्तक झुमाने की अपेक्षा शत्रु सेना को पीरता हुआ मैं मियाल जाऊँगा। भारत के करोड़ों आदिमिया की ओर से मैं प्रायना करता हूँ कि जहाँपनाह मेरे साथ चले। मैं आपका दास भी बाना नहीं होऊँगा।

मिर्जा इत्ताहीबख्त बाल तो बाना नहीं होने दोगे लेकिन जहाँपनाह को अंग्रेजों के हवाले कर उनकी तरफ अग्रदूत उड़वा दोगे।

[बख्तवाली शीप में आकर उठ पड़ा होता है और अपनी तमवार निराम लेता है।]

पत्तनवाली हाँ, तुम्हारा घर अबदूत भुट्टे की तरह उड़ा गया। अभी तक तुम लोग जहाँपनाह के पीछे जाँक की तरह मगे हुए हो। हजारों नारतिय सैनिकों का घून तो मुम लोग भी पी चुके हैं और अभी तक तुम्हारी प्यास नहीं बुझी है। मात्र मेरी तमवार तुम्हारा घून पिएगी। उठो, और निवासो तमवार, मैं बसाई नहीं बनना चाहता, बराबर का मृद करना मेरा धर्म है।

[मिर्जा इत्ताहीबख्त उठकर तमवार निकामता है। बख्तवाली और मिर्जा इत्ताहीबख्त दोनों ही एक-दूसरे पर प्रहार करने के लिए

तसवारों का गठे हैं। यहानुराह 'बठर' लोगों के बीच चले होकर लोगों के हृत्प प्राप्त करते हैं।]

यहानुराह एक आम्नो बस्तुना और एक आम्नो इसाही यस्त ! जो तसवारों प्रगजा के विस्त उठनी चाहिए क्या वे परस्पर भाई-भाई म ही टकराएगी ।

[बस्तुना और मिर्जा इसाहीबस्तु अपनी तसवारों नीची करते हैं ।]

बस्तुना हमारी विल्मी में जो पराजय हुई है उसके अनेक कारण हैं किन्तु उनमें एक कारण अहापनाह की समानता और कुछ विद्वान्प्रतिष्ठों पर प्रभविश्वास करना भी है । जिस महाबिटर की छाया में वे बठे थे, उसे ही जङ्ग-मूस से फाट आसना इन्होंने उचित समझ है, क्योंकि इन्हें आशा है कि इससे भी बड़े विद्वान् की छायाएँ पा सकेंगे । और आप सत्य से झल्ले फेरकर बठे हैं ।

मिर्जा इसाहीबस्तु पहले अपने अंतःकरण में झंझकर देखो बस्तुना ! तुम हो रहेले पठान ! तुम्हारे युवकों ने क्या किया ? मुगलों ने पठानों से विल्मी का तत्त छीना था—तसवार की ताकत से प्राप्त किया था, किन्तु रहेलों ने तुलामद के जोर पर अपने स्वामी मुगल सम्राट का विद्वान् प्राप्त कर बाद में उनका ही गहीं हरम की महि साम्रा का भी अपमान किया । अब तुम क्या उगी इतिहास को दोहराना चाहते हो ? बादशाह बेममात, चाह आदे और गान्धारियों का साथ म जाकर उनके साथ क्या-क्या दुष्प्रवहार करोगे, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती ।

बख्तखाना मिर्जा इलाहीवल्हा, मुगल और पठानों के बीच हुई कुछ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं की बुझाई देकर सम्राट के उदार हृदय को विपाक न परो ! स्वायत्तता, सत्ता प्राप्ति का सोच और अदूरदर्शिता के कारण अनेक नृशंस काय मानव ने किए हैं । हिन्दुओं को मुसलमानों से शिकायत हो सकती है मुसलमानों को हिन्दुओं से शिकायतों का सुनिश्चय से तो सुनिश्चयों की शिकायतों से पठानों को मुगलों से तो मुगलों को पठानों से मराठा को मुगलों से तो मुगलों को मराठों से तात्पर्य यह कि इतिहास के पृष्ठ पोलने पर हम एक-दूसरे से सबने के लिए बहुत मराना खोज सकते हैं किन्तु इससे लाभ किसे होगा ? बख्तखाना खेसा है—लेकिन है तो भारतीय उसका साथ सहलों रहेनों में आकर भारत के सम्राट के लिए अपना रक्त यहाया है वह क्या इसलिए कि अन्त में सम्राट और उनके परिवार का अपमान करेंगे ? मैं कहता हूँ सम्राट, जहाँ आपका पसीना गिरेगा वहाँ हम अपना गून बहाएँगे । आप मेरे साथ दिल्ली से निकल गलिए । हम फिर आएँगे दिल्ली में विजय का डंका बजाते हुए ।

बहादुरशाह बहादुर अख्तखाना हमें तुम्हारी हर बात पर विश्वास है और हम तुम्हारी हर बात को पसन्द करते हैं । मगर तुममें और हममें बहुत अन्तर है । अंग्रेजों से लोहा सेने का आकाशना तुम्हें है उतना ही हमें भी है लेकिन अब हमारे अस्त्र में बुद्धि नहीं है । इस अब को सर पर सादे-सादे तुम बहाँ-पहाँ फिरोग । हम अपना मामला भाग्य को

समर्पित करते हैं। हमें विशेष तोप से उड़ा दें, फांसी लगा दें कुछ भी करें तुम इसकी चिन्ता न करो अन्तिम क्षण तक हम खुदा से दुआ मायेंगे कि भारत की स्वाधीनता का यह संग्राम सफल हो। इससे पहले कि तुम भी यहाँ किसी मुसीबत में फँस जाओ, तुम चले जाओ। हम नहीं, हमारे ज्ञानदान में से नहीं, तो न सही तुम या कोई हिन्दुस्तान की भाँज रखे। हमारी चिन्ता न करो अपने कर्तव्य का पालन करो।

वस्तुतः अच्छी बात है जहाँपनाह इस समय तो मैं जाता हूँ—लेकिन आपसे मेरा निवेदन है कि आप एक बार मेरे प्रस्ताव पर गम्भीरता से विचार कीजिए। इसाहीबक़्त, हकीमजी या मसिका खीनत महस के दिमाग से नहीं, अपने दिमाग से सोचिए। माना कि आपके शरीर में कुछबूँद नहीं है लेकिन आपकी उपस्थिति-मात्र विजसी का सा प्रभाव करेगी। आप घबरावों के हाथ पड़ गए तो हमारे स्वाधीनता-संग्राम को बहुत हानि होगी। सोच देखिए जहाँपनाह, यदि आप प्रारम्भ से ही इस संग्राम से घसग रहते तब भी कोई बात न थी। हम लोगों की इतनी सक्ति दिल्ली में मष्ट न होती। यह संग्राम तो छिड़ना या घोर छिड़ना ही, घोर छिड़ गया है तो जारी रहेगा, लेकिन जहाँपनाह का इससे घसग हो जाना हमारे हित में फायदा होगा। घेर, अभी तो मैं जाता हूँ, खुदा हाफ़िज !

बहादुरनाह खुदा हाफ़िज !

[बन्गाली का प्रस्थान ।]

मित्रता इत्यादीवद्वा जहांपनाह, आप मुझे चाहे विश्वासघाती कहें, चाहे देशद्रोही, लेकिन वास्तविकता यह है कि मैं सदा ही आपका हित चाहता रहता हूँ। मैं और हकीम एहसानुस्माना आपसे प्रार्थना करते रहे हैं कि आप बिद्रोहियों को मुंह न लगाएं। हम ऐसा इसलिए नहीं कहते थे कि अंग्रेजों की हुकूमत को हम पसंद करते हैं, बल्कि इस लिए कहते थे कि अंग्रेजों को पराजित करने के लिए जिस एकता और संगठन की आवश्यकता है उसका भारतीय वायुमंडल में उत्पन्न होना सम्भव है। एक सम्भव अवस्था अविद्यमान आशा के पीछे अपने सम्पूर्ण भविष्य को बांधी पर लगा देना उचित न था।

जहांपुरदाह हमने जो किया वही हमारा कर्तव्य था।

मित्रता इत्यादीवद्वा खैर, जो हो गया सो हो गया, लेकिन अब अवसर मिला है कि आप अपने-आपको बिद्रोहियों से अलग कर लें। यदि आप अस्तित्व के बहुबाधे में घाकर बिद्रोहियों के साथ जाएँ तो निश्चित रूप से आप कष्ट पाएँगे। बिद्रोहियों की पराजय तो निश्चित है ही। जो यहाँ हुआ है वही उन सभी स्थानों पर होगा जहाँ बिद्रोहियों को शक्ति प्राप्त हुई है। यदि जहांपनाह अपने-आपको बिद्रोहियों से अलग कर लेंगे तो अंग्रेजों को विश्वास हो जाएगा कि आप स्वतंत्र बिद्रोह में सम्मिलित नहीं हुए, बल्कि सैनिकों का दबाव पड़ने पर और कोई धारा न रहने के कारण ऐसा हुआ और अबतर मिलते ही आप उन दगाबाज और तमकहरामों से अलग हो गए।

घपने घापनी संघेजों के समर्पित कर देने में घापके पुलाव की रक्षाभी नहीं नहीं गई ।

बहादुरसाह अब साम्राज्य ही बना गया तो क्या पुलाव की रक्षा भी बिना हम करे बिना होवसु ? हमें कोई चीज दुबल पगती है तो वह है इतना बड़ा दाही परिवार । अच्छे वे वे राजपूत भी घपनी पराजय को निश्चित समझ कर उनमें से प्रत्येक पुरुष कसरिया बाना पहनकर रणभूमि में शत्रुओं से लोहा लेते हुए मर जाता या श्रीर प्रत्येक स्त्री जौहर की श्वासा में जस जाती थी । यदि आज हमारा परिवार भी ऐसा कर पाता तो मुगल राजवंश का गौरव बढ़ता । पुलाव की बात यह है कि हम चाहे कुछ भी सोचें परिवार के अन्य लोग घनी तक पुलाव की रक्षा भी ही बात सोचते हैं । हम चाहते थे कि जिस गौरव के साथ हम मुगल भारत में आए और जिस गौरव के साथ रहे उसी गौरव के साथ उनका व्यवसाय भी हो, किन्तु समय को यह स्वीकार नहीं हुआ तो हम क्या करें ? अच्छी बात है इसाहीबरात, हमारे साथ घापनी मासिका से परामर्श करके हम अंतिम निणय कर लें ।

[दोनों का प्रस्थान]

[बट-परिचर्च]

घोषा वृक्ष

[स्वाक—पूर्ववत् । समय—संध्या । जब परी उठता है तो कम मुना दिखाई देता है । दीवारों पर चित्र भी नहीं हैं । बहादुरगढ़ 'बछर' का हुक्का भी अपने स्थान पर नहीं है । एक घोर व मिर्जा कोयाज प्रवेश करता है और दूसरी घार से बस्तियां ।]

बस्तियां घाय हैं चाहजादा । सम्राट कहां हैं ?

मिर्जा कोयाज सम्राट हैं घंघरों की हिरासत में ।

बस्तियां : हिरासत में ! मैं तो उन्हें स जाने भाया था ।

मिर्जा कोयाज लेकिन समय उन्हें जियर ले गया उधर ही उन्हें जाना पड़ा । उनकी मसिका, इसाहीबख्त और हुकीम एहसानुस्सारा उन्हें से गए हैं मोत के रास्ते पर ।

बस्तियां मीत क रास्ते पर ?

मिर्जा कोयाज मैं इसे मीत का रास्ता ही कहूंगा । बहरबती के साथ जीवित रहना मृत्यु नहीं है तो क्या है ? वे सोच तो मुझे भी स जाना चाहते थे, लेकिन मैं नहीं गया । मैं अपमानपूर्वक जीवित रहना अथवा कीड़े-मकोड़ों को भाति मरना पसन्द नहीं करता । मरता कौन नहीं है, मैं भी मरूंगा लेकिन मरते दम तक मेरे हाथ में तसवार होगी । मिर्जा मुगस, मिर्जा अयूबखर और मिर्जा खिष्य सुसतान की मोत मैं नहीं मरूंगा ।

बस्तियां क्या कहा ? तीनों चाहजादे—

मिर्जा कोयाज हाँ, तीनों चाहजादे अब इस संसार में नहीं हैं । उनकी सारीं घाय चौकड़े पर पड़ी हैं । ये चाहजादों का क्या हास होनेवाला है, इसे गुदा ही जानता है, लेकिन कुछ

भी हो, कोयाश ऐसी भीत नहीं मरेगा ।

यस्तस्तां लेकिन यह सब कैसे हुआ ?

मिर्जा कोयाश पिछले २४ घंटों में समय का चक्र इतनी घीघ्रता से घूमा, इतनी बेदर्दी से घूमा कि जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी । जो कुछ घने अपनी छाँसों से देखा और जो कुछ कानों से सुना उसे जमान पर साने से भी हृदय विदीर्ण होता है अकतस्तां !

यस्तस्तां फिर भी मैं सुनना चाहता हू ।

मिर्जा कोयाश तो सुनो । मुझे ज्ञात है कि कस संभ्या को प्राप जहाँपनाह से मिसे थे । उसके पदधातु भसिका जीनत महस, इताहीयस्त, हकीम एहसानुत्साफा और सभी छाह बादों में परामस हुआ । निदषय यह हुआ कि रात के समय नाव के द्वारा अमना के मार्ग से राज परिवार हुमायूँ के मकबरे में बस जाएंगे । उन्हें डर था कि सूर्योदय तक इके तो तुम फिर आकर सम्राट को से धामे का यस्त करोगे । राखी से न गए तो सम्भवतः बस प्रयोग करोगे ।

यस्तस्तां निदषय ही मैं इस समय इसी इरादे से प्राया था ।

मिर्जा कोयाश लेकिन प्रारम्भ की गति मनुष्य के पुरुषार्थ से अपिक तेज है । नौकाओं में राज परिवार निकसा । सम्राट असग नौका में थे, अन्य लोग असग । परिवार के अन्य लोग सीधे हुमायूँ के मकबरे में पहुँचे और जहाँपनाह हजरत निजामुद्दीन बसे गए । वहाँ मजार के सिखान जा बठे उनके पास एक संदूक था । बेहरा उमका पीसा हो रहा था दाढ़ी घूस और गद से भरी हुई थी । साक्षात्

कहना की मूर्ति बने हुए थे ।

बस्तला विपत्तियों का प्रहार मनुष्य के धर्म को बकनाबूर कर देता है ।

बिर्जा कोयाग किन्तु जहाँपनाह की भावनाएं तो सांसारिक सीमाओं को पार कर चुकी थीं—उनका धर्म सीमा पार करके धर्म और धर्म का मोहवाज नहीं रहा था । शाहशाह का धाममन सुनकर हजरत मिजामुद्दीन के तकिये के बर्तमान अधिकायी शाह साहब आए । जहाँपनाह ने उन्हें संदूक दिया और कहा—“मुगल शासन का दीपक टिमटिमा रहा है और कुछ बड़ियों का मेहमान है । यह तुम्हारे सुपुत्र है, इसमें हजरत मोहम्मद साहब की धूम दाढ़ी के पाँच बाल हैं जो हमारे वंश में बहुमूल्य धरोहर के रूप में बसे प्राते हैं । धर धाय इन्हें सन्हालिए ।”

बस्तला शाहशाह का अपने धर्म में किठना बिरबास था । धर्म समय में भी उन्हें इस महान उपहार को सुरक्षित हाथों में धीपने की याद रही ।

बिर्जा कोयाग : इसके परचात् जहाँपनाह बोले—“धारा तीन दिन से भोजन करने का भी धबधर नहीं मिला । धर में कुछ तैयार हो तो सामो ।” शाह जी मिस्सी रोटी और चिरके की बटनी माए । उन्हींनि साकर ठंडा पानी पिमा और मकदरे की तरफ चल पड़े ।

बस्तला शाहशाह का, त्रिनके लिए हर प्रकार के भोजन सदा तैयार रहत थे, रोटी-बटनी से पेट भरना पड़े, यह कुनकर कतेजा मूँह को प्राता है ।

मिर्जा को याज्ञ किन्तु उनके उनके बंधुओं को जो अंग्रेजों के सूनी पत्रों से बचकर सांस लेते रहेंगे उन्हें यह भी नसीब होगा या नहीं इसे कौन जाने ! ईर, भागे सुनिए । जब शाहशाह मकबरे पर पहुंचे तो जैसा देहप्रोहियों और अंग्रेजों से पहले से तय था, हडसन बोड़ी-सी सना के साथ उन्हें बंदी बनाने धाया । उसने अपने आदमियों को मकबरे के द्वार के निकट खंडहरों में छुपा दिया और अपने दो दूत मसिका जीनत महस के पास भेजे यह आश्वासन देने कि यदि सम्राट अपने-आपको अंग्रेजों को सुपुद कर देंगे तो उनकी मसिका की और अबावक के प्राणों की रक्षा की जाएगी । जीनत महस ने शर्म स्वयं हडसन के मुंह से सुनना चाहती थीं पर वह स्वयं भी धाया । उसने आश्वासन को दोहराया था ही यह भी कहा कि यदि हमारी भाषा को न माना गया तो सम्राट को कुत्ते की मौत मार डाला जाएगा ।

अस्तर्था क्या यहां केवल राजपरिवार था ? सैनिकों या प्रजा में से कोई नहीं था ? किसीमें यह साहस न था कि हडसन को तसवार के घाट उतार देता ?

मिर्जा को याज्ञ शाहशाह को प्रजा कितना चाहती है यह तुम जानते हो । सम्राट मकबरे पर हैं, यह समाचार पाते ही वहां समभग इस हजार व्यक्तियों की भीड़ जमा हो गई थी । सबकी आंखों में एक उत्तर धारा था । लेकिन अर्जुनशाह ने कहा—'हमारी प्राणों से प्यारी प्रजा ! हम तुमको बहुत प्रकार की कष्टों की श्वासा में से गुजार चुके

हैं, अब नहीं चाहते कि हमारे लिए तुम अपना या धनु का रक्त बहाओ। छुदा पर विश्वास रखो, बहु सबके साथ श्याम करेगा। हम अपनी मर्जी से अंग्रेजों के पास जा रहे हैं।" प्रजा खून का घूट पीकर रह गई।

बस्तियां लेकिन यदि घाहूँगाह प्रजा की शान्त न करते तो मैं समझता हूँ हडसन की एक बोटी भी न बचती।

मिर्जा कीपात हां, पात्र भी दिस्तो में बहुत शक्ति है। लेकिन जाने दो इस बात को। घाहूँगाह, मणिका और अबाबक को पासकियों में बिठाकर अंग्रेज से गए। सभी देउदोही हतमन विश्वासपाती मौमनी राजबमली ने घाकर कहा—“मन्य घाहूँगाह तो मकबरे में ही रह गए हैं।” हडसन सौट पड़ा। उस समय मकबरे में मिर्जा मुसल, मिर्जा अबुबकर और मिर्जा शिख्य मुस्ताफ थे। उन्हें भी हडसन ने बंदी बनाया।

बस्तियां और वे चुपचाप बंदी हो गए ?

मिर्जा कीपात हां, क्योंकि जब घाहूँगाह ने ही अपने आपको अंग्रेजों को समर्पित कर दिया तो वे हतमन हो गए। उनकी बुद्धि बड़ हो गई। वे चुपचाप पासकी में बैठ गए। जब दिस्तो एक भीस रह गई तो घाहूँगाहों को पासकी से उतारा गया। उनके कमड़े उतार लिए गए। हडसन ने स्वयं तीनों घाहूँगाहों को गोसा का शिकार बनाया। उनकी साँठें लड़पने मरीं। कहते हैं, हडसन ने इन घाहूँगाहों का रक्त पुस्तू में लेकर पिया। संलौर में यही कहानी है घाहूँगाह की गिरफ्तारी और घाहूँगाहों

की सहीदी की। जिस मुगल राजवश के व्यक्तियों के मकबरे सत्तार की घासों में बकाशीभर भर रहे हैं, उन्हींके बंध में ये छाह्वादे भी थे, जिनके लिए मकबरे तो क्या बनेंगे, उनको गाढ़ने के लिए पांच गज भूमि भी उपलब्ध नहीं हुई।

बस्तसां अब तुमने क्या सोचा है छाह्वादे ?

निर्दा कोषास सोचना क्या है ? जब तक बीबित हूं धर्मियों से उनकी इस निर्ममता का बदसा मेरे का यत्न करना ही मेरे जीवन का लक्ष्य है।

बस्तसां तब घसो मेरे साथ। भारत में अभी तक विप्लव की ज्वाला प्रचंड सपटों में प्रज्वलित है। दिल्ली में मुठसबंध के साथ जो मनुष्यता को मजिबत करनेवाला व्यवहार हुआ है उसे देश के कोने-कोने में पहुंचाना होगा। एक तुम ही नहीं, भारत का बच्चा-बच्चा इस अत्याचार का प्रतिशोध लेने के लिए सर पर कफन बांधकर सड़ने को प्रस्तुत दिखाई देगा। छाह्वादों का यह रक्तदान व्यर्थ नहीं जाएगा।

निर्दा कोषास हां बस्तसां ! बसो। दिल्ली गई लेकिन भारत अभी जीवित है।

बस्तसां और भारत में मुगल राजवश के लिए प्रेम और शत्रुता भी जीवित है। बसो बसो।

[शेरों का प्रस्थान।]

[एट-बारिबर्तन]

पाँचवाँ दृश्य

[स्वाय—पूर्ववत् । जनक—प्रयास । जब परी पठता है तो बहादुर पाठ 'अक्षर' एक साधारण कालीन घर बिना मछर के सहारे बैठे हुए हुक्का पीते बकर पाले हैं । उनके पास एक तरफ बीसत महस है तो दूसरी तरफ झाड़बाग भिजा बर्षाकाल बैठे हैं । तीनों ही कर्मा धीरे निरपरा की मूर्ति बने हुए हैं ।]

बहादुरसाह जिस महस में सोय हमें तीन बार झुककर कोनिश घटा करत ये—जहाँ हमारे बुद्धुगों के दर्शन करने के लिए संसार की बड़ी से बड़ी शक्तिमों को महीनों प्रतीक्षा करनी पड़ती थी, जहाँ अंग्रेज हाथ जोड़े खड़े रहते थे, वहीं हम बंदी की भाँति रखे गए हैं । नहीं, नहीं, बेगम हम इस स्थिति को स्वीकार नहीं करेंगे । हम यहाँ एक क्षण भी नहीं रहेंगे । हम यहाँ से चले जाएँगे । हमारा स्थान भारत की दीन-दुःखी प्रजा के बीच है । हम अंतिम क्षण तक अंग्रेजों से युद्ध करेंगे ।

[घटकर लड़े होते हैं और चाने लबटते हैं । बीसत महस धीरे बकर बस्त भी घटकर लड़े होते हैं ।]

बीसत महस : (बहादुरसाह का हाथ बाँधकर) जहाँपनाह, कहाँ जाइएगा । बाहर अंग्रेजों का पहरा है ।

बहादुरसाह पहरा है । होने दो । हम उनसे युद्ध करेंगे । काय काय कोई बस्तुला को समाचार पहुँचा सके । बह भाए और हमको से चले । हमें नहीं चाहिए अंग्रेजों की दी हुई दुसाह की रक्षाबी । हम भारत के किसानों के साथ मक्के की रोटियाँ खाएँगे । हम अपने देश के लिए कर्कड़ों पर

सोएंगे। नहीं चाहिए हमें यह छाही पोशाक। हमें पिता नहीं, चाहे हमें पहनने के लिए वस्त्र भी उपलब्ध न हो—सने को मोहन भी न मिले।

जवाबदात जहांपनाह, यदि हम किसी प्रकार सासकिसे के बाहर जा पाएँ तो नियम ही यह हमारे लिए सीमाग्य की बात हो। मैं तो सुवा से कहवा हू कि क्यों उसने मुझे ऐसी मां दी जो मुझे देश की धूम से घसग रखकर बिल्सी के तल्ल पर बठाने के लिए ही जीवन भर पढ़यंत्र करती रही। मां, तुम्हारी ही धाकोसायों ने मुयसबस के धाकाघ को चुमनेबासे गीरव को घूस में मिसा लिया है।

कीमत महल घोह, सब मुझे ही धपरापी मानते हैं—तुम भी मुझे कोसते हो जबावदात। बेटे, तुम मां होते तो समझते कि मैंने जो कुछ किया वह सबया स्वाभाविक है।

जवावदात ने भी माटाएँ होती हैं, जो अपने पुत्रों को धस्त्रों से सबाफर देश धीर धर्म के लिए प्राण देने भेज देती हैं। मां, तुम वही भारतीय नारी क्यों नहीं बनी? तुमने मेरे हृदय में धंप्रकों के प्रति धुजा धीर श्रेय के भाव धरे धे धीर धारधय है कि तुम्हींने उनके पढ़यंत्र में धंडकर अपने देश के साथ बिबासपाठ किया।

जहापुरमाह हम पचाबिठ हो गए, धंप्रकों की लोनों से नहीं, अपने ही लोनों के बिरबाग —पर— स।
 अपने ही स्वयंनों, प्रियजम। ।
 अपने स्वल्प लाभ के लिए
 को, देश की स्वाधीनता प

भारत की प्रजा तो भाब भी घंघेड़ों से जूझ रही है। ससनऊ, कानपुर, बरेली, पटना, मधुबनी भाँति स्मरणों पर अभी तक भारत की स्वाधीनता का संग्राम सड़ा था रहा है। दिल्ली का हृदय भी अभी तक रोप की ब्यासा से घबक रहा है। जब हमें बंदी बनाया गया, उस समय सहस्रों व्यक्ति जिनमें प्रजा भी थी और हमारे ससस्त्र सैनिक भी थे, उपस्थित थे। हमारे एक सँकेत पर सहस्रों तलवारें बिजली की भाँति कौंध उठती, पता नहीं हमें क्या हो गया कि हमने उन्हें छाँट रखने की आज्ञा दी। मज्जा होता, हम वहीं घसीट हो जाते। हमारी सहादत भारतीयों के प्राणों में मक्खनसंसारिणी करती। अब भी हम चाहते हैं कि कोई हवा का तूफानी झोंका हमें उठाकर हमें चाँदनी चौक पर पड़ा कर दे, आमा मस्जिद की ऊँची बुर्ज पर पहुँचा दे। हमारी आवाज सुनकर भाब भी घंघेड़ों से लोहा सेने के लिए सहस्रों योद्धा सर पर कफ़ल बाँधकर निकस देंगे। दिल्ली का बच्चा-बच्चा कट मरेगा हमारे लिए।

श्रीमंत महस सेकिन जहाँपनाह, इससे हमें क्या प्राप्त होगा ? दिल्ली की बप्पा बप्पा भूमि रक्त से नहा जाती, अमृता की मीठी धार सास हाँ उठती, सामकिये की दीवारें धोर भी पहले सास रंग से रंग जातीं दिल्ली की प्रत्येक गली साँगों से पट जाती—फिर भी घंघेड़ों की बिजय को हम रोक नहीं पाते। मुझे तो अब भी धाना है कि घंघेड़ हमपर दया करें।

बहादुरशाह हमारे बुर्ज अपने बाहुबल और नाख की प्रजा

[हृदयन दो-तीन घंटेज ठीनकों सहित प्रवेश करता है । एक ठीनक के हाथों में एक बड़ा भात है जो कपड़े से ढका हुआ है ।]

हृदयन जहाँपनाह को हृदयन कोनिष्ठ धदा करता है ।

बहादुरशाह कहो, धन धीर क्या चाहते हो हमसे ?

हृदयन जहाँपनाह, मैं तो शिष्टाचार निभाने धायो हूँ । इस राजमहल में जब कोई धापसे मिसने धाता था तो नजर पेस करता था, घंटेज भी नजरें पेस करते थे । कुछ दिनों से घंटेजो ने नजर पेस करना बंद कर दिया था, इसीलिए धापने बिद्रोह किया । मैं फिर उस नजर के रिवाज को प्रारम्भ करता हूँ । धाज में घंटेज कौम की नई मेट धापके सम्मुख उपस्थित करने धायो हूँ ।

[हृदयन ठीनक से भात लेकर बहादुरशाह 'खजूर' के बरनों के भात रखकर उसके ऊपर का कपड़ा उठाता है । मिर्जा मुयन, मिर्जा धबूबकर धीर मिर्जा शिष्य सुमतान के कटे हुए धर दिखाई देते हैं । देखते ही पीनठ पीन उठती है ।]

जीनत महल हाय धस्ता ।

जबावकत मेरे धाई, मिर्जा मुयन, मिर्जा धबूबकर धीर मिर्जा शिष्य सुमतान ! मुझे धामा करना । जीवन भर मैं तुम्हारे रास्ते का नांटा बना रहा । मुझे मेरी करनी का धंड मिस गया है धीर तुमने पुरस्कार पाया है । तुम देख के लिए बुरबास हो गए हो । धमर हो गए हो ।

हृदयन जहाँपनाह को यह नजर पसंद नहीं धाई ?

बहादुरशाह पसंद क्यों नहीं धाई ? तुम्हा का जमतकार इसे कहते हैं । तमूर की धीसाद इसी प्रकार मुर्तारु होकर

बाप के सामने घायल करती थी । आज हमारा सीना धानद से फूसा नहीं समाता । यह रोम का नहीं हसने का समय है । हड़सन, हम तुम्हें इनाम देना चाहते हैं लेकिन हमारे पास अब कुछ है नहीं । क्या बँ इस नजर के बदल में । लेकिन जो भी धरयाचार सप्रजों ने भारत पर किए हैं वे उसके सर पर ऋण के रूप में हैं । भारत बेईमान नहीं है, वह एक दिन यह ऋण चुकाकर रहेगा । यह रक्तदान व्यर्थ नहीं जाएगा ।

[हड़सन वसन्तिक हंसी हंसा है ।]

[पटासप]

[हृदयक दो-तीन घंटेज सीलिकों सहित प्रवेश करता है । एक सीलिक के हाथों में एक बड़ा बास है जो कपड़े से ढका हुआ है ।]

हृदयक : जहाँपनाह को हृदयक जोनिश भवा करता है ।

बहादुरसाह : कही, धय धीर क्या चाहते हो हमसे ?

हृदयक : जहाँपनाह, मैं सो चिष्टाचार निभाने आया हूँ । इस राजमहल में जब कोई आपसे मिलने आता था तो नजर पेश करता था अंग्रेज भी नजरें पेश करते थे । कुछ दिनों से अंग्रेजों ने नजर पेश करना बंद कर दिया था, इसीलिए आपने बिद्रोह किया । मैं फिर उस नजर के रिवाज को प्रारम्भ करता हूँ । आज मैं अंग्रेज कौम की गई मेट आपके सम्मुख उपस्थित करने आया हूँ ।

[हृदयक सीलिक से बास लेकर बहादुरसाह 'बडर' के खरों के पाठ रखकर उसके ऊपर का कपड़ा उठाता है । मिर्जा मुहम्मद मिर्जा अबूबकर धीर मिर्जा सिध सुसतान के कटे हुए सर रिखाई बैठे हैं । वेचते ही जीवन पीछे चली है ।]

जीवन महल : हाम भल्सा ।

जहाँपनाह : मेरे भाई, मिर्जा मुहम्मद मिर्जा अबूबकर धीर मिर्जा सिध सुसतान ! मुझे क्षमा करना । जीवन-मर मैं तुम्हारे रास्ते का काँटा बना रहा । मुझे मेरी करमी का दंड मिल गया है और तुमने पुरस्कार पाया है । तुम देश के लिए कुरबान हो गए हो । अमर हो गए हो ।

हृदयक : जहाँपनाह को यह नजर पसंद नहीं आई ?

बहादुरसाह : पसंद क्यों नहीं आई ? खुदा का अमरकार इसे कहते हैं । तमूर की पीसाद इसी प्रकार सुर्जक होकर

बाप के सामने घायल करती थी । आज हमारा सीना
 मानव से फूला नहीं समाता । यह रोने का नहीं हंसने का
 समय है । हडसन, हम तुम्हें इमाम देना चाहते हैं लेकिन
 हमारे पास अब कुछ है नहीं । क्या दें इस नजर के बदल
 में । लेकिन जो भी घस्याभार भ्रष्टों ने भारत पर किए
 हैं वे उसके सर पर श्रेण्य के रूप में हैं । भारत बेईमान नहीं
 है, वह एक दिन यह श्रेण्य धुवाकर रखेगा । यह रक्तदान
 व्यर्थ नहीं जाएगा ।

[हडसन वंचाचिक हंसी हसता है ।]

[पटासन]